CCI NG 3.7 Product: NBTDelhiBS PubDate: 29-12-2025 Zone: Noida Edition: 1 Page: NBTNDFP User: cci Time: 12-28-2025 22:58 Color:

नोएडा/गाजियाबाद > सोमवार, 29 दिसंबर 2025 > पौष 7 शक संवत 1947 पौष शुक्ल नवमी, विक्रम संवत 2082 WATCH GOD WATCHDOG वर्ष 79, संख्या 309 > पेज 16* > मूल्य ₹4.00 या ₹9.00* द टाइम्स ऑफ इंडिया सहित www.nbt.in
*मासिक खरीद पर ही लागू

स्मृति मंधाना ने बनाए सबसे तेज़ 10 हज़ार रन
▸p10

NBT नवभारत टाइम्स

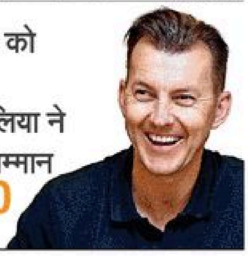

ब्रेट ली को क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया ने दिया सम्मान
▸p10

एनबीटी में विज्ञापन देने के लिए 18001205474 पर कॉल करें। नवभारत टाइम्स का अंक प्राप्त करने के लिए 18001200004 पर कॉल करें या subscribe.timesofindia.com पर जाएं।

CP में सेलिब्रेशन? प्री-बुकिंग पर ही एंट्री

File

कनॉट प्लेस के ये रास्ते रहेंगे बंद शहीद भगत सिंह मार्ग, चेम्सफोर्ड रोड, मिंटो रोड, बाबा खड़क सिंह मार्ग, पंचकुइयां रोड, केजी मार्ग, जनपथ, संसद मार्ग और स्टेट एंट्री रोड को गाड़ियों के लिए पूरी तरह से बंद कर दिया जाएगा।

नए साल के जश्न की तैयारी: CP में गाड़ी ले जाने पर रोक

Rajesh.Saroha@timesofindia.com

■ **नई दिल्ली:** कनॉट प्लेस (CP) में नए साल के जश्न की तैयारी कर रहे हैं और कार से आने का प्लान है तो होटल या क्लब में अडवांस बुकिंग करानी होगी। ऐन वक्त पर गाड़ी लेकर CP पहुंचने वालों को 31 दिसंबर की शाम के बाद एंट्री नहीं मिलेगी। कनॉट प्लेस के इनर, मिडल और आउटर सर्कल में गाड़ी नहीं ले जा सकेंगे। हालांकि, पैदल आने वालों के लिए अडवांस बुकिंग वाला नियम लागू नहीं होगा। गाड़ी से आने वालों के पार्किंग पास, अडवांस बुकिंग की डिटेल देखने के बाद ही दिल्ली पुलिस एंट्री देगी। साल के पहले दिन कनॉट प्लेस के हनुमान मंदिर में भी काफी भीड़ होती है।

गुड़गांव में कई जगह फ्री पार्किंग की व्यवस्था

31 दिसंबर को गुड़गांव के क्लब, पब और बार में कई कार्यक्रम होंगे। यहां आने वालों के लिए कई जगह फ्री पार्किंग के इंतजाम किए गए हैं। ट्रैफिक पुलिस ने चेतावनी दी है कि सड़क पर गाड़ी खड़ी की तो जब्त कर लेंगे। फरीदाबाद में 1500 पुलिसकर्मियों की ड्यूटी लगाई गई है। नोएडा और ग्रेटर नोएडा में पार्टी में शराब परोसने के लिए आबकारी विभाग ने 599 अस्थायी लाइसेंस जारी किए हैं। गाजियाबाद में रविवार तक 300 ऐसे लाइसेंस जारी किए गए हैं।

नई उम्मीद

2026 में किन बदलावों से गुजरेगी दुनिया और भारत पर उनका क्या पड़ेगा असर? इकॉनमी, जल संकट से AI और सुरक्षा जैसे मुद्दों पर 26 सवाल हमने पूछे 26 एक्सपर्ट्स से... अपने पिटारे में क्या खास लेकर आ रहा है यह बरस... देखें अंदर

ये किस राह पर जा रहे हैं हम...

पिता बोले- कहता रहा इंडियन हूं, फिर भी मार डाला

■ NBT रिपोर्ट, देहरादून

त्रिपुरा के 24 साल के एमबीए स्टूडेंट एंजेल चकमा को अपने और छोटे भाई पर नस्लीय टिप्पणी का विरोध करने की कीमत जान देकर चुकानी पड़ी। बेटे की हत्या के बाद BSF में तैनात पिता तरुण चकमा टूट गए हैं। वह इंसाफ चाहते हैं। उन्होंने बताया, 'एंजेल के यह कहने पर कि वे भी इंडियन हैं, चाइनीज नहीं, फिर भी लोगों ने उसकी गर्दन और पीठ पर चाकू और कड़े से हमला किया। FIR दो-तीन दिन बाद हुई। बेटे की नौकरी लग गई थी।' एंजेल की देहरादून के अस्पताल में मौत हुई। वह 17 दिनों तक जिंदगी और मौत से जूझे। उत्तराखंड के सीएम पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि सख्ती से निपटेंगे। 5 आरोपियों को पकड़ा गया है। एक आरोपी फरार है। ▸▸ पेज 5

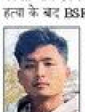

एंजेल चकमा

वाराणसी में जापानी टूरिस्ट्स से बदसलूकी, माफी भी मंगवाई गई

वाराणसी के दशाश्वमेध घाट पर हुई घटना।

■ **NBT न्यूज, वाराणसी:** वाराणसी घूमने आए जापानी पर्यटकों के साथ बदसलूकी का मामला सामने आया है। इसका विडियो सोशल मीडिया पर वायरल है। घटना दशाश्वमेध घाट पर हुई। विडियो में कुछ लोग जापानी परिवार पर गंगा नदी को गंदा करने का आरोप लगाते हुए अभद्रता करते दिख रहे हैं। पर्यटक दल ने हाथ जोड़कर माफी मांगी, लेकिन लोग उन्हें भला-बुरा कह रहे हैं। काशी के DCP ने कहा कि जापानी टूरिस्ट्स को नहाने को लेकर टोका गया था। मारपीट या हमला नहीं किया गया।

बरेली: छात्रा ने बर्थडे पार्टी में बुलाया था

पार्टी में आए मुस्लिम युवक, हंगामा

बरेली के कैफे में एक ग्रुप ने हंगामा किया।

■ **NBT रिपोर्ट:** उत्तर प्रदेश के बरेली में एक कैफे में अपने हिंदू दोस्त की बर्थडे पार्टी में शामिल होने पर दो मुस्लिम युवकों के खिलाफ शांति भंग के आरोप में मामला दर्ज किया गया। दोनों युवकों और कैफे के एक स्टाफ पर फाइन लगाया गया। TOI की खबर के मुताबिक, पुलिस ने कहा कि कुछ लोगों ने कैफे में हंगामा किया। नर्सिंग स्टूडेंट ने अपने साथियों को पार्टी के लिए बुलाया था। कोई गलत बात सामने नहीं आई।

NBT व्यू
जागरुकता और ऐक्शन की जरूरत

त्रिपुरा के एमबीए स्टूडेंट की देहरादून में हत्या किसी भी देशभक्त का सीना तार-तार कर दे, लेकिन देशभक्ति की परिभाषा ही बदली जा रही तो क्या उम्मीद करें? तरक्की दिखाने के लिए हम चांद को चूमना चाहते हैं, लेकिन वो दाग भी छोड़ सकते हैं जिससे धरती फट जाना चाहे। क्षेत्र, भाषा या रूप-रंग से परे हर भारतीय सम्मान और सुरक्षा का हकदार है। इसके लिए जागरुकता और सख्त कानूनी कार्रवाई दोनों जरूरी हैं।

NBT नवभारत टाइम्स
Wealth

क्या आपने NBT Wealth लिया?
पर्सनल फाइनेंस की खबरें आपकी भाषा हिंदी में।

हर सोमवार पढ़ें NBT Wealth
सिर्फ 6 रुपये में
अपने वेंडर से संपर्क करें या
18001205474
पर भी कॉल कर सकते हैं।

NBT Wealth आपको कैसा लगता है, इसमें क्या पसंद आता है और क्या नहीं? क्या और चाहते हैं आप? ऐसे विषयों पर आप कॉल करके अपनी बात नोट करा सकते हैं। आपका संदेश संपादक तक पहुंच जाएगा।

कॉल करें 011-4978 0064 पर आज दिन में 11 से 12 बजे तक

फटाफट खबरें

हादी के हत्यारे भारत नहीं आए: BSF

मेघालय की सुरक्षा एजेंसियों ने बांग्लादेश पुलिस के उन दावों को रविवार को खारिज किया कि 'इंकलाब मंच' के नेता शरीफ उस्मान हादी के हत्यारे भारत में दाखिल हो गए हैं। मेघालय BSF के प्रमुख ने कहा कि ये दावे निराधार और भ्रामक हैं। ▸▸ पेज 12

दिल्ली के प्रदूषण पर अफसर का इस्तीफा

दिल्ली में वायु प्रदूषण की वजह से एक फार्मा कंपनी के प्रेजिडेंट (फाइनेंस) राजकुमार बाफना ने इस्तीफा दे दिया। कंपनी ने 27 दिसंबर को स्टॉक एक्सचेंज को इस बारे में सूचना दी।

संगठन पर दिग्विजय सिंह को मिला शशि थरूर का साथ

Agency

पार्टी के 140वें स्थापना दिवस पर दिग्विजय सिंह और थरूर (दाएं) साथ दिखे।

■ कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने दिग्विजय सिंह के संगठन की मजबूती वाले बयान का समर्थन किया

■ थरूर ने कहा कि संगठन को मजबूत किया जाना चाहिए, इसमें कोई संदेह नहीं है ▸▸ पेज 9

SC में उन्नाव केस आज

प्रदर्शन में पीड़िता की तबीयत बिगड़ी

■ **NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली:** जंतर-मंतर पर रविवार को उन्नाव रेप केस के दोषी कुलदीप सेंगर की जमानत के विरोध में प्रदर्शन किया गया। इस दौरान एक महिला सेंगर के समर्थन में पोस्टर लेकर पहुंची, जहां पीड़िता के समर्थकों के साथ उसकी कहासुनी हुई। लगातार नारेबाजी से पीड़िता की तबीयत बिगड़ गई। उन्हें अस्पताल ले जाना पड़ा। उधर, सुप्रीम कोर्ट में सोमवार को हाई कोर्ट से सेंगर को जमानत देने के फैसले के खिलाफ सुनवाई होगी। पीड़िता ने कहा कि उन्हें न्याय की उम्मीद है।

हैपी मॉर्निंग

टीचर: प्यार का दूसरा नाम क्या है?
मोनू: जी, समर्पण।
टीचर: फिर विवाह का दूसरा नाम क्या है?
मोनू: जी, आत्मसमर्पण।

साल की अंतिम बैठक अकाल तख्त साहिब पर पांच सिंह साहिबानों ने लिए कई अहम फैसले

अकाल तख्त का आदेश- पार्क, होटल में नहीं होगा आनंद कारज

■ NBT रिपोर्ट, चंडीगढ़

अकाल तख्त साहिब पर रविवार को पांच सिंह साहिबानों की संयुक्त बैठक में कई अहम फैसले लिए गए। 2025 की अंतिम बैठक में लिए गए ये फैसले सीधे सिख संगत से जुड़े हैं।

अकाल तख्त साहिब के कार्यकारी जत्थेदारी कुलदीप सिंह गड़गज ने बताया कि आनंद कारज अब सिर्फ गुरुद्वारों में ही होगा। पार्क, होटल और अन्य खुले या व्यावसायिक जगहों पर आनंद कारज की पूरी तरह मनाही होगी। गुरु ग्रंथ साहिब जी के पावन स्वरूप को किसी भी विवाह स्थल पर ले जाने पर प्रतिबंध लगाया गया है। पावन स्वरूपों से जुड़े मामलों में कोई भी राजनीतिक दल हस्तक्षेप नहीं करेगा।

सिख गुरुओं पर नहीं बनेंगी AI फिल्में

बैठक में आर्टिफिशल इंटेलिजेंस (AI) विडियो और फिल्मों के निर्माण पर जत्थेदार ने कहा कि तकनीक भले ही आधुनिक हो, लेकिन यह निर्णय लिया गया है कि धार्मिक विषयों पर ऐसी फिल्में या विडियो नहीं बनाए जा सकते, क्योंकि इससे सिख मर्यादाओं और परंपराओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। ▸▸ पेज 9

मौसम

अधिकतम तापमान 22.9°
6.3° न्यूनतम तापमान

सूर्यास्त सोमवार 5:34 | सूर्योदय मंगलवार 7:13

कोहरे से फ्लाइट, रेल सेवाएं बाधित, शेड्यूल देखकर घर से निकलें।

हमें दिखाना है कि भारत की महिला हॉकी टीम भी किसी से कम नहीं है। तोक्यो ओलिंपिक में चौथे स्थान पर रहने के बाद महिला हॉकी का ग्राफ जो ऊपर गया था, उसे फिर लौटाना है। पिछला साल अच्छा नहीं रहा लेकिन अगला साल नई सुबह लेकर आएगा। - दीपिका सेहरावत, हॉकी प्लेयर, भारत

25 टेस्ट सीरीज (3+ टेस्ट मैच वाली) में क्लीन स्वीप किया है ऑस्ट्रेलिया ने विपक्षी टीम पर। ऑस्ट्रेलिया क्लीन स्वीप के जरिए सर्वाधिक टेस्ट सीरीज जीतने वाली टीम है। दूसरे स्थान पर इंग्लैंड (17 सीरीज) है

स्पोर्ट्स QUIZ

इस पेज पर छपी खबरों में हैं इन सवालों का जवाब है।

1. ब्रेट ली ने वनडे इंटरनैशनल में कितने विकेट लिए हैं?
A) 310 B) 380 C) 381 D) 275

2. लक्ष्य सेन ने साल 2025 में कुल कितने खिताब जीते?
A) 2 B) 3 C) 1 D) 7

कल के जवाब
1. C) 18 2. A) कोलकाता नाइटराइडर्स

लकी WINNER

1. रीनू डाका, दयालपुर, दिल्ली
2. वारिस अली खान, लखनऊ, यूपी
3. नितेश पाल, ठाणे, महाराष्ट्र

आप अपने जवाब हमें **9319282367** पर अपने नाम, तस्वीर और शहर/गांव के नाम के साथ वॉट्सऐप करें। एक 'लकी विनर' का नाम और तस्वीर हम कल के अंक में छापेंगे। दो अन्य विजेताओं के नाम भी प्रकाशित होंगे।

फटाफट खबरें

सिंधु का सातवां खिताब

■ **जमशेदपुर:** युवराज सिंधु ने रविवार को टाटा ओपन 2025 गोल्फ टूर्नामेंट में एक स्ट्रोक की जीत के साथ पीजीटीआई में एक ही सीजन में सबसे ज्यादा सात खिताब जीतने का नया रेकॉर्ड बनाया। सिंधु ने आखिरी दौर में छह-अंडर 65 का कार्ड खेला जिसमें आखिरी होल पर जीत दिलाने वाली बर्डी शामिल थी।

उबैदुल्लाह पर लगा बैन

■ **कराची:** निजी टूर्नामेंट में भारतीय टीम का प्रतिनिधित्व करने पर पाकिस्तान के इंटरनेशनल कबड्डी खिलाड़ी उबैदुल्लाह राजपूत पर राष्ट्रीय महासंघ ने अनिश्चितकालीन प्रतिबंध लगा दिया है। पाकिस्तान कबड्डी महासंघ ने कहा कि राजपूत ने बिना अनापत्ति प्रमाण पत्र विदेश यात्रा की और भारतीय जर्सी पहनी। मैच की उनकी तस्वीरें वायरल होने के बाद यह कार्रवाई की गई।

टी20 टीम में शामिल किए जाने के बाद अब वनडे टीम में भी बना सकते हैं जगह

किशन ने बजा दी पंत के लिए खतरे की घंटी

■ **NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली:** भारतीय विकेटकीपर बल्लेबाज ईशान किशन पिछले एक दो महीने से जबरदस्त फॉर्म में हैं और ईशान के इस फॉर्म ने ऋषभ पंत के लिए खतरे की घंटी बजा दी है। कभी टीम इंडिया के फ्रंटलाइन विकेटकीपर और आगामी कप्तान का तमगा हासिल कर चुके पंत अलग-अलग फॉर्मेट में धीरे-धीरे भारतीय टीम में अपनी जगह खोते दिख रहे हैं।

ईशान ने पिछले दिनों सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी में उन्होंने शानदार प्रदर्शन करते हुए दो शतक जमाए और विजय हजारे ट्रॉफी की शुरुआत भी धमाकेदार अंदाज में की। टूर्नामेंट के अपने पहले ही मैच में किशन ने सिर्फ 39 गेंदों पर 125 रन ठोक दिए, जिसमें 7 चौके और 14 छक्के शामिल थे। टी20 वर्ल्ड कप के लिए टीम इंडिया में अचानक शामिल किए गए ईशान अब वनडे फॉर्मेट में भी अपना दावा ठोक रहे हैं। टीम इंडिया वनडे फॉर्मेट में अभी भी स्पेशलिस्ट विकेटकीपर की तलाश में है। भारत ने पिछली वनडे सीरीज साउथ अफ्रीका के खिलाफ खेली थी, जिसके लिए टीम में पंत भी शामिल थे लेकिन विकेटकीपिंग की भूमिका केएल राहुल ने निभाई थी। अब न्यूजीलैंड के खिलाफ 11 जनवरी से शुरू होने जा रही वनडे सीरीज में पंत की जगह ईशान को टीम में शामिल किया जा सकता है और उम्मीद के मुताबिक उन्हें अंतिम एकादश में जगह भी मिल सकती है।

घरेलू में अच्छे प्रदर्शन का ईनाम: ईशान को घरेलू क्रिकेट में विस्फोटक प्रदर्शन का इनाम मिल रहा है। झारखंड के कप्तान के रूप में किशन ने अपनी टीम को पहली बार सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी का खिताब दिलाया और 517 रन बनाकर टूर्नामेंट के सर्वाधिक रन बनाने वाले बल्लेबाज बने। इसके अलावा वह सबसे ज्यादा छक्के लगाने वाले बल्लेबाज भी रहे।

ईशान कद में भले छोटे हो, लेकिन उनके शॉट्स बहुत बड़े होते हैं। कविन पीटरसन ने भी मुझसे उस तरह रिवर्स स्विप हिट नहीं मारा, जैसे इस युवा खिलाड़ी ने मारा। बीच में वह टीम में नहीं थे, लेकिन उन्हें दोबारा टीम में देखकर मुझे बेहद खुशी हो रही है। उनके पास जबरदस्त ताकत है। वह बहुत ही मजबूत खिलाड़ी है। वह युवा है, लेकिन काफी परिपक्वता के साथ खेलते है। - हरभजन सिंह, पूर्व क्रिकेटर, भारत

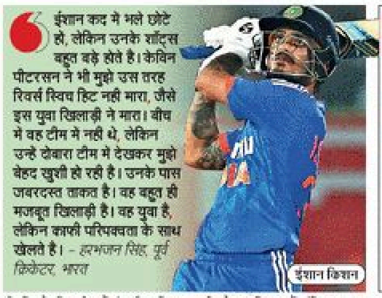

ईशान किशन

पिछले 15 लिस्ट-ए मैच में दोनों का प्रदर्शन

ऋषभ पंत		ईशान किशन
15	इनिंग्स	14
572	रन	607
125*	हाइस्ट	134
40.85	ऐवरेज	43.35
1	शतक	2
4	अर्धशतक	1

*टेबल में दी गई ऋषभ पंत की 15 पारियां पिछले पांच साल के दौरान खेली गई हैं, जबकि इन पांच सालों में ईशान किशन ने लिस्ट-ए में 43 मैच खेल डाले हैं।

ऋषभ पंत

पंत को नहीं मिल रहे मैच: वनडे क्रिकेट में पंत सात साल पहले डेब्यू करने के बावजूद अपनी जगह पक्की नहीं कर पाए हैं, लेकिन इसकी बड़ी वजह उनका दुर्भाग्यपूर्ण कार हादसा भी रहा है। पंत ने पिछले तीन साल में सिर्फ एक ही वनडे मैच खेला है। टेस्ट टीम का नियमित हिस्सा होने के कारण उन्हें घरेलू क्रिकेट खेलने का भी शायद ही मौका मिलता है। इस साल की शुरुआत में इंग्लैंड के खिलाफ वनडे सीरीज में पंत पूरे समय बेंच पर रहे। वनडे चैंपियंस ट्रॉफी में भी उन्हें एक भी मैच नहीं मिला। हालिया साउथ अफ्रीका के खिलाफ सीरीज में भी पंत को फिर से नजरअंदाज किया गया।

'सदमे की स्थिति' में थे MCG पिच के क्यूरेटर

■ **एजेंसियां, मेलबर्न:** मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड (MCG) के चीफ पिच क्यूरेटर मैथ्यू पेज ने स्वीकार किया कि ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड के बीच बॉक्सिंग-डे टेस्ट के पहले दिन 20 विकेट गिरने के बाद वह 'सदमे की स्थिति में' थे। उन्होंने माना कि नीरस ड्रॉ से बचने के लिए तेज गेंदबाजों के अनुकूल पिच तैयार की गई, लेकिन पिच पर 10 मिलीमीटर घास छोड़ना भारी पड़ा। पिच पर 142 ओवरों के खेल में कुल 36 विकेट गिरे। पेज को साल 2017 एशेज सीरीज में MCG पर हुए ड्रॉ के बाद नियुक्त किया गया था।

पेज ने कहा, 'पहले दिन के बाद मैं सदमे में था। हम निश्चित रूप से निराश हैं कि यह मैच केवल दो दिन तक चला। यह रोमांचक टेस्ट मैच था लेकिन यह लंबी अवधि तक नहीं चला। हम इससे सबक लेंगे और अगले साल बेहतर विकेट तैयार करने की पूरी कोशिश करेंगे।' उन्होंने आगे कहा, 'मैं पहले कभी इस तरह के टेस्ट मैच का हिस्सा नहीं रहा और उम्मीद है कि भविष्य में मैं फिर से कभी इस तरह के टेस्ट मैच का हिस्सा नहीं रहूंगा।' पेज ने कहा, 'हम जानते हैं कि यह मैच हमारी योजना के अनुसार नहीं चला। हमें पूरे चार-पांच दिन तक बल्ले और गेंद के बीच संतुलन बने रहने की उम्मीद थी।'

द एशेज पिच विवाद

चीफ पिच क्यूरेटर मैथ्यू पेज

36 विकेट गिरे थे MCG की पिच पर चौथे टेस्ट में दो दिन के खेल के दौरान

हंपी टॉप पर, गुकेश और अर्जुन दूसरे पर

■ **एजेंसियां, दोहा:** मौजूदा चैंपियन कोनेरू हंपी ने फिडे वर्ल्ड रैपिड ऐंड ब्लिट्ज चेस चैंपियनशिप के महिला वर्ग में संयुक्त बढ़त बनाए रखी है। दूसरे दिन के खेल के बाद हंपी चीन की झू जिनर के साथ 6.5 अंक लेकर शीर्ष पर है। ओपन वर्ग में भारत के डी गुकेश और अर्जुन एरिगैसी के नौ राउंड के बाद 6.5 अंक है। दोनों संयुक्त रूप से दूसरे स्थान पर है। व्लादिस्लाव आर्टेमिएव और हैंस नीमन (7.5 अंक) से शीर्ष पर है। आर्टेमिएव ने मैग्नस कार्लसन और एरिगैसी को हराकर दिन की सबसे बड़ी जीत दर्ज की। इस हार के बाद कार्लसन ने प्लेइंग एरिया से बाहर जाते वक्त उनके साथ चल रहे कैमरे को उन्होंने हाथ से एक तरफ धकेल दिया। कार्लसन की इस हरकत की कड़ी आलोचना हो रही है।

वर्ल्ड रैपिड ऐंड ब्लिट्ज चैंपियनशिप

ग्रैंडमास्टर हंपी

मंधाना ने खेली रेकॉर्ड पारी, भारत की लगातार चौथी जीत

भारत v श्रीलंका, चौथा टी20I

■ **NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली:** स्मृति मंधाना (80 रन, 48 बॉल, 11 चौके, 3 सिक्स) और शेफाली वर्मा (79 रन, 46 बॉल, 12 चौके, 1 सिक्स) की तेज पारी की बदौलत भारत ने श्रीलंका को चौथे टी20I में 30 रन से हरा दिया। भारत पांच टी20I की सीरीज में 4-0 से आगे है।

श्रीलंका के खिलाफ अपनी पारी के दौरान स्मृति विमिंस इंटरनैशनल क्रिकेट में 10,000 रन बनाने वाली दुनिया की सिर्फ चौथी बैटर बनीं। वह मिताली राज के बाद ऐसा करने वाली सिर्फ दूसरी भारतीय हैं। स्मृति ने इस मुकाम पर पहुंचने के लिए सबसे कम 281 पारियां खेली। स्मृति भारत के लिए सर्वाधिक सिक्स जमाने वाली महिला प्लेयर भी बनीं। उन्होंने इस मामले में भारतीय कप्तान हरमनप्रीत कौर को पीछे छोड़ा। भारत ने 221/2 का टोटल बनाया। यह टी20I में भारतीय महिला टीम का सर्वाधिक स्कोर है। श्रीलंका की टीम 20 ओवर्स में छह विकेट पर 191 रन ही बना सकी।

स्मृति मंधाना

विमिंस इंटरनैशनल क्रिकेट में सर्वाधिक रन

प्लेयर	देश	रन
मिताली राज	भारत	10868
सूजी बेट्स	न्यूजीलैंड	10652
शार्लेट एडवर्ड्स	इंग्लैंड	10273
स्मृति मंधाना	भारत	10053

पाइपर्स की जीत की धुन, रॉयल्स को 2-0 से हराया

■ **NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली:** कप्तान नवनीत कौर और टेरेसा विआना के गोल की बदौलत एसजी पाइपर्स ने विमिंस हॉकी इंडिया लीग में जीत के साथ आगाज किया। उन्होंने टूर्नामेंट के पहले मैच में घरेलू दर्शकों के बीच खेल रही रांची रॉयल्स को 2-0 से मात दी। रविवार को हुए पहले मैच में दोनों टीम के बीच पहला क्वार्टर बराबरी का रहा, जहां दोनों टीमें गोल स्कोर करने में सफल नहीं रहीं। दूसरे क्वार्टर में पाइपर्स ने अपना अटैक तेज किया और 25वें मिनट में उन्होंने दो लगातार पेनल्टी कॉर्नर हासिल किए। हालांकि, पाइपर्स मौके को भुना नहीं पाए। दो मिनट बाद ही पाइपर्स के लिए पहला गोल उनकी कप्तान नवनीत की स्टिक से आया। आखिरी क्वार्टर में टेरेसा ने दूसरा गोल कर पाइपर्स की जीत पक्की की।

हॉकी इंडिया लीग

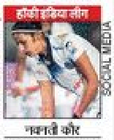

नवनीत कौर

ली हॉल ऑफ फेम में शामिल

■ **एजेंसियां, नई दिल्ली:** ऑस्ट्रेलिया के पूर्व तेज गेंदबाज ब्रेट ली को उनके शानदार इंटरनैशनल करियर के लिए ऑस्ट्रेलियन क्रिकेट हॉल ऑफ फेम में शामिल किया गया है। ली इस उपलब्धि को हासिल करने वाले कुल 62वें प्लेयर हैं। अपनी रफ्तार और सटीकता के लिए पहचाने जाने वाले ली क्रिकेट इतिहास के सबसे तेज गेंदबाजों में शामिल रहे हैं। ली 2003 और 2007 वर्ल्ड कप जीतने वाली ऑस्ट्रेलियन टीम का अहम हिस्सा थे और 2008 में उन्हें एलन बॉर्डर मेडल से सम्मानित किया गया था। ली ने 76 टेस्ट में 310, 221 वनडे में 380 और 25 टी20I में 28 विकेट लिए थे। ली के इंटरनैशनल क्रिकेट में कुल 718 विकेट हैं, जो ऑस्ट्रेलिया के लिए चौथे सर्वाधिक हैं।

क्रिकेट कॉर्नर

हॉल ऑफ फेम ट्रॉफी के साथ ब्रेट ली

टीम में बाबर-शाहीन नहीं

लाहौर: पाकिस्तान ने श्रीलंका के खिलाफ आगामी टी20I सीरीज के लिए ऑलराउंडर शादाब खान को टीम में शामिल किया है, जबकि बाबर आजम और शाहीन अफरीदी को जगह नहीं मिली है। ये दोनों फिलहाल बिग बैश लीग (BBL) में खेल रहे हैं। टीम की कमान सलमान अली आगा संभालेंगे।

करिश्मा और ऋत्विक ने जीता सिंगल्स का खिताब

■ **एजेंसियां, विजयवाड़ा:** सूर्या करिश्मा तमिरी ने तन्वी पात्री को सीनियर नैशनल बैडमिंटन चैंपियनशिप के फाइनल में हराकर विमिंस सिंगल्स का खिताब जीता। वहीं, ऋत्विक संजीवी ने मेंस सिंगल्स का खिताब अपने नाम किया। 19 वर्षीय करिश्मा ने रविवार को खेले गए फाइनल में तन्वी को 17-21, 21-12, 21-14 से मात दी। मेंस सिंगल्स में ऋत्विक ने भरत राघव को फाइनल में 21-16, 22-20 से हराया। शिखा गौतम और अश्विनी भट की जोड़ी ने विमिंस डबल्स में खिताब जीता। हरिहरन अम्साकरुणन और रूबान कुमार ने मेंस डबल्स का टाइटल जीता।

सीनियर नैशनल बैडमिंटन चैंपियनशिप

ऋत्विक संजीवी | सूर्या करिश्मा

स्पोर्ट्स @2026

सबसे बड़ा चैलेंज

जूनियर्स को उठानी होगी बड़ी ज़िम्मेदारी

तकरीबन दो वर्षों में भारतीय बैडमिंटन में वह सुर्खियां लगभग गायब रहीं, जिन्हें कभी पढ़ते ही रोमांच भर जाता था-पीवी सिंधु ने जीता खिताब, साइना नेहवाल बनीं चैंपियन, एचएस प्रणॉय फाइनल में, रेड्डी-शेट्टी जोड़ी दुनिया के टॉप पर। इन हेडलाइंस की कमी की सबसे बड़ी वजह सीनियर खिलाड़ियों की गिरती फॉर्म और लगातार बनी रही फिटनेस की समस्याएं रहीं। अब अगला साल भारतीय बैडमिंटन के लिए किसी बड़ी परीक्षा से कम नहीं होने वाला है। भारत बैडमिंटन वर्ल्ड फेडरेशन की वर्ल्ड चैंपियनशिप 2026 की मेजबानी कर रहा है, और देश की उम्मीदें होंगी कि घरेलू मैदान पर भारतीय शटलर पोडियम तक पहुंचें। सीनियर्स की बढ़ती उम्र और डगमगाती लय के बीच 2026 भारतीय जूनियर्स के लिए निर्णायक साल साबित हो सकता है। आने वाले समय में भारतीय बैडमिंटन का भविष्य इन उभरते हुए खिलाड़ियों के कंधों पर ही टिका दिखेगा।

तन्वी शर्मा

सबसे बड़ा सवाल?

साल 2025 में भारत के कई जूनियर खिलाड़ियों ने इंटरनेशनल लेवल पर शानदार प्रदर्शन करके भविष्य की उम्मीदें जगाई है। एशिया अंडर-17 और अंडर-15 चैंपियनशिप में दैना मणिमुथु और दीक्षा सुधाकर ने गोल्ड जीता। बैडमिंटन एशिया जूनियर चैंपियनशिप्स में तन्वी शर्मा ने सिल्वर जीता। आयुष शेट्टी, उन्नति हुड्डा, अनमोल खरब, त्रीसा जॉली-गायत्री गोपीचंद ने भी अलग-अलग स्तर पर अपनी छाप छोड़ी। क्या ये खिलाड़ी सीनियर लेवल पर बड़े चैलेंज के लिए तैयार होंगे?

लक्ष्य सेन

11 सिंगल्स खिताब साल 2025 में जीते एन से-यंग ने और एक सीजन में सर्वाधिक सिंगल्स खिताब जीतने के जापान के केंटो मोमोटा के रेकॉर्ड की बराबरी की। सीजन में उनका जीत का प्रतिशत 94.8% रहा

लक्ष्य का टारगेट

तमाम उतार-चढ़ाव के बाद भी लक्ष्य सेन साल 2025 का अंत नंबर-13 वर्ल्ड रैंकिंग्स के साथ करेंगे, जो भारतीयों में बेस्ट है। उन्होंने 2025 की शुरुआत चोटों से की, लेकिन अंत एक खिताब (ऑस्ट्रेलियन ओपन) के साथ किया। वह दो अन्य बड़े टूर्नामेंट्स के फाइनल्स में भी पहुंचे। इस प्रदर्शन से 2026 में उनसे बेहतर की उम्मीद जगी है। वह पीठ की चोट से उबर चुके हैं और अगले साल उनका टारगेट अधिक खिताब जीतकर टॉप-10 में पहुंचने का होगा।

भारत की चुनौतियां

1-फिटनेस का मसला: पीवी सिंधु, एचएस प्रणॉय, किदांबी श्रीकांत जैसे सीनियर खिलाड़ियों के लिए अगले साल पूरे सीजन फिट रहना बड़ी चुनौती होगी।

2-प्रदर्शन में निरंतरता: युवा खिलाड़ी लक्ष्य सेन को अपने प्रदर्शन में निरंतरता लानी होगी और फिट भी रहना होगा ताकि वह बड़े टूर्नामेंट्स के अंतिम चरणों में दबाव झेल सकें।

3-युवाओं का टारगेट: आयुष शेट्टी, उन्नति हुड्डा, तन्वी शर्मा और अनमोल खरब जैसे जूनियर्स को सीनियर सर्किट में खुद को स्थापित करना होगा।

साल 2026 में बैडमिंटन: कुछ महत्वपूर्ण प्रतियोगिताएं

टूर्नामेंट	तारीख	वेन्यू
मलेशिया ओपन	6-11 जनवरी	कुआलालंपुर
इंडिया ओपन	13-18 जनवरी	नई दिल्ली
ऑल इंग्लैंड ओपन	10-15 मार्च	बर्मिंघम
थॉमस ऐंड उबेर कप	24 अप्रैल-3 मई	डेनमार्क
BWF वर्ल्ड चैंपियनशिप	17-23 अगस्त	नई दिल्ली
वर्ल्ड टूर फाइनल्स	8-13 दिसंबर	चीन

12 राशियां और आपका दिन

ARIES 21 Mar - 19 Apr
आपने जिस प्रकार की छवि लोगों के बीच बनाई है, उसके बल पर आज का दिन आपके लिए अच्छा व्यतीत होगा। दोपहर तक आर्थिक संतोष भी प्राप्त होंगे परंतु कार्यक्षेत्र की धीमी गति से मानसिक तनाव पैदा हो सकता है। हर बात का दोहरा अर्थ निकलता है, सावधान रहें।

TAURUS 20 Apr - 19 May
आर्थिक मामलों में तकदीर आपका साथ देगी। स्थापित कारोबार का विस्तार होगा। वित्तीय साझेदारी करने की स्थिति बनेगी, लेकिन निजी संबंधों के मामले में वित्तीय रिश्ते अनुकूल साबित नहीं होंगे। एक नया दोस्त आपके प्रति आकर्षित होगा लेकिन वह अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त नहीं कर सकेगा।

GEMINI 21 May - 21 Jun
आज के दिन किसी काम में आप फंस सकते हैं। अपने प्रति भी सतर्क रहें और यह याद रखें कि कुछ कर दिखाने के लिए मेहनत और लगन की जरूरत ही होती है। आज न चाहते हुए भी आपको कुछ ऐसा काम करना पड़ सकता है जो औरों के लिए असुविधाजनक साबित होगा।

CANCER 22 Jun - 22 July
आज सुबह से ही आपके आसपास का वातावरण आपके अनुकूल नहीं चल रहा है। ऐसे समय में भी आपको अपना धैर्य नहीं छोड़ना है। हो सकता है आज ही आपको स्वास्थ्य संबंधी प्रॉब्लम भी हो। बेहतर होगा कि आप दिन के पहले हिस्से में किसी अच्छे डॉक्टर से मिल लें।

LEO 23 July - 22 Aug
इन दिनों आपका सबकुछ ठीक-ठाक ही चल रहा है। कारोबार की स्थिति भी सुधरती जा रही है। किसी बड़े अधिकारी के आशीर्वाद से नौकरी में भी आपकी स्थिति मजबूत है। आज के दिन आपको नई जिम्मेदारियां मिल सकती हैं, जिन्हें आप समय पर पूरा करेंगे। आपकी तरक्की से विरोधियों का मनोबल गिरेगा।

VIRGO 23 Aug - 22 Sep
किसी-किसी समय जब आप अच्छे मूड में रहते हैं तो अपने चहेतों का भला करने में पीछे नहीं रहते हैं। इसका लाभ वे चापलूस भी उठा लेते हैं जो वास्तव में पीठ पीछे जाकर आपकी बुराई करते हैं। ऐसे ही लोगों से आज आपको विशेष सावधानी बरतनी है। सायंकाल से लेकर रात्रि तक मित्रों से चर्चा होगी।

LIBRA 23 Sep - 22 Oct
आगे का समय आपका कठिन रहने वाला है। किसी परीक्षा के लिए आपको तैयार रहना है। अगर आप अपने व्यवसाय या कारोबार से संबंधित कोई लिखा-पढ़ी करना चाहते हैं, तो दिन के समय कभी कर डालें। बच्चों के कामों के लिए भी दोपहर तक का समय अनुकूल है। आज दिन के समय अधिक भागदौड़ रहने के कारण थकान होगी। हो सके तो सायंकाल का समय परिवार के साथ हंसी-खुशी करने में बिताएं।

SCORPIO 23 Oct - 21 Nov
कभी-कभी कोई काम आपकी सोच के विपरीत हो जाते हैं। जिस व्यक्ति को आप सज्जन समझते हैं, वही धोखा दे जाता है। कुछ ऐसी ही घटना आज भी होगी। बाकी आपका दिन मिश्रित फलदायक है। एकाध काम अटक हो जाने से टेंशन कम होगी। साथ ही रात्रि के समय अच्छे समाचार मिलने से हर्ष होगा।

SAGITTARIUS 22 Nov - 21 Dec
कई दिनों से आप किसी छोटे-मोटे काम के बिगड़ जाने से आशंकित हैं। हो सकता है आज आपके इस काम में सुधार हो जाए। फिर भी किसी व्यर्थ के डर या आशंका से आपका मन अशांत रह सकता है। दोपहर के बाद कुछ भागदौड़ करने से छिटपुट लाभ हो सकते हैं।

CAPRICORN 22 Dec - 19 Jan
आज का दिन कुछ जानकारीपूर्ण और आपकी बौद्धिक क्षमता को बढ़ाने वाला होगा। अच्छे व्यक्तियों से मुलाकात होगी और किसी बड़े लाभ की आशा में दिन सार्थक नजर आएगा। रिश्तेदारों की तरफ से भी अच्छी खबरें मिलेंगी और कोई योजना बनाते वक्त आपकी सलाह ली जाएगी।

AQUARIUS 20 Jan - 18 Feb
यह समय अपने कार्यक्षेत्र में सभी पुराने अटके पड़े कामों को पूरा करने का है। इस बीच कुछ अपने ही लोग आपकी विघ्न भी बढ़ा सकते हैं। यदि आप किसी ऐसी समस्या में उलझे हैं, तो उसका फैसला भी जल्दी करें। आज के दिन घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। समय का आनंद उठाएं।

PISCES 19 Feb - 20 Mar
आज आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। दिन के पहले हिस्से में बहुत सारे काम एक साथ हाथ में आने से परेशानी बढ़ सकती है। जहां तक हो सके, इनमें से महत्वपूर्ण कार्य सुबह ही पूरे कर लें, क्योंकि दोपहर बाद समय ठीक नहीं है। आपके बने कामों में रुकावटें पैदा होंगी और उसका मानसिक आघात शाम तक बना रहेगा। मित्रों का सहयोग लेना जरूरी होगा। रात्रि के समय स्थिति में और भी सुधार होगा।

क्या कहते हैं आपके नंबर

(29 दिसंबर - 4 जनवरी 2026)

आचार्य नंदिता पांडे

मूलांक 1
(जन्म तिथि 1, 10, 19, 28)
आर्थिक दृष्टिकोण से समय अनुकूल होता जाएगा एवं धन लाभ रहेगा। इस सप्ताह आप जितना तुरंत निर्णय लेकर अपने निवेशों पर अमल करेंगे उतना अधिक शुभ फल प्राप्त होगा। कार्यक्षेत्र में साझेदारी में किए गए कार्यों द्वारा कष्ट उत्पन्न हो सकते हैं। प्रेम संबंध में अहं के टकराव से बचें, तो बेहतर परिणाम सामने आएंगे। सप्ताह के अंत में आप जोश में रहेंगे एवं जीवन के कठिन समय को आराम से पार कर पाएंगे

मूलांक 2
(जन्म तिथि 2, 11, 20, 29)
इस सप्ताह आपके कार्यक्षेत्र में आपकी उन्नति होगी एवं समाज में मान-सम्मान बढ़ता जाएगा एवं प्रोजेक्ट समय पर पूर्ण होते जाएंगे। प्रेम संबंध में आपसी प्रेम में वृद्धि तो होगी लेकिन आपकी अपेक्षाओं से कम रहेगी। आर्थिक मामलों में व्यय की स्थितियां बनती जाएंगी एवं अपने निवेशों पर इस सप्ताह आपको ध्यान देने की आवश्यकता है। इस सप्ताह के अंत में धीरे-धीरे जीवन में सुकून आता जाएगा।

मूलांक 3
(जन्म तिथि 3, 12, 21, 30)
कार्यक्षेत्र में उन्नति होगी एवं आप अपने सहयोगियों के साथ अच्छा संबंध स्थापित करेंगे एवं उन्नति के मार्ग में आगे बढ़ते जाएंगे। आर्थिक मामले में समय अनुकूल होता जाएगा एवं धन वृद्धि के शुभ संयोग बनेंगे। बिजनेस ट्रिप्स आपके लिए शुभ परिणाम सामने लेकर आएंगे। प्रेम संबंध में आपसी प्रेम सुदृढ़ होगा एवं लव लाइफ में खुशियां दस्तक देंगी। इस सप्ताह के उत्तरार्ध में आप पार्टी के मूड में रहेंगे।

मूलांक 4
(जन्म तिथि 4, 13, 22, 31)
इस सप्ताह जीवन में खट्टे-मीठे अनुभव रहेंगे। प्रेम संबंध में रोमांस की एंट्री होगी एवं मन प्रफुल्लित रहेगा कार्यक्षेत्र में मेहनत द्वारा स्थितियां सुधरेंगी एवं इस सप्ताह आपके द्वारा की गई मेहनत आपको भविष्य में शुभ फल दिलाएगी। आर्थिक मामलों में भावनात्मक कारणों की वजह से व्यय अधिक हो सकते हैं। इस सप्ताह के अंत में जीवन में सुख समृद्धि के शुभ संयोग भी बनते जाएंगे।

मूलांक 5
(जन्म तिथि 5, 14, 23)
इस सप्ताह प्रेम संबंध में समय अनुकूल रहेगा एवं किसी की मदद से लव लाइफ में सुखद समय व्यतीत होगा। आर्थिक व्यय अधिक हो सकते हैं एवं साझेदारी में किए गए निवेश आपके लिए खर्चे बढ़ा सकते हैं। कार्यक्षेत्र में भी किसी बात के कारण मन अशांत रहेगा। इस सप्ताह के अंत में सुख समृद्धि के संयोग तो बनेंगे लेकिन आपकी अपेक्षाओं से कमतर रहेंगे।

मूलांक 6
(जन्म तिथि 6, 15, 24)
इस सप्ताह प्रेम संबंध को लेकर आपका मन प्रसन्न रहेगा। कार्यक्षेत्र में उन्नति होगी एवं प्रोजेक्ट समय पर पूर्ण होंगे। इस सप्ताह व्यय की स्थितियां अधिक रहेंगी एवं निवेशों में धन लाभ के लिए संघर्ष करना पड़ेगा। सप्ताह के अंत में अपनी राय खुल कर सामने रखेंगे तो जीवन में सुकून रहेगा।

मूलांक 7
(जन्म तिथि 7, 16, 25)
इस सप्ताह बातचीत द्वारा स्थितियों को सुलझाएंगे तो बेहतर परिणाम सामने आएंगे। आपके प्रोजेक्ट सफलता के मार्ग में धीमी गति से आगे बढ़ेंगे। प्रेम संबंध में जल्दबाजी में कोई भी निर्णय न लें। आर्थिक मामलों में व्यय की स्थितियां अधिक हो सकती हैं। इस सप्ताह के उत्तरार्ध में जीवन में किसी भी बदलाव को टाल दें तो बेहतर होगा।

मूलांक 8
(जन्म तिथि 8, 17, 26)
आर्थिक मामलों में समय अनुकूल रहेगा एवं धन लाभ की प्रबल स्थितियां बनती जाएंगी। किसी नए निवेश द्वारा धन वृद्धि के शुभ संयोग बनते जाएंगे। कार्यक्षेत्र में संयम के साथ निर्णय लें। प्रेम संबंध में अहं के टकराव से दूर रहें, बेहतर होगा।

मूलांक 9
(जन्म तिथि 9, 18, 27)
इस सप्ताह कार्यक्षेत्र में उन्नति के संयोग बनते जाएंगे। युवा वर्ग के लिए शुभ संकेत प्राप्त होंगे एवं आप अपनी चार्मिंग पर्सनैलिटी द्वारा कठिन समय को आसान करने में सफल रहेंगे। आर्थिक मामलों में इस माह शुभ संकेत प्राप्त होंगे एवं जीवन में सुख-समृद्धि के और अधिक योग बनते जाएंगे। प्रेम संबंध में संयम के साथ काम करेंगे तो बेहतर परिणाम सामने आएंगे।

जन्मदिन की शुभकामनाएं

इस वर्ष राहु और नेपच्यून आपके वर्ष के प्रतिनिधि ग्रह बने रहेंगे। दिसंबर अंत तक शनि व बृहस्पति की चाल इस वर्ष आपके मार्ग में कुछ अप्रिय प्रभाव देने वाली होगी क्योंकि वर्ष के आरंभ यानी जनवरी 2026 में शनि सूर्य का कुल, शुक्र, बुध योग रहने से झगड़े-विवाद से बचे रहें तो ही अच्छा रहेगा। फरवरी-मार्च में आपका स्वास्थ्य प्रभावित रहेगा, खान-पान में परहेज रखना जरूरी होगा। अप्रैल-मई महीने के अंत तक का समय बहुत ही अनुकूल और लाभकारी सिद्ध होगा। जून-जुलाई में किसी अधिकारी को ध्यान दिए बगैर आप नए व्यापार के क्षेत्र में प्रवेश कर सकते हैं, अन्यथा फिर अवसर में फिर सकते हैं। दिसंबर में आपका भौतिक पक्ष मजबूत होगा। यह वर्ष अक्टूबर से नवंबर तक विशेषकर काम काजी महिलाओं के लिए उत्साहवर्धक सिद्ध होगा। विद्यार्थी संकुचित दृष्टिकोण से अध्ययन न करें। -आचार्य कृष्ण दत्त शर्मा

कल का पंचांग (मंगलवार, 30 दिसंबर 2025)

राष्ट्रीय मिति पौष 9, शक संवत 1947, पौष, शुक्ल, दशमी, मंगलवार, विक्रम संवत 2082। सौर पौष मास प्रविष्टे 16, रजब 9, हिजरी 1447 (मुस्लिम) तद अनुसार अंग्रेजी तारीख 30 दिसंबर 2025 ई.। सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु। राहुकाल दोपहर 3 बजे से अपराह्न 4 बजकर 30 मिनट तक। दशमी तिथि प्रातः 7 बजकर 5 मिनट तक उपरांत एकादशी तिथि का आरंभ। गर करण प्रातः 7 बजकर 51 मिनट तक उपरांत वव करण का आरंभ। चंद्रमा दिन-रात मेष राशि पर संचार करेगा। आज के व्रत पर्व-पवित्र प्रातः 7 बजकर 41 मिनट तक, रुद्रमूल।

सुडोकू

		8				5		
2			8		5			7
	3	5	9		1	4	2	
6			5		3			1
5			2		4			3
	4	9	7		2	3	6	
8			1		6			9
		7				8		

TELEVISION

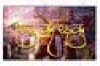

09:00 [illegible]
10:00 [illegible]
11:00 रुद्र के रक्षक
11:30 अलादीन
12:00 [illegible]
13:30 [illegible]
14:30 [illegible]
15:00 [illegible]
15:30 [illegible]
19:30 रुद्र के रक्षक
21:00 [illegible]

CCI NG 3.7 Product: NBTDelhiBS PubDate: 29-12-2025 Zone: Noida Edition: 1 Page: NBTNDP11 User: brahmansh.yadav Time: 12-28-2025 21:22 Color:

विचार

ईमानदारी से किया गया काम, अंत में मुस्कान देता है। वही मुस्कान जीवन की सबसे बड़ी सफलता होती है।
– लाल बहादुर शास्त्री

उम्मीद का फैक्ट

एशिया की रैंकिंग में रेकॉर्ड 294 भारतीय संस्थान

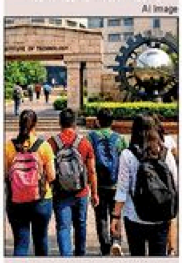

AI Image

- 'QS एशिया यूनिवर्सिटी रैंकिंग्स 2026' के ताजा आंकड़े बताते हैं कि भारतीय कॉलेज अब दुनिया के बेहतरीन संस्थानों को टक्कर दे रहे हैं।
- **2016 में भारत के सिर्फ 24 संस्थान इस लिस्ट में थे, जो अब 2026 में बढ़कर 294 हो गए हैं।**
- एशिया के सबसे बेहतरीन 100 कॉलेजों में भारत के 7 संस्थानों ने अपनी जगह बनाई है। टॉप-200 में भारत के 20 संस्थान शामिल हैं।
- **IIT दिल्ली लगातार 5वें साल भारत का नंबर-1 संस्थान बना हुआ है। एशिया में इसकी रैंक 59वीं है।**
- IISc बेंगलुरु, IIT मद्रास, IIT बॉम्बे, IIT कानपुर, IIT खड़गपुर और दिल्ली यूनिवर्सिटी ने टॉप-100 में जगह बनाई है।
- **वहीं पहली बार 'QS वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग्स' में भारत के 54 संस्थान शामिल हुए हैं। इसमें भी IIT दिल्ली 123वें स्थान के साथ देश का नेतृत्व कर रहा है।**

सोर्सः QS एशिया और वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग्स 2026

सरहद के रक्षकों का नया सत्याग्रह

शांति के संदेश के साथ 15 रिटायर्ड जांबाज़ अब करेंगे दांडी मार्च

TOI

Mohita.Tewari@timesofindia.com

■ **लखनऊ:** जिन्होंने अपनी पूरी जिंदगी सीमाओं की रक्षा में और युद्ध के मैदानों में बिताई, जिन्होंने शांति बनाए रखने के लिए कभी हथियार उठाने को अपना 'कर्तव्य' समझा, अब वही जांबाज हाथ में लाठी लेकर अहिंसा का संदेश देने निकल रहे हैं। यह कहानी है सेना के उन 15 रिटायर्ड सीनियर अफिसर्स की, जो महात्मा गांधी के ऐतिहासिक 'दांडी मार्च' को फिर से जीवित करने जा रहे हैं। 3 जनवरी से 17 जनवरी तक चलने वाली इस दो हफ्ते की यात्रा को नाम दिया गया है 'इकोज ऑफ दांडीः रिट्रेसिंग द हिस्टोरिक पथ ऑन फुट'। सेना के ये दिग्गज, जिनमें से कई लेफ्टिनेंट जनरल और मेजर जनरल के पद से रिटायर हुए हैं, दांडी पथ पर 400 किलोमीटर का सफर पैदल तय करेंगे।

60 की उम्र और वही जज्बा: इस यात्रा के पीछे एक दिलचस्प भावनात्मक जुड़ाव है। लखनऊ के रहने वाले लेफ्टिनेंट जनरल (रिटायर्ड) अनिल पुरी बताते हैं कि जब गांधीजी ने दांडी मार्च शुरू किया था, तब उनकी उम्र 60 साल थी। आज हम सभी भी 60 से ज्यादा की उम्र के हैं। हमने सोचा कि क्यों न उस ऐतिहासिक पल को फिर से महसूस किया जाए।

ऐतिहासिक रूट का जायजा लेते पूर्व सैन्य अधिकारी

उन्होंने कहा कि डिफेंस सर्विस में शांति के लिए हमें कभी-कभी हिंसा (युद्ध) का सहारा लेना पड़ा क्योंकि वह हमारा कर्तव्य था। लेकिन अब समय है कि हम दुनिया में शांति का संदेश फैलाएं।

रि. जनरल पुरी स्पष्ट करते हैं कि वे गांधीजी की महानता या उनके ऊंचे कद की बराबरी नहीं कर सकते। वे तो बस एक 'विद्यार्थी' की तरह उस गर्मी, थकान और मिट्टी को महसूस करना चाहते हैं जिससे बापू गुजरे थे। वे शहरों की भागदौड़ से दूर भारत के गांवों की धड़कन को सुनना चाहते हैं, जहां जिंदगी आज भी सादगी से चलती है।

तैयारी और रास्ता: इस सफर की योजना पिछले 18 महीनों से बन रही थी। 15 अधिकारियों का यह समूह अहमदाबाद में इकट्ठा होगा। रास्ते में वे उन सभी जगहों पर रुकेंगे जहां गांधीजी रुके थे, जैसे नडियाद का संतराम मंदिर। रहने के लिए वे 'दांडी पथ यात्री निवास' का सहारा लेंगे। रास्ते में उनके साथ NCC कैडेट्स और आम लोग भी जुड़ेंगे।

लेफ्टिनेंट कर्नल (रिटायर्ड) वी. श्रीनिवासन कहते हैं कि यह हमारा एक पुराना सपना है, जिसे सरदार वल्लभभाई पटेल, महात्मा गांधी और सरोजिनी नायडू के दिखाए ऐतिहासिक मार्ग पर बहुत बारीकी से प्लान किया गया है। उम्र को देखते हुए सेहत का भी ध्यान रखा गया है। पूरी टीम ने महीनों तक खुद को तैयार किया है। उनके पास फर्स्ट-एड और जरूरी दवाइयां होंगी और जरूरत पड़ने पर वे स्थानीय डॉक्टरों की मदद लेंगे।

15 प्रतिभागी अहमदाबाद में जुटेंगे, जहां से मार्च की शुरुआत होगी

दांडी मार्च के 100 साल पूरे होने में अभी 4 साल बाकी हैं (मूल मार्च 12 मार्च से 6 अप्रैल, 1930 तक चला था), लेकिन इन पूर्व सैनिकों ने अभी से शांति और सादगी का बिगुल फूंक दिया है। ये जांबाज 17 जनवरी को दांडी पहुंचेंगे। इनका मकसद साफ है कि स्कूल-कॉलेज के छात्रों और गांव के लोगों से मिलकर उन्हें बताना कि शांति की ताकत किसी भी हथियार से बड़ी होती है।

भाईचारे की मिसाल

मस्जिद के लिए सिख महिला ने दी ज़मीन

TOI

Shariq.Majeed@timesofindia.com

■ **फतेहगढ़ साहिबः** चंडीगढ़ से करीब 55 किलोमीटर दूर पंजाब के फतेहगढ़ साहिब जिले के जखवाली गांव में धार्मिक सौहार्द और आपसी भाईचारे की एक अनूठी मिसाल सामने आई है। यहां 75 वर्षीय सिख महिला बीबी राजिंदर कौर ने मुस्लिम समुदाय के लिए मस्जिद निर्माण के लिए अपनी निजी जमीन दान कर दी, जबकि सिख और हिंदू परिवारों ने बढ़-चढ़कर आर्थिक सहयोग किया।

जखवाली गांव मुख्य रूप से सिख बहुल है, जहां करीब 400 से 500 सिख परिवार रहते हैं। इसके साथ ही गांव में लगभग 150 हिंदू और 100 मुस्लिम परिवार भी रहते हैं। गांव में पहले से एक गुरुद्वारा और शिव मंदिर मौजूद है, लेकिन अब तक मस्जिद नहीं थी। इस कारण मुस्लिम समुदाय के लोगों को नमाज अदा करने के लिए पास के गांव जाना पड़ता था।

बीबी राजिंदर कौर ने बातचीत में बताया कि गांव के मुस्लिम निवासियों को नमाज के लिए दूर जाना पड़ता था, यह बात उन्हें लंबे समय से खटक रही थी। उन्होंने कहा कि मैंने सोचा कि अगर उन्हें पांच मरले (करीब 1,360 वर्ग फुट) जमीन दे दी जाए, तो उन्हें नमाज पढ़ने के लिए अपनी जगह मिल जाएगी। हमें बहुत खुशी है कि वे खुश रहेंगे।

बीबी राजिंदर कौर के पोते सतनाम सिंह ने बताया कि गांव में सिख, हिंदू और मुस्लिम समुदाय के लोग पीढ़ियों से भाईचारे के साथ रहते आए हैं।

देसी युद्धकला बचाने वाले योद्धा

PTI

कोलकाता में तलवारी ट्रेनिंग कैंप में स्टूडेंट्स अपनी फिजिकल ट्रेनिंग का हुनर दिखा रहे हैं। हाथों में पारंपरिक ढाल और लाठी लिए ये युवा योद्धा की तरह अडिग और ऊर्जा से लबरेज नजर आए। युवाओं को कई एक्टिविटी का प्रदर्शन किया।

छत्तों को रेस्क्यू कर सुरक्षित घर दे रही है 'Bee बास्केट' की टीम

खतरे में मधुमक्खियां, संकट में खेती, पैदावार बचाने का प्लान Bee

Photos: Amit Godse

17,000 से ज्यादा छत्तों को 11 साल में जलने से बचाया

Anjali.Jhangiani@timesofindia.com

■ **सोचिए, क्या** आपकी गर्मियों की दोपहर बिना 'मैंगो शेक' के पूरी हो सकती है? या बिना 'तड़के' वाली दाल और खुशबूदार 'बिरयानी' के खाने का मजा आएगा? शायद नहीं। लेकिन क्या आप जानते हैं कि आपके पसंदीदा खाने का भविष्य नन्ही मधुमक्खियों के परों पर टिका है। लेकिन, भारत के खेत एक खामोश त्रासदी से गुजर रहे हैं। दरअसल, मधुमक्खियां धीरे-धीरे गायब हो रही हैं, और उनके साथ ही प्याज, आम, सेब और सरसों जैसी फसलों के परागण (Pollination) पर गहरा असर पड़ रहा है। पुणे के अमित गोडसे ने 2014 में 'Bee बास्केट' की पहल शुरू की।

उनका मिशन है मधुमक्खियों को मारने के बजाय सुरक्षित रेस्क्यू करना और खेतों में वापस छोड़ना। अमित कहते हैं कि यह सिर्फ कीड़ों की समस्या नहीं, हमारी फूड सिक्योरिटी का सवाल है। अगर मधुमक्खियां लौटेंगी नहीं, तो थाली खाली होगी।

फरवरी 2019 में नासिक में एक विशाल छत्ते को बचाने के लिए अमित की टीम ने 300 किलोमीटर की यात्रा की और 12 घंटे मेहनत के बाद उसे सुरक्षित बचाया। 11 सालों में उन्होंने 17,000 से ज्यादा छत्ते बचाए, जिसकी तारीफ पीएम मोदी ने 'मन की बात' में की।

खेती के एक्सपर्ट राजेंद्र सप्तिकर बताते हैं कि इस साल प्याज के बीजों का उत्पादन 60% गिर गया। फरवरी और मार्च की गर्मी के कारण मधुमक्खियां फूलों तक नहीं पहुंची। लातूर और रत्नागिरी के किसान भी जंगल कटाई और रसायनों के कारण मधुमक्खियों के नुकसान की चिंता करते हैं।

दिलचस्प बात यह है कि शहरों में मधुमक्खियों की विविधता ज्यादा है, जबकि खेतों में मोनोकल्चर के कारण पोषण कम है। समय रहते कदम नहीं उठाए तो फसल और मधुमक्खियां दोनों खतरे में हैं।

कैसे बचेंगी मधुमक्खियां?

अमित गोडसे की टीम ने अब तक 250 से ज्यादा 'बी रेस्क्यूअर्स' तैयार किए हैं। ये निर्माण स्थलों, टॉयलेट्स और पुरानी इमारतों से छत्तों को बचाकर उन्हें ऐसी जगह ले जाते हैं जहां वे सुरक्षित रह सकें। लेकिन यह लड़ाई अमित अकेले नहीं जीत सकते। हकीकत यह है कि हमें पेस्टिसाइड्स का इस्तेमाल कम करना होगा और पर्यावरण में विविधता लानी होगी। अगर हमने आज कदम नहीं उठाया, तो जैसा कि विशेषज्ञों का कहना है, अमेरिका जैसे देशों की तरह यहां भी पूरी मधुमक्खी कॉलोनी खत्म हो जाएगी।

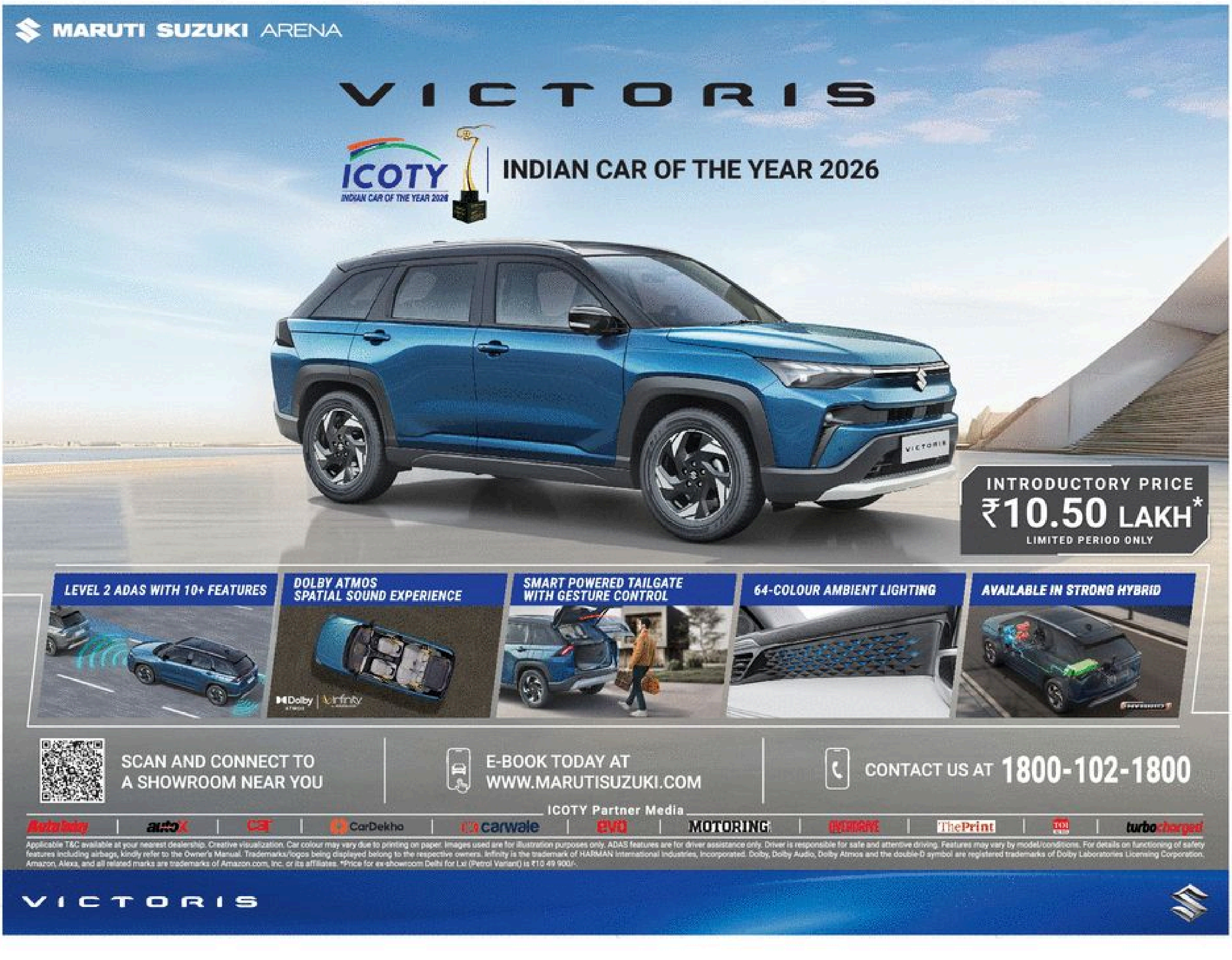

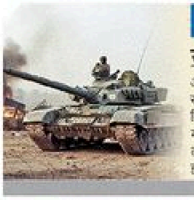

NBT AI टाइम मशीन
जब पहला स्वदेशी टैंक सेना में आया

आज ही के दिन 1965 को भारत में बना पहला मुख्य टैंक 'विजयंत' सेना में शामिल हुआ। इसे तमिलनाडु की 'हेवी वीकल्स फैक्ट्री' में तैयार किया गया था। विजयंत ने 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध में पश्चिमी मोर्चे पर दुश्मनों के छक्के छुड़ा दिए थे। इसके अलावा, इसने 1980 के दशक तक कई सैन्य ऑपरेशनों में अहम भूमिका निभाई। भारत में बने होने से इसने रक्षा क्षेत्र में देश का गौरव और आत्मनिर्भरता बढ़ाई।

NBT
Front Page-2
नवभारत टाइम्स । नई दिल्ली/एनसीआर
सोमवार, 29 दिसंबर 2025

भविष्य में होंगे ऑटोमेटेड स्मार्ट टैंक

ChatGPT के अनुसार, भविष्य में युद्ध का रूप तेजी से बदलेगा और टैंकों की अहमियत भी बढ़ेगी। वे पहले से ज्यादा हल्के, तेज और स्मार्ट और स्वचालित होंगे। टैंकों में आर्टिफिशल इंटेलिजेंस, ड्रोन से कोऑर्डिनेशन और मजबूत सुरक्षा सिस्टम होंगे। पहाड़ी, रेगिस्तानी और शहरी इलाकों में उनकी भूमिका अलग-अलग होगी। भारत के लिए स्वदेशी टैंक सीमा सुरक्षा, आधुनिक सेना और आत्मनिर्भर भारत की मजबूत रीढ़ बनेंगे।

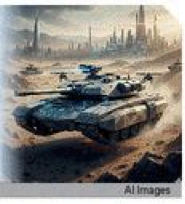

AI Images

हिमालय तक सड़क, सुरंगें और एयरस्ट्रिप बना रहा भारत: रिपोर्ट

■ NBT रिपोर्ट

चीन के साथ संभावित भविष्य के टकराव को देखते हुए भारत हिमालयी इलाकों में बड़े पैमाने पर बुनियादी ढांचा विकसित कर रहा है। अमेरिकी मीडिया वॉल स्ट्रीट जर्नल की रिपोर्ट के अनुसार, सड़कों, सुरंगों और हवाई पट्टियों के निर्माण पर सैकड़ों मिलियन डॉलर खर्च किए जा रहे हैं, ताकि विवादित सीमा क्षेत्रों में सेना की तैनाती और सप्लाई व्यवस्था को मजबूत किया जा सके।

US मीडिया का दावा- गलवान झड़प के बाद इन्फ्रास्ट्रक्चर पर जोर

भारत और चीन के बीच 2,200 मील लंबी सीमा रेखा, जिसे लाइन ऑफ एक्चुअल कंट्रोल (LAC) कहा जाता है, लंबे समय से तनाव का केंद्र रही है। वर्ष 2020 में पूर्वी लद्दाख के गलवान घाटी में हुए हिंसक संघर्ष ने दोनों देशों की सैन्य तैयारियों की वास्तविक स्थिति को उजागर कर दिया। विश्लेषकों के अनुसार, उस समय चीन अपने बेहतर सड़क और रेल नेटवर्क के कारण कुछ ही घंटों में अतिरिक्त बल पहुंचाने की स्थिति में था, जबकि भारत को दुर्गम और सीमित सड़कों के चलते एक सप्ताह तक लग सकता था।

सेना के पूर्व वरिष्ठ अधिकारियों का कहना है कि 2020 की घटना के बाद भारत की सोच में बड़ा बदलाव आया। इससे यह स्पष्ट हो गया कि सीमावर्ती क्षेत्रों में कनेक्टिविटी को पूरी तरह नए सिरे से मजबूत करने की जरूरत है। इसी रणनीति के तहत कई परियोजनाएं शुरू की गई हैं, जिनका उद्देश्य ऊंचाई वाले इलाकों को सैन्य चौकियों और स्थानीय बस्तियों से जोड़ना है।

File

सेना के पूर्व अधिकारियों ने कहा कि लद्दाख में सैनिकों तक सामान पहुंचाना विशाल और जटिल प्रक्रिया है। नई सुरंग से समय की बचत होगी।

पुल भी बना

पैंगोंग झील में भी गतिविधियां तेज

पैंगोंग त्सो झील क्षेत्र में भी गतिविधियां तेज है। यह झील भारत के लद्दाख और चीन के तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र तक फैली हुई है और लंबे समय से विवादित रही है। 2020 के बाद दोनों देशों ने यहां सड़कों और ढांचों का तेजी से विस्तार किया। चीन ने हाल ही में झील के उत्तरी और दक्षिणी किनारों को जोड़ने वाला एक पुल भी पूरा किया है, जिससे उसकी सैन्य आवाजाही और आसान हो गई है।

SPEED News

भ्रष्टाचार के खिलाफ नवीनतम कार्रवाई के तहत चीन की संसद ने उच्च पदस्थ तीन सैन्य अफसरों को बर्खास्त कर दिया है। ये कई कार्यक्रमों से मौजूद नहीं थे।

File

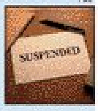

AP

पांच साल के गृहयुद्ध के बाद म्यांमार में नई सरकार चुनने की प्रक्रिया चल रही है। रविवार को आम चुनाव के पहले चरण में वोटिंग हुई। पिछला चुनाव नवंबर 2020 में हुआ था।

इस्राइल ने सोमालीलैंड को एक स्वतंत्र देश के रूप में आधिकारिक रूप से मान्यता दे दी है। 21 देशों ने इस फैसले के खिलाफ साझा बयान जारी कर विरोध जताया है।

File

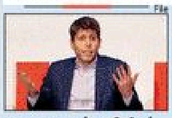

OpenAI के सीईओ सैम ऑल्टमैन ने स्वीकार किया है कि AI एजेंट्स अब समस्या बन रहे हैं, क्योंकि ये मॉडल कंप्यूटर सुरक्षा कमजोरियों को खोजने लगे हैं।

SPEED News पर आप अपनी राय हमें 9220747220 पर व्हाट्सऐप करके बताएं।

अब फोटो छपवाने का मौका भी

खबरों का ज्ञान

रोज की खबरों पर कितनी पैनी नजर है, आजमाएं

1. नेपाल में आरएसपी ने किसे PM पद का उम्मीदवार घोषित किया है?
A) रबी लामिछाने B) पुष्पकमल दहाल 'प्रचंड' C) बालेन शाह

2. राष्ट्रपति ने किस स्वदेशी सबमरीन में सवार होकर यात्रा की?
A) INS अरिहंत B) INS वाघशीर C) INS सिंधुघोष

3. महिला क्रिकेट में सबसे तेज 10 हजार रन बनाने का वर्ल्ड रेकॉर्ड किसके नाम है?
A) शार्लट एडवर्ड्स B) स्मृति मंधाना C) मिताली राज

4. भारत हिमालयी इलाकों में बुनियादी ढांचा किस देश संग संभावित टकराव को देखते हुए विकसित कर रहा?
A) चीन B) भूटान C) नेपाल

5. कौन है पश्चिम बंगाल के मुख्य चुनाव अधिकारी, जिन्हें Y+ सुरक्षा दी गई है?
A) सुनील अरोड़ा B) अनूप चंद्र पांडे C) मनोज अग्रवाल

कल के जवाब

A1 B) भारत A2 A) One Stop Centre for Women A3 B) 14 साल A4 C) Abhayrab A5 A) 17 साल

लकी विनर्स

किरण चौधरी, नई दिल्ली
2. नवीता सक्सेना, गाजियाबाद
3. डॉ. भरत गुप्ता, नई दिल्ली

ऐसे भेजें अपने जवाब

अपने नाम, शहर के साथ जवाब भेजें nbtreader@timesofindia.com पर, साथ में फोटो भी भेजें। सब्जेक्ट में KKG लिखें। हर दिन सभी सही जवाब देने वाले तीन चुनिंदा रीडर्स में से एक का फोटो और दो के नाम छापे जाएंगे। जवाब आज के पेपर की खबरों में ही छिपे हैं।

बांग्लादेश पुलिस का दावा, हादी हत्या मामले के दो संदिग्धों के भारत भागने का संदेह

बांग्लादेशी छात्र नेता के हत्यारे भारत में नहीं, खबरें झूठीं: BSF

■ पीटीआई, शिलॉन्ग

मेघालय में सुरक्षा एजेंसियों ने बांग्लादेश पुलिस के उस दावे को सिरे से खारिज कर दिया है, जिसमें कहा गया था कि ढाका में मारे गए 'इंकलाब मंच' के नेता शरीफ उस्मान हादी के हत्यारे भारत में दाखिल हो गए हैं। सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) और मेघालय पुलिस दोनों ने स्पष्ट किया है कि इस तरह की किसी भी घुसपैठ का कोई सबूत नहीं मिला है।

मेघालय में बीएसएफ के महानिरीक्षक ओपी उपाध्याय ने कहा कि हत्यारों के भारत में प्रवेश से जुड़े दावे 'निराधार और भ्रामक' हैं। उन्होंने बताया कि हलुआघाट सेक्टर से मेघालय में किसी व्यक्ति के अंतरराष्ट्रीय सीमा पार करने की न तो कोई पुष्टि हुई है और न ही बीएसएफ को इस तरह की कोई रिपोर्ट मिली है।

मेघालय में घुसपैठ के दावे को BSF ने खारिज किया

इससे पहले ढाका मेट्रोपॉलिटन पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने दावा किया था कि हादी हत्याकांड के दो मुख्य संदिग्ध स्थानीय सहयोगियों की मदद से सीमा के रास्ते मेघालय में दाखिल हुए हैं। हालांकि, मेघालय पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने भी इस दावे को खारिज करते हुए कहा कि गारो हिल्स क्षेत्र में संदिग्धों की मौजूदगी से जुड़ा कोई इनपुट या खुफिया जानकारी उपलब्ध नहीं है। स्थानीय पुलिस इकाइयों ने भी किसी तरह की संदिग्ध गतिविधि दर्ज नहीं की है।

अधिकारी ने बताया कि राज्य पुलिस केंद्र सरकार की एजेंसियों के साथ लगातार समन्वय बनाए हुए है और सीमा पर स्थिति पर करीबी नजर रखी जा रही है। बीएसएफ ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय सीमा पर तैनात जवानों को हर समय हाई अलर्ट पर रखा गया है। बीएसएफ अधिकारियों ने दोहराया कि इस सेक्टर में अंतरराष्ट्रीय सीमा की लगातार निगरानी की जा रही है और अवैध तरीके से सीमा पार करने की किसी भी कोशिश का तुरंत पता लगाकर सख्ती से निपटा जाएगा।

'अंतरिम सरकार में चलेगा केस'

बांग्लादेश के आंतरिक मामलों के सलाहकार जहांगीर आलम चौधरी ने कहा है कि उस्मान हादी की हत्या का मुकदमा इस अंतरिम सरकार के कार्यकाल में चलाया जाएगा। उम्मीद है कि 7 जनवरी 2026 को इस मामले में चार्जशीट दाखिल करना संभव होगा।

बांग्लादेश में हिंदुओं पर कथित अत्याचार और दीपू चंद्र दास की हत्या के विरोध में लंदन स्थित बांग्लादेश हाई कमीशन के बाहर हिंदू समुदाय ने शांतिपूर्ण प्रदर्शन किया।

भारत की चिंताओं पर ढाका ने दी सफाई

बांग्लादेश ने अल्पसंख्यकों के खिलाफ हिंसा को लेकर भारत की टिप्पणियों को खारिज करते हुए उन्हें गलत बताया है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता एस.एम. महबूब-उल आलम ने कहा कि ऐसी बातें बांग्लादेश की सांप्रदायिक सद्भाव की परंपरा को गलत तरीके से पेश करती हैं। उन्होंने दावा किया कि छिटपुट घटनाओं को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाया जा रहा है और उनका इस्तेमाल बांग्लादेश विरोधी भावनाएं भड़काने के लिए किया जा रहा है। भारत ने हाल ही में अल्पसंख्यकों के खिलाफ हिंसा पर चिंता जताई थी।

हिंदुओं पर अत्याचार का विरोध, लंदन में प्रदर्शन

■ NBT रिपोर्ट: बांग्लादेश में हिंदुओं पर कथित अत्याचार और दीपू चंद्र दास की हत्या के विरोध में लंदन स्थित बांग्लादेश हाई कमीशन के बाहर शनिवार को हिंदू समुदाय का शांतिपूर्ण प्रदर्शन हुआ। TOI की रिपोर्ट के अनुसार, करीब 500 प्रदर्शनकारियों ने 'हिंदू लाइव्स मैटर' के नारे लगाए और अल्पसंख्यकों की सुरक्षा की मांग की। इसी दौरान करीब 10 लोग अलगाववादी झंडे लेकर हाई कमीशन के सामने पहुंचे और भारत व हिंदुओं के खिलाफ नारेबाजी की। उन्होंने छात्र नेता उस्मान हादी की भी प्रशंसा की। हालात बिगड़ने से रोकने के लिए पुलिस ने दोनों पक्षों को अलग किया। आयोजकों ने अलगाववादियों पर जानबूझकर उकसाने का आरोप लगाया। प्रदर्शन में शामिल प्रज्वल ने कहा कि अलगाववादियों का इस मुद्दे से कोई लेना-देना नहीं है और वे जानबूझकर उकसाने की कोशिश कर रहे हैं।

बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों की सुरक्षा की मांग उठी, नारे लगा

चुनाव से पहले एनसीपी में दरार

बांग्लादेश में फरवरी में प्रस्तावित चुनाव से पहले छात्र-नेतृत्व वाली नैशनल सिटिजन पार्टी (NCP) जमात-ए-इस्लामी के साथ संभावित गठबंधन को लेकर आंतरिक फूट का सामना कर रही है। पार्टी के 30 नेताओं ने इस प्रस्ताव के खिलाफ संयुक्त ज्ञापन जारी किया है, जबकि दो वरिष्ठ सदस्यों ने इस्तीफे की घोषणा की है। पार्टी की नेता तसनीम जारा ने पद छोड़कर आगामी चुनाव निर्दलीय लड़ने का ऐलान किया है। बीएनपी की अध्यक्ष खालिदा जिया की हालत नाजुक बनी हुई है। उनके डॉक्टरों ने यह जानकारी दी।

हादी के संगठन ने किया हंगामा, ढाका ठप

■ NBT रिपोर्ट: इंकलाब मंच के नेताओं और समर्थकों ने रविवार को अपने नेता उस्मान हादी की हत्या के विरोध में ढाका के शाहबाग चौराहे को जाम कर दिया। ANI की रिपोर्ट के अनुसार, यह प्रदर्शन देशभर के कई डिविजनल शहरों में किए गए व्यापक बंद का हिस्सा था। शाहबाग पर आधिकारिक रूप से प्रदर्शन दोपहर 2 बजे शुरू हुआ, हालांकि कई प्रदर्शनकारी सुबह से ही सड़कों पर मौजूद थे और न्याय की मांग कर रहे थे। प्रदर्शनकारी शुक्रवार से शाहबाग पर धरने पर बैठे थे। पुलिस अधिकारियों ने भरोसा दिलाया कि चार्जशीट जल्द दाखिल होगी। हालांकि प्रदर्शनकारियों ने आंदोलन जारी रखने की चेतावनी दी।

10 को अरेस्ट किया गया: पुलिस के अनुसार, अब तक 10 लोगों को गिरफ्तार किया गया है। हत्या में इस्तेमाल दो पिस्तौल और एक बाइक बरामद की गई है और चेक जब्त किए गए हैं। पुलिस आयुक्त ने कहा कि चार्जशीट 7 जनवरी तक दाखिल की जाएगी। इस बीच, सिलहट सहित अन्य शहरों में भी सड़क जाम की खबरें हैं।

जरदारी ने माना, मिली थी बंकर में छिपने की सलाह

■ पीटीआई, लाहौर

आसिफ अली जरदारी

पाकिस्तान के डिप्टी पीएम ने भी नूर खान एयरबेस पर हमले की बात स्वीकारी

पाकिस्तान के राष्ट्रपति आसिफ अली जरदारी ने खुलासा किया कि मई में भारत द्वारा ऑपरेशन सिंदूर शुरू होने पर उन्हें अपने सुरक्षा अधिकारी ने 'बंकर में छिपने' की सलाह दी थी। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान शांति चाहता है लेकिन खुद की रक्षा के लिए पूरी तरह तैयार है। वहीं, पाकिस्तान के उप प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री इशाक डार ने स्वीकार किया कि 10 मई की सुबह भारत ने उनके नूर खान एयरबेस पर हमला किया, जो भारत-पाक चार दिवसीय संघर्ष के आठ महीने बाद पहली बार सामने आया। डार ने कहा कि इस दौरान पाकिस्तान ने भारत से मध्यस्थता नहीं मांगी, लेकिन अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो और सऊदी विदेश मंत्री प्रिंस फैसल बिन फरहान ने नई दिल्ली से बात करने की इच्छा जताई।

नेपाल: बालेन शाह बने PM उम्मीदवार

■ आईएएनएस, काठमांडू: नेपाल में 5 मार्च 2026 को होने वाले आम चुनाव से पहले राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी (आरएसपी) ने काठमांडू मेट्रोपॉलिटन सिटी के मेयर बालेन शाह को प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित किया है। आरएसपी अध्यक्ष रबी लामिछाने और शाह के बीच रविवार को लंबी चर्चा के बाद यह फैसला लिया गया। समझौते के तहत लामिछाने पार्टी अध्यक्ष बने रहेंगे। राजनीतिक विश्लेषकों का कहना है कि शाह और लामिछाने का गठबंधन पुरानी पार्टियों के दबदबे को चुनौती दे सकता है।

बालेन शाह

घाटी में छिपे हैं 30 से ज्यादा आतंकी

■ NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली: जम्मू-कश्मीर में आतंकवादी फिर किसी हमले को अंजाम न दे सकें, इसके लिए सुरक्षा बल मुस्तैद हैं। हर जगह पैनी निगाह रखी जा रही है और लगातार पट्रोलिंग हो रही है। खुफिया सूत्र जम्मू-कश्मीर में 30 से अधिक पाकिस्तानी आतंकियों के छिपे होने की बात बता रहे हैं। पिछले दिनों ही एक घर से दो संदिग्ध आतंकवादी खाना लेकर भी गए थे। जिनकी तलाश में जगह-जगह छापेमारी भी की गई थी। पुलिस द्वारा मॉक ड्रिल भी की गई।

सुरक्षा बल मुस्तैद, लगातार पट्रोलिंग की जा रही है

सबमरीन पर जाने वाली दूसरी प्रेजिडेंट बनीं मुर्मु

PTI

■ NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली: राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने नेवी के सबमरीन में सवार होकर समुद्री यात्रा की। वह सबमरीन पर जाने वाली दूसरी राष्ट्रपति बनीं। इससे पहले पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम सबमरीन पर गए थे। राष्ट्रपति रविवार को कर्नाटक के कारवार नेवल बेस गईं। उन्होंने नेवी की स्वदेशी कलवरी क्लास सबमरीन INS वाघशीर में सवार होकर यात्रा की। उनके साथ नेवी चीफ एडमिरल दिनेश त्रिपाठी भी थे।

बचाव पर जोर ऑस्ट्रेलिया के नकली बैच के दावों के बीच निर्माता कंपनी ने दी सफाई, अब विशेषज्ञों ने भी दी राय

एंटी रेबीज वैक्सीन के सही रखरखाव के साथ ही सीरम लगवाना भी बेहद ज़रूरी: एक्सपर्ट

Hemwati.Rajaura1
@timesofindia.com

■ नई दिल्ली: एंटी रेबीज वैक्सीन को लेकर ऑस्ट्रेलिया की चेतावनी और नकली बैच के दावों के बीच विशेषज्ञों ने साफ किया है कि रेबीज से बचाव सिर्फ वैक्सीन लगाने तक सीमित नहीं है, बल्कि उसके सही रखरखाव और गंभीर घावों में एंटी-रेबीज सीरम (इम्युनोग्लोबुलिन) का समय पर इस्तेमाल भी उतना ही जरूरी है। इस बीच हैदराबाद स्थित इंडियन इम्यूनोलॉजिकल्स लिमिटेड (IIL) ने ऑस्ट्रेलियन टेक्निकल एडवाइजरी ग्रुप ऑन इम्युनाइजेशन के उस दावे को सिरे से खारिज कर दिया है, जिसमें भारतीय कंपनी की एंटी-रेबीज वैक्सीन अभयरैब को नकली बताया गया था। साथ ही कहा है कि ऐसे बयानों से आम लोगों और स्वास्थ्य कर्मियों में अनावश्यक भ्रम फैल रहा है।

एम्स के मेडिसिन विभाग के डॉ. नीरज निश्चल के मुताबिक कुत्ते या रेबीज वाले जानवर के काटने के बाद उससे जुड़े जरूरी उपायों का जानना जरूरी है। उनके मुताबिक, अगर काटने वाली जगह पर घाव ज्यादा है तो रेबीज के तुरंत बचाव के लिए स्वास्थ्यकर्मियों को एंटी रेबीज वैक्सीन के अलावा एंटी रेबीज सीरम/इम्युनोग्लोबिन का इंजेक्शन भी देना चाहिए। वैक्सीन कुछ दिनों में एंटीबॉडी बनाना शुरू करता है लेकिन जब घाव अधिक हो तो खतरा ज्यादा होता है। ऐसे घाव में एंटी रेबीज सीरम भी लगवाया जाता है। सीरम का इंजेक्शन एंटीबॉडी स्तर के बनने से पहले ही वायरस को निष्क्रिय करना शुरू कर देता है। घाव को 15 मिनट तक साफ पानी के साबुन के साथ धोना बेहद जरूरी है। जितना जल्दी हो 24 एंटी रेबीज की पहली डोज लगवाएं। इसके बाद फिर तीसरे, 7वें, 14वें और 28वें दिन इसे लगवाना होता है। झाड़-फूंक और घरेलू उपचार के चक्कर में नहीं पड़ना चाहिए।

File

अध्ययन में अधिकांश मरीजों ने कुत्ते के काटने के बाद घाव को पर्याप्त समय तक नहीं धोया।

एंटी-रेबीज वैक्सीन का पूरा कोर्स समय पर न लेना मरीजों की गंभीर लापरवाही दर्शाता है।

सफदरजंग में किए गए एक अध्ययन से सामने आया कि रेबीज के खतरे को लेकर लोगों में अब भी गंभीर लापरवाही बरती जा रही है।

नकली रेबीज वैक्सीन का वैश्विक खतरा

वैश्विक स्तर पर देखें तो नकली या खराब रेबीज वैक्सीन के मामले नए नहीं हैं। फिलिपींस में 2017 से 2018 के बीच रेबीज वैक्सीन के दो नकली बैच अस्पतालों की सप्लाई चेन में पहुंच गए थे। जांच में सामने आया कि 1,711 मरीजों को नकली वैक्सीन लगने की आशंका थी। चीन में 2016-18 के दौरान सामने आया वैक्सीन घोटाला भी अक्सर उदाहरण के तौर पर दिया जाता है। चांगचुन चांगशेंग बायोटेक कंपनी पर कोल्ड-चेन फेल्यौर के चलते खराब रेबीज वैक्सीन और बाद में डीपीटी वैक्सीन सप्लाई करने के आरोप लगे। इस मामले में लाखों डोज बाजार में पहुंच चुकी थी। जांच के बाद चीनी अधिकारियों ने सख्त कार्रवाई की, कंपनी पर करीब 9.1 अरब युआन का जुर्माना लगाया गया।

नए साल में अंजदीप और तारागिरी वॉरशिप से बढ़ेगी नेवी की ताकत

Poonam.Pandey
@timesofindia.com

■ नई दिल्ली: नए साल की शुरुआत में भारतीय नौसेना की ताकत और बढ़ने जा रही है। जनवरी में इंडियन नेवी को दो नए वॉरशिप- तारागिरी और अंजदीप मिल सकते हैं। तारागिरी नीलगिरी क्लास का फ्रिगेट है, जबकि अंजदीप शैलो वॉटर क्राफ्ट है। तारागिरी नीलगिरी क्लास का चौथा फ्रिगेट होगा, जबकि नौसेना को इस श्रेणी के कुल सात जहाज मिलने हैं। अंजदीप भी शैलो वॉटर क्राफ्ट की श्रृंखला में चौथा पोत है, जिनकी कुल संख्या 16 होगी। प्रोजेक्ट 17A के तहत बने नीलगिरी क्लास फ्रिगेट अत्याधुनिक स्टेल्थ तकनीक, ऑटोमेशन और बेहतर सरवाइविलिटी से लैस हैं। तारागिरी में ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल, MF-STAR रडार, बराक-8 मिसाइल सिस्टम और उन्नत एंटी-सबमरीन क्षमता शामिल हैं, जिससे नौसेना की मारक क्षमता मजबूत होगी।

File

तारागिरी नीलगिरी क्लास का फ्रिगेट है, अंजदीप शैलो वॉटर क्राफ्ट है।

कुल 16 शैलो वॉटर क्राफ्ट मिलेंगे

इंडियन नेवी को कुल 16 शैलो वॉटर क्राफ्ट मिलने हैं। जिसमें तीन नेवी में शामिल हो गए हैं। जनवरी में एक और एंटी सबमरीन वॉरफेयर शैलो वॉटर क्राफ्ट (ASW-SWC) अंजदीप नेवी में शामिल हो जाएगा। ये सबमरीन निगरानी, खोज और बचाव मिशन और निम्न-तीव्रता वाले समुद्री अभियानों को अंजाम दे सकता है। समुद्र में कम इंटेंसिटी के ऑपरेशन में भी यह शिप मददगार होंगे। समुद्र में माइन बिछाने के ऑपरेशन में भी ये एंटी सबमरीन शिप इस्तेमाल किए जा सकेंगे। ये शिप करीब 77 मीटर लंबा है, इनमें अत्याधुनिक हल्के टॉरपीडो, स्वदेशी रूप से विकसित एंटी सबमरीन रॉकेट और उथले पानी में काम करने वाला सोनार लगा है, जिससे पानी के नीचे मौजूद खतरों की प्रभावी पहचान और उनसे निपटना संभव हो पाता है।

2025 के टॉप-5 डिवेलपमेंट

1. एजेंटिक AI
सॉफ्टवेयर कोडिंग, रिसर्च, टिकट बुकिंग, डेटा एनालिसिस जैसे काम बिना इंसानी दखल के करने में AI सक्षम हुआ। OpenAI ऑपरेटर, Auto GPT, एंथ्रोपिक का कंप्यूटर यूज एजेंट्स और Devin AI जैसे AI मॉडल चर्चा में रहे।

2. मल्टीमॉडल विडियो जेनरेशन
टेक्स्ट, इमेज और ऑडियो से विडियो बनाने वाले AI मॉडल्स बने। ये मूवी जैसी क्वॉलिटी वाले विडियो, कैमरा मूवमेंट, लिप-सिंक तक बनाने में सक्षम हुए। Sora, Veo, RanWay Gen-3, Pika Labs सबसे आगे रहे।

3. कैंसर की पहचान
मेडिकल AI में कैंसर और ECG एनालिसिस में बड़े बदलाव आए। AI-ECG, गूगल का ब्रेस्ट कैंसर का पता लगाने वाला मॉडल, कार्डियक AI टूल्स और AI आधारित रेडियोलॉजी सिस्टम ने हेल्थ सेक्टर को नई राह दिखाई।

4. स्मार्ट AI चिप
NVIDIA, Apple, Intel और AMD ने ऐसे चिप बनाए जो कम बिजली में AI से जुड़े काम बहुत तेजी से कर लेते हैं। इससे AI फीचर सीधे डिवाइस पर ही आसानी से काम करने लगे हैं।

5. रिसर्च में
रिसर्च में AI सह-वैज्ञानिक बन गया। AI Scientist-v2, गूगल डीपमाइंड के अल्फाफोल्ड, माइक्रोसॉफ्ट के ऑटो रिसर्च एजेंट और Meta के AI फॉर साइंटिफिक डिस्कवरी ने जटिल रिसर्च, हाइपोथीसिस और नई खोजों की रफ्तार को कई गुना बढ़ा दिया।

ऑन-डिवाइस AI मॉडल

30 पर्सेंट से ज्यादा स्मार्टफोन ऑन-डिवाइस AI मॉडल के लिए तैयार हैं।

ऑन-डिवाइस AI मॉडल यानी ऐसा AI मॉडल जो सीधे आपके फोन या कंप्यूटर पर ही काम करता है, बिना इंटरनेट या सर्वर पर डेटा भेजे। 2026 में फोन खुद आपके छोटे-मोटे काम, जैसे रिचार्ज रिमाइंडर, बिल की तारीख, मीटिंग की तैयारी, ये सब कर सकेंगे।

हेल्थ में AI

24 घंटे पहले फ्लू या वायरल बुखार होने की जानकारी नए AI सेंसर दे देंगे। ये आपके पसीने, ब्लड प्रेशर और दिल की धड़कन के सूक्ष्म बदलावों से हेल्थ अलर्ट बताएंगे।

कैंसर और हार्ट अटैक जैसी बीमारियों की शुरुआती पहचान के लिए AI मॉडल सस्ते और सुलभ हो जाएंगे। इससे लैब जांच पर खर्च कम होगा। गूगल और Apple जैसी कंपनियों के हेल्थ कोच डेटा के आधार पर बता देंगे कि नींद कम हुई है, ऐसे में भारी वर्कआउट कम करें।

एंटरटेनमेंट

नेटफ्लिक्स, ऐमजॉन या यूट्यूब पर क्या देखना है, यह सोचने में समय बर्बाद नहीं होगा। 2026 में जेनरेटिव विडियो मेनस्ट्रीम हो जाएगा। आप अपने टीवी या कंप्यूटर पर वॉइस या टेक्स्ट कमांड देकर अपनी पसंद की फिल्म या वेबसीरीज खुद बनाकर देख सकेंगे। Sora, Veo और Runway जैसे टूल्स 2026 तक इतने अडवांस हो जाएंगे कि आम आदमी अपने घर बैठे हॉलिवुड स्तर के विजुअल इफेक्ट्स वाली फिल्में बना सकेगा।

AI images

Ai युग 2.0
इशारों पर चलेगी दुनिया

2025 ने जिस रफ्तार से आर्टिफिशल इंटेलिजेंस (AI) को आगे बढ़ाया, उसने यह साफ कर दिया कि आने वाला वक्त सिर्फ टेक्नॉलजी का नहीं, बल्कि इंसानी जिंदगी के दोबारा डिजाइन होने का है। 2025 में एजेंटिक AI, मल्टीमॉडल विडियो, मेडिकल ब्रेकथ्रू और स्मार्ट AI चिप्स ने नींव रखी, तो 2026 वह साल बनने जा रहा है जब AI हर किसी का पर्सनल असिस्टेंट, डॉक्टर, ट्यूटर और मैनेजर बन जाएगा। आने वाला साल सिर्फ भविष्य नहीं, बल्कि AI के साथ जीने की शुरुआत होने वाला है। पढ़ें, 2026 में 10 बड़े बदलाव कौन से हो सकते हैं। प्रदीप तिवारी की रिपोर्ट

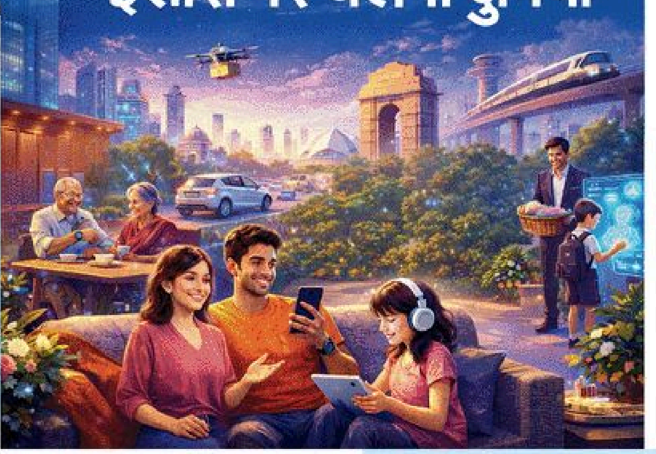

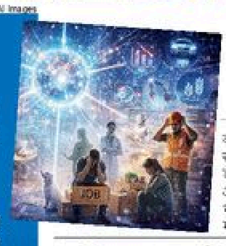

जॉब सेक्टर का हाल

असली चुनौती होगी कि कंपनियां AI का इस्तेमाल उत्पादकता बढ़ाने के लिए करती हैं या सिर्फ लागत घटाने और छंटनी के लिए। इन सबके बीच 2026 में AI से जुड़े जॉब के कई नए रोल भी बनेंगे।

कस्टमर सपोर्ट, कंटेंट राइटिंग, बेसिक कोडिंग, डेटा एंट्री और रूटीन ऑफिस टास्क जैसी भूमिकाएं और ज्यादा दबाव में आ सकती हैं।

क्रिएटिव प्लानिंग, स्ट्रैटजी, फील्ड-वर्क और ह्यूमन इंटरफेस वाली नौकरियां तुलनात्मक रूप से ज्यादा सुरक्षित रह सकती हैं।

पब्लिक ट्रांसपोर्ट

20-30 पर्सेंट ट्रैवल टाइम बचेगा ट्रैफिक लाइट्स AI से कंट्रोल होने पर।

गाड़ियों में लगे AI सिस्टम ड्राइवर की आंखों को ट्रैक करेंगे। अगर ड्राइवर को झपकी आ रही है या ध्यान भटक रहा है, तो गाड़ी खुद धीमी हो जाएगी या साइड में खड़ी हो जाएगी। एक्सीडेंट से बचने के लिए गाड़ियां एक-दूसरे से कनेक्ट होकर चलेंगी।

सिक्योरिटी, कानून

2026 में डिजिटल दुनिया जितनी आसान होगी, उतनी ही खतरनाक भी। डीपफेक विडियो और आवाज की नकल करके ठगी के मामले बढ़ सकते हैं। इन्हें रोकने में भी AI का इस्तेमाल होगा। डेटा प्रोटेक्शन, बायस और जवाबदेही जैसे मुद्दों पर सरकार का फोकस बढ़ सकता है। आपके बैंक और सोशल मीडिया अकाउंट्स पर 'AI बॉडीगार्ड' तैनात होंगे। ये सिस्टम पहचान लेंगे कि कॉल पर बात करने वाला आपका असली रिश्तेदार है या कोई AI स्कैमर। पासवर्ड का जमाना 2026 तक लगभग खत्म हो सकता है। आपकी पहचान आपके चेहरे, आवाज और व्यवहार से होगी।

कंपनियों का फोकस इन्फ्रास्ट्रक्चर पर

2026 में AI इन्फ्रास्ट्रक्चर का विकास, भारी निवेश, क्लाउड-एज इंटीग्रेशन, बिजली बचाने वाले और अडवांस्ड हार्डवेयर पर केंद्रित रहेगा। कंपनियों का डेटा सेंटर, मशीन लर्निंग प्लैटफॉर्म और कंप्यूट क्षमता में विस्तार पर फोकस होगा। AI स्पेसिफिक हार्डवेयर की डिमांड तेजी से बढ़ेगी। AI चिप्स, जैसे GPU या TPU का इस्तेमाल बढ़ेगा। ग्रीन डेटा सेंटर कंपनियों की प्राथमिकता पर होंगे।

अडवांस एजेंटिक AI

2026 तक लोगों के पास एक 'पर्सनल AI बॉट' होगा, जो स्विगी, उबर, irctc जैसे ऐप खुद से चलाएगा।

2026 का सबसे बड़ा बदलाव चैटबॉट्स का 'एजेंट' में बदलना होगा। अब तक आप ChatGPT या Gemini से सवाल पूछते थे, लेकिन 2026 में ये सिर्फ बात नहीं करेंगे, बल्कि आपके लिए काम करेंगे। तब AI एजेंट पसंद की फ्लाइट बुक करेगा, होटल में रूम रिजर्व करेगा, मीटिंग्स के हिसाब से कैब शेड्यूल करेगा और आपकी गैर-मौजूदगी में आने वाले ईमेल्स का जवाब भी ड्राफ्ट कर देगा।

पर्सनल AI ट्यूटर

AI ट्यूटर का अगला वर्जन इतना स्मार्ट होगा कि भाषा बाधा नहीं रहेगी। बिहार, बंगाल का बच्चा स्थानीय बोली में सवाल पूछेगा और AI उसी भाषा में पढ़ाएगा।

2026 तक पर्सनलाइज्ड AI ट्यूटर आम, ज्यादा सुलभ और सस्ते हो जाएंगे। ये ट्यूटर हर बच्चे की स्पीड, स्ट्रॉन्ग पॉइंट और वीक एरिया के हिसाब से कंटेंट और पढ़ाई का तरीका रखेंगे। घर बैठा बच्चा मोबाइल या टैब पर AI ट्यूटर से पढ़ेगा, जो उससे उसकी भाषा में बात करेगा, सवाल पूछेगा, और गलतियां तुरंत समझाएगा।

होम स्मार्ट AI और रोबॉट

xAI के मालिक इलॉन मस्क का ऑप्टिमस रोबॉट हो या अन्य कंपनियों के ह्यूमनॉइड्स, 2026 तक ये लैब से निकलकर अमीर घरों और फिर धीरे-धीरे आम लोगों के जीवन में आना शुरू कर देंगे

2026 तक हर घर में रोबॉट भले न हो, लेकिन आपके घर के उपकरण AI से स्मार्ट जरूर हो जाएंगे। मैटर प्रोटोकॉल और Edge AI की मदद से फ्रिज खुद देखेगा कि दूध खत्म हो गया है और ऑर्डर कर देगा। मिड रेंज किचन गैजेट्स में भी बेसिक AI फीचर आ सकता है, जैसे गैस बंद कराने का अलर्ट, ओवरकुकिंग रोकना, बच्चों के हाथ लगने पर सेफ्टी मोड आदि।

कंटेंट सोर्स: स्टैनफर्ड HAI, PwC, OECD, McKinsey और Gartner

AI के बारे में आप क्या जानना चाहते हैं? अपने सवाल हमें ई-मेल करें nbtreader@timesofindia.com पर। सब्जेक्ट में AI लिखना न भूलें। हम अपने एक्सपर्ट की मदद से आपके सवालों के जवाब देने का प्रयास करेंगे।

पूर्व कैंटीन संचालक की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत, पुलिस कर रही जांच

■ NBT न्यूज, हापुड़ : थाना हापुड़ क्षेत्र के एक गांव निवासी की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। परिजनों ने दोस्त पर हत्या का आरोप लगाया है गांव सराय निवासी भूषण दत्त (35) कुछ दिन पहले गांव के अड्डे पर शराब की कैंटीन चलाते थे। अब गांव का ही उनका दोस्त चलाता है। परिजनों का आरोप है कि दोस्त शनिवार को भूषण को घर से बुलाकर ले गया था। दोपहर मरणासन्न अवस्था में भूषण को घर पर छोड़कर चला गया। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

TIMES TRIBUTE
PAYING HOMAGE TO THE DEPARTED SOUL
To book your ad | Logon to: ads.timesofindia.com or Call: 18001205474 (Toll Free) | Scan QR Code

Jai Shree Krishna

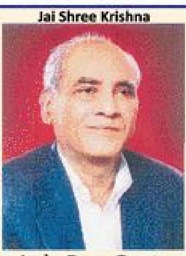

Jado Ram Gupta
1930 - 2004
Our Ideal,
From whom we imbibed eternal inspiration, affection & guidance.
Mahender - Kamini
Paridhi, Vidhi & Aditya
Friends & Staff Members
Goldtex Furnishing Industries
GOLDTEX DESIGNING & WEAVING SINCE 1954
GOLDEN FURNISHINGS

पंचम पुण्य तिथि पर भावभीनी श्रद्धांजलि

पंडित राम बाबू शर्मा (पहलवान दिल्ली केसरी)
29.12.2020
है समय नदी की धार, जिसमें सब बह जाया करते हैं।
है समय बड़ा तूफान, प्रबल पर्वत झुक जाया करते हैं।
अक्सर दुनिया के लोग, समय के चक्कर खाया करते हैं।
लेकिन कुछ ऐसे होते, जो इतिहास बनाया करते हैं।।
आपका आशीर्वाद सदैव हमारे साथ रहे।
सन्तू शर्मा
राम बाबू एंड सन्स ज्वैलर्स
एम॰ डी॰ ज्वैलर्स,
कौशिकी इम्पैक्स प्रा॰ लि॰
1182, कूंचा महाजनी, चांदनी चौक, दिल्ली-06
Ph.: 011- 45501373, 61331373, 61331533

TIMES TRIBUTES
RATE CARD

Publications	Rates per sq. cms
TOID Capital + NBT (Delhi+NCR)	1295
TOID Full Run ## + NBT (Delhi+NCR)	1360
THE TIMES OF INDIA (Delhi+NCR)	780
THE TIMES OF INDIA (Delhi) Full Run##	900
NAVBHARAT TIMES (Delhi+NCR)	595
THE ECONOMIC TIMES (Delhi+NCR)	715
SANDHYA TIMES (Delhi)	100

Rates effective 5th June 2019

▸ *Placement on specified obit pages only. ▸ This rate benefit is extended up till the size of 320 sq. cm only. ▸ ## Full run includes Delhi City + NCR (Including Gurgaon + Noida) + Chandigarh + Western U.P. + Uttarakhand ▸ TOI Capital (Delhi & NCR) includes TOI Gurgaon & TOI Noida.

To place an Obituary announcement or Remembrance message please call
Vinod: 9958992088
Pankaj : 8130604727

"HONOUR. COURAGE. BRAVERY. Three words that you taught us. Three words that help us cope with your loss".

The silent joy of remembering a loved one.
The moments you shared together.
Little moments that make life beautiful.
Share them. With Friends. Relatives. Neighbours. Colleagues. With all those whose lives the departed Soul has touched. Because while life goes on, when you share memories, they stay on forever.

Publications	Total Outlay
The Times of India Delhi/NCR	5,600
TOI+ NBT (Delhi/NCR)	8,800
TOI+ ET (Delhi/NCR)	6,600

Maximum 30 lines

REMEMBRANCE SHARING MEMORIES
For any information call
Vinod : 9958992088
Pankaj : 8130604727

राजेंद्र नगर में जुटे BJP के दिग्गज, सुनी 'मन की बात'

■ NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'मन की बात' कार्यक्रम का 129वां संस्करण रविवार को दिल्ली भर में उत्साह और सहभागिता के साथ सुना गया। राजेंद्र नगर में बीजेपी के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष नितिन नवीन, प्रदेश अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा और सांसद बांसुरी स्वराज की मौजूदगी में पार्टी पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं ने सामूहिक रूप से कार्यक्रम में हिस्सा लिया, जबकि 7622 पोलिंग बूथ क्षेत्रों में कार्यकर्ताओं ने स्थानीय नेताओं के साथ पीएम के संदेश को सुना।

राजेंद्र नगर में पार्टी के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष नितिन नवीन भी पहुंचे

इस मौके पर दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने कहा कि पीएम मोदी ने अपने मन की बात कार्यक्रम के जरिए कई सारी जानकारियां साझा की। खासकर जिस प्रकार से यंग इंडिया और खेलों को लेकर पीएम ने बात कही वह अद्भुत था। 2025 का यह अंतिम कार्यक्रम था और इसके साथ ही उन्होंने खेलों में ऐतिहासिक सफलताएं, विज्ञान और अंतरिक्ष में नई उड़ान, युवाओं का इनोवेशन, आस्था और विरासत का पुनर्जागरण सहित 2025 की उपलब्धियों को साझा किया। ऑपरेशन सिंदूर से लेकर वंदे मातरम के 150वें वर्ष के बारे में भी बताया। इस मौके पर जिला अध्यक्ष वीरेंद्र बब्बर, विधायक उमंग बजाज व हरीश खुराना, बीजेपी के राष्ट्रीय सह मीडिया संयोजक संजय मयूख, राष्ट्रीय प्रवक्ता सरदार आरपी सिंह, वरिष्ठ नेता मूलचंद चावला, पार्षद आरती चावला, मन की बात के प्रदेश संयोजक राजन तिवारी सहित सैकड़ों कार्यकर्ता मौजूद थे।

जेटली एक कुशल वक्ता और एक सच्चे मित्र थे: राजनाथ सिंह

NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली : भारत के पूर्व वित्त मंत्री व बीजेपी के वरिष्ठ नेता स्वर्गीय अरुण जेटली की 73वीं जयंती के अवसर पर रविवार को अरुण जेटली पार्क स्थित उनकी मूर्ति पर बीजेपी के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव, केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह, बीजेपी के राष्ट्रीय संगठन महामंत्री बी.एल. संतोष, दिल्ली बीजेपी अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा, दिल्ली विधानसभा अध्यक्ष विजेन्द्र गुप्ता, सांसद कमलजीत सहरावत और बांसुरी स्वराज, दिल्ली सरकार के मंत्री आशीष सूद, विधायक सतीश उपाध्याय और अनिल शर्मा, सहित अन्य नेताओं ने पुष्पांजलि अर्पित की। इस अवसर पर राजनाथ सिंह ने कहा कि स्वर्गीय अरुण जेटली एक कुशल वक्ता और नेता होने साथ साथ एक सच्चे मित्र थे, जो हमेशा अपने सहयोगियों को आगे बढ़ने को प्रोत्साहित करते थे।

लाल मंदिर में हुई भव्य सिद्धचक्र आराधना

■ रमेश जैन, नई दिल्ली

श्री दिगंबर जैन लाल मंदिर चांदनी चौक में रविवार को आचार्य श्री प्रज्ञसागरजी महाराज के सान्निध्य में भव्य सिद्धचक्र आराधना का आयोजन किया गया। जिसमें 108 इंद्र-इंद्राणियों ने भाग लिया। आचार्य श्री ने कहा कि जहां सिद्धों की वंदना होती है वहां के संकट समाप्त होकर सौभाग्य जागता है और जीवन प्रकाशमय बन जाता है। मुनिश्री प्रणम्यनंदजी व भवन के भट्टारक अरिहंत कीर्ति जी भी मौजूद रहे।

इस मौके पर भारतवर्षीय दि. जैन तीर्थ क्षेत्र कमिटी के अध्यक्ष जंबू प्रसाद जैन ने कहा कि यह संस्था इस वर्ष अपने स्थापना का 125वां वर्ष मना रही है। उन्होंने सभी को जैन दर्शन, संस्कृति, तीर्थ क्षेत्रों व मंदिरों के संरक्षण का संकल्प दिलाया। उन्होंने लाल मंदिर के प्रबंधक पुनीत जैन को 125वें समारोह का दिल्ली प्रदेश का प्रभारी मनोनीत किया और कार्यालय का उद्घाटन किया। समारोह के अध्यक्ष जवाहरलाल जैन, जैन समाज दिल्ली के अध्यक्ष चक्रेश जैन, निगम पार्षद सुमन गुप्ता और मनोज जैन ने संतों को विनयांजलि अर्पित की। आयोजन में हेमचंद जैन, ललित जैन, पीके जैन, कुलदीप जैन, जिनेंद्र जैन, मोतीलाल जैन, नीरज जैन, पंकज जैन, शरद कासलीवाल, धीरज कासलीवाल, शरद जैन, विनया जैन, राजेंद्र-रिजुल, अविरल-प्रिया, कवित, मेघ, अपराजिता, संज्ञा, सुनीत, मीनू, सिम्मी जैन आदि का विशेष सहयोग रहा। पंडित शुभम शास्त्री ने विधि-विधान के कार्य संपन्न कराए।

धर्म कर्म

मंगल कलश यात्रा: शिवमंदिर सेक्टर-7 आरकेपुरम से श्रीमद्भागवत कथा के शुभारंभ पर विशाल मंगल कलश यात्रा निकाली गई, जिसका भव्य स्वागत किया गया। कथा के शुभारंभ पर पंडित देवेंद्र शास्त्री ने कहा कि भागवत कथा में वेदों का सार है, यह भगवान के प्रेम पर आधारित है, इसके सुनने से कल्याण होता है। संयोजक विधायक अनिल शर्मा ने आरती संपन्न कराई और सभी का स्वागत किया। कथा 1 जनवरी तक चलेगी।

भागवत कथा: सीताराम संत सेवा मंदिर चंद्रलोक द्वारा सामुदायिक भवन एनसीआर में भागवत कथा सुनाते हुए आचार्य प्रद्युम्न कृष्णा ने कहा कि भागवत ज्ञान का वह भंडार है जिसके वाचन और श्रवण से वातावरण शुद्ध होता है, और मस्तिष्क पवित्र हो जाता है।

विधान: श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मंदिर नीति खंड इंदिरापुरम में आचार्य सौभाग्य सागरजी के सान्निध्य में तीन दिवसीय श्री समोशरण विधान रविवार को धूमधाम से संपन्न हुआ।

ट्रक की टक्कर से कार चालक की गई जान

■ NBT न्यूज, दादरी : जीटी रोड पर बिसरख मोड़ के पास शनिवार रात ट्रक की टक्कर लगने से कार चालक की मौत हो गई। चालक कार से अलीगढ़ से गाजियाबाद जा रहा था। आरोपी चालक ट्रक को घटना स्थल पर छोड़कर फरार हो गया। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर आवश्यक कार्रवाई शुरू कर दी।

जीटी रोड पर बिसरख मोड के पास शनिवार रात हुआ हादसा

एसएचओ बादलपुर, अमित कुमार भड़ाना ने बताया कि जिला अलीगढ़ निवासी अनस कार से जा रहे थे। वह जब शनिवार रात जीटी रोड पर बिसरख मोड के पास पहुंचे तो कार में पीछे से ट्रक ने टक्कर मार दी। इससे कार आगे चल रहे वाहन से जा टकराई। हादसे में चालक गंभीर रूप से घायल हो गया। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर घायल को सीएचसी बादलपुर पर भर्ती कराया, जहां डॉक्टर ने मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर आवश्यक कार्रवाई शुरू कर दी। पुलिस का कहना है कि परिजनों की शिकायत मिलने पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

सार्वजनिक स्थानों पर शराब पीते 150 लोग गिरफ्तार

■ NBT न्यूज, हापुड़ : नववर्ष से पूर्व जिले में पुलिस ने अभियान चलाकर सार्वजनिक स्थानों पर शराब पी रहे 150 लोगों को गिरफ्तार किया है। थाना बाबूगढ़ क्षेत्र में पुलिस ने शराब पीकर सड़क पर हुड़दंग मचाने वाले 25 लोगों को गिरफ्तार कर उनके चालान काटे हैं। धौलाना पुलिस ने सार्वजनिक स्थानों पर शराब पीने और नशे में वाहन चलाने वाले 30 व्यक्तियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने धर्मशाला और होटल संचालकों को बिना आईडी के कमरे न देने की चेतावनी दी है। पुलिस ने आठ लोगों को गिरफ्तार किया है। हापुड़ कोतवाली पुलिस ने भी सार्वजनिक स्थान पर शराब पीने के आरोप में 20 युवकों को पकड़ा है। गढ़मुक्तेश्वर क्षेत्र में पुलिस ने गंगा तट, पार्किंग स्टैंड और गंगा पुल के आसपास चेकिंग अभियान चलाया, जिसमें 20 लोगों को शराब पीते गिरफ्तार किया है। कुल 150 लोगों को गिरफ्तार किया है।

हापुड़ पुलिस ने नए साल से पहले चलाया विशेष अभियान

बाइक सवारों पर हथियार से हमला, तीन पर FIR दर्ज

■ NBT न्यूज, दादरी : एनटीपीसी के पास तीन दिन पहले कुछ लोगों ने धारदार हथियार से वार करके बाइक सवार को घायल कर दिया। आसपास के लोगों को आता देखकर आरोपी धमकी देकर फरार हो गए। पीड़ित ने तीन लोगों पर आरोप लगाते हुए पुलिस में शिकायत की। एसएचओ जारचा, कैलाश नाथ ने बताया कि जारचा के ऊंचाअमिरपुर गांव निवासी सूरज का आरोप है 26 दिसंबर को बाइक से पिता के साथ हापुड़ जा रहे थे। जब वह एनटीपीसी के पास पहुंचे तो ततारपुर गांव निवासी रवि, सच्चे और सचिन उर्फ बकरा ने बाइक को रोक लिया। इसके बाद गाली-गलौज करने लगे। विरोध करने पर आरोपियों ने धारदार हथियार से वार कर पीड़ित व उसके पिता को घायल कर दिया। शोर मचाने पर आरोपी धमकी देकर फरार हो गए। पीड़ित की शिकायत पर रिपोर्ट दर्ज कर ली गई है।

आरोपियों ने NTPC के पास तीन दिन पहले की थी वारदात

CCI NG 3.7 Product: NBTDelhiBS PubDate: 29-12-2025 Zone: Noida Edition: 1 Page: NBTNDP3 User: devid.sharma Time: 12-28-2025 22:00 Color:

IFSO के आंकड़े से खुलासा...

शेयर बाजार में इन्वेस्टमेंट के नाम पर सबसे ज्यादा ठगी

डर, लालच और भरोसे को हथियार बनाकर ठगों ने दिल्ली में अब तक किसी एक साल में सबसे बड़ी डिजिटल ठगी को अंजाम दिया है। दिल्ली पुलिस की इंटेलिजेंस फ्यूजन एंड स्ट्रैटेजिक ऑपरेशंस यूनिट 2025 में पिछले साल से 14% ज्यादा फ्रॉड रकम होल्ड करा चुकी है...

Vishal.Sharma3
@timesofindia.com

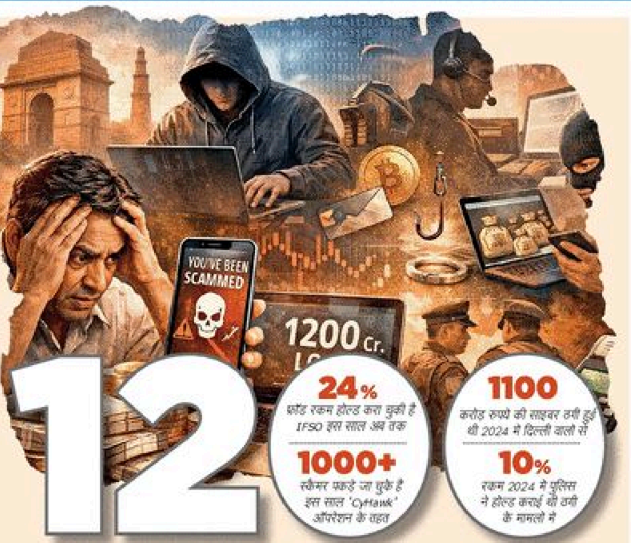

1200 करोड़ रुपये गंवा दिए दिल्ली ने साइबर फ्रॉड में इस साल

■ **नई दिल्ली:** मोबाइल की एक रिंग, स्क्रीन पर चमकता एक लिंक या मिनटों में अमीर बनने का झांसा..., बस इतनी सी शुरुआत और देखते-देखते दिल्ली के लोग साल 2025 में अब तक 1200 करोड़ रुपये से अधिक गंवा बैठे हैं। साइबर अपराधी 'डर, लालच और भरोसे को हथियार बनाकर राजधानी में अब तक किसी एक साल में सबसे बड़ी 'डिजिटल लूट' को अंजाम दे चुके हैं।

इतनी बड़ी रकम देखकर खुद दिल्ली पुलिस भी हैरान है कि तमाम तरह के साइबर सुरक्षा कैंपेन और अवेयरनेस प्रोग्राम चलाने के बावजूद साइबर अपराधियों ने साल 2025 में दिल्ली के लोगों से 12 अरब से अधिक की ठगी कैसे कर ली। ठगी से जुड़ी रकम के ये आंकड़े दिल्ली पुलिस की इंटेलिजेंस फ्यूजन एंड स्ट्रैटेजिक ऑपरेशंस (IFSO) यूनिट के डीसीपी विनीत कुमार ने दिए। साथ ही उन्होंने कहा कि IFSO इस साल फ्रॉड रकम का लगभग 24 फीसदी होल्ड करा चुकी है, जो पिछले साल की अपेक्षा होल्ड की गई रकम के आंकड़े से 14 फीसदी अधिक है। 12 अरब रुपये की ठगी का यह आंकड़ा पूरी दिल्ली का है, जिसमें IFSO के पास दर्ज केस के अलावा दिल्ली के सभी जिलों में हुई एफआईआर को भी शामिल किया गया है।

अलग-अलग तरीकों से लोगों को लगाई चपत

साल 2025 में साइबर क्राइम के ट्रेंड का आकलन करें तो IFSO के मुताबिक, टॉप पर शेयर/स्टॉक इन्वेस्टमेंट फ्रॉड रहा। दूसरे नंबर पर डिजिटल अरेस्ट रहा। इसके अलावा कई अन्य तरीकों से भी ठगी हुई। IFSO का दावा है कि लोगों में जागरूकता पहले से बढ़ी है। बावजूद इसके हर नई मॉडस ऑपरेंडी के जाल में लोग अवेयर होते हुए भी फंस जाते हैं। साल भर में डिजिटल अरेस्ट, निवेश व ट्रेडिंग ऐप घोटाले, मनी ट्रेल, फिशिंग, क्रिप्टो लॉन्ड्रिंग व कॉल सेंटर लोन स्कैम जैसी घटनाओं ने लोगों को खूब शिकार बनाया। साइबर क्राइम में म्यूल बैंक खाते और म्यूल मोबाइल सिम कार्ड का यूज किया गया।

ठगी की रकम होल्ड कराने में भी सुधार

इस साल जांच में सामने आया है कि म्यूल अकाउंट के जरिए अधिकतर साइबर फ्रॉड ऑपरेट हो रहे हैं। दिल्ली पुलिस ने अपने 'CyHawk' ऑपरेशन में बड़ी संख्या में स्कैमर्स को पकड़ा है। इस ऑपरेशन में अभी तक 1000 से ज्यादा स्कैमर पकड़े जा चुके हैं। पुलिस के मुताबिक साल, 2024 में दिल्ली में पीड़ितों ने सामूहिक रूप से लगभग 1,100 करोड़ रुपये गंवा दिए थे। जिनमें से लगभग 10 फीसदी रकम बैंक खातों में ही रोक दी गई। इस साल दिल्ली पुलिस ने बैंकों के साथ मिलकर धोखाधड़ी की गई लगभग 24 फीसदी राशि बचाने में कामयाबी हासिल की है।

फ्रॉड होने पर इन चार स्टेप का रखें खास ध्यान

साइबर स्कैम का शिकार होने पर 1930 पर कॉल या cybercrime.gov.in पोर्टल पर कंप्लेंट करें। लेकिन उससे पहले चार स्टेप का ध्यान रखें। 1. पहला, विक्टिम अपने बैंक अकाउंट नंबर को तुरंत एक कागज पर नोट कर लें। 2. दूसरा, UTR (यूनिक ट्रांजेक्शन रेफरेंस) को कॉल करने से पहले साथ रखें। याद रखें UTR 16 डिजिट का नंबर होता है। जो एनईएफटी के लिए होता है। 22 डिजिट का नंबर आरटीजीएस और 12 यूपीआई के लिए होता है। 3. तीसरा, फ्रॉड हुई रकम का पूरा ब्यौरा जैसे ट्रांजेक्शन आईडी को नोट करके रखें। 4. चौथा, फ्रॉड की डेट और टाइम नोट करके रखें।

आखिर अपडेट हो गई चिड़ियाघर की वेबसाइट

■ **राम त्रिपाठी, चिड़ियाघर:** नैशनल जूलॉजिकल पार्क दिल्ली ने अपनी वेबसाइट अपडेट करानी शुरू कर दी है। इसकी वेबसाइट https://nzpnewdelhi.gov.in/ से पुरानी जानकारियां हटाई जाने लगी हैं और उनकी जगह नई जानकारियां डाली जा रही हैं। कई साल बाद वेबसाइट को अपडेट किया जा रहा है। पार्किंग और बैटरी रिक्शा किराए से जुड़ी नई और सही जानकारी मिलने से चिड़ियाघर घूमने आने वालों को काफी राहत मिल रही है। ऑनलाइन टिकट बुक कराने के लिए लोग इसी वेबसाइट का इस्तेमाल करते हैं। ऐसे में होम पेज पर पार्किंग और टिकट से जुड़े रेट की पुरानी जानकारी दर्ज थी। इससे चिड़ियाघर घूमने आने वाले लोगों को गलत जानकारी मिल रही थी। एनबीटी ने इस संबंध में 20 दिसंबर को प्रमुखता से खबर प्रकाशित की थी।

पार्किंग और बैटरी रिक्शा से जुड़ी मिलेगी सही जानकारी

केशोपुर मंडी में भीषण आग, कई लाख का सामान जलकर खाक

■ **नवीन निश्चल, केशोपुर मंडी**

पश्चिमी दिल्ली की सबसे बड़ी केशोपुर फल और सब्जी मंडी में शनिवार रात भीषण आग लग गई। इस हादसे में 10 हजार से ज्यादा प्लास्टिक के कैरेट जलकर खाक हो गए। आग से करीब 10 लाख रुपये से अधिक के नुकसान का अनुमान लगाया जा रहा है। आग की लपटें इतनी तेज थीं कि मंडी की दीवार के दूसरी ओर बने कई मकान भी इसकी चपेट में आ गए। धुएं और आग के कारण वहां रहने वाले लोग फंस गए थे लेकिन फायर ब्रिगेड और पुलिस ने सभी को सुरक्षित बाहर निकाल लिया।

फायर कंट्रोल रूम को शनिवार रात करीब 10:30 बजे के बाद केशोपुर मंडी में आग लगने की सूचना मिली थी। सूचना मिलते ही 11 दमकल गाड़ियां मौके पर पहुंचीं। कंट्रोल रूम ने डिविजनल ऑफिसर मनोज, ADO संतोष और स्टेशन ऑफिसर अमित को भी घटनास्थल पर भेजा। करीब 50 से ज्यादा फायरकर्मियों की टीम ने लगभग एक घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया। इस दौरान जनकपुरी फायर स्टेशन के एसटीओ अमित कुमार ने धुएं से भरे कमरे में फंसे दो लोगों को सुरक्षित बाहर निकालकर उनकी जान बचाई। नाइट पेट्रोलिंग पर तैनात तिलक नगर थाना के इंस्पेक्टर भारत रतन भी पुलिस टीम के साथ तुरंत मौके पर पहुंचे। पुलिस ने दमकल गाड़ियों को अंदर तक पहुंचाने के लिए रास्ता खाली कराया और भीड़ को हटाया गया।

लपटें इतनी तेज थीं कि मंडी के दूसरी ओर बने कई मकान भी इसकी चपेट में आ गए

हादसे में 10 हजार से ज्यादा प्लास्टिक के कैरेट खाक, इनसे ही तेजी से फैली आग

'आग कुछ देरी से लगती तो चली जाती कई जानें'

केशोपुर मंडी के पीछे संतगढ़ इलाके में आग की चपेट में आए मकानों के लोगों ने बताया कि अगर आग एक घंटा देर से लगी होती तो कई लोगों की जान जा सकती थी। हादसे के वक्त लोग जाग रहे थे इसलिए किसी तरह जान बच गई। आग लगते ही लोग छोटे-छोटे बच्चों को गोद में लेकर घरों से बाहर आ गए। कई घरों में एसी, कूलर, बेड और घरेलू सामान जलकर खाक हो गया। पीड़ित महिला इंद्रजीत ने बताया कि शोर सुनते ही वे लोग बाहर भागे। बच्चा सो रहा था, जिसे तुरंत उठाकर बाहर निकली और आग बुझाने की कोशिश की। चरणजीत सिंह ने बताया कि इससे पहले दिवाली पर भी मंडी में बड़ी आग लगी थी।

NBT क्राइम स्पेशल

भारत से फ्लाइट, ईरान में किडनैपिंग, पाक खातों में फिरौती के पीछे कौन?

अगर आप भी विदेश जाने का सपना देख रहे हैं या अपने बच्चों को विदेश भेजने की सोच रहे हैं तो यह खबर आपके लिए बेहद जरूरी है। दिल्ली समेत देश के अलग अलग हिस्सों से इस साल ऐसे रोंगटे खड़े करने वाले मामले आए हैं। ये मामले उन लोगों के हैं जिन्होंने भारत से ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका या यूरोपीय देशों के लिए उड़ान भरी थी लेकिन ईरान के तेहरान की पहाड़ियों में बंधक बना लिए गए, यातनाएं दी गईं। भारत की सुरक्षा एजेंसियों के सामने सवाल है कि आखिर चंबल के डाकुओं की तरह कौन हैं ईरान के तेहरान में 'बाबा, मूसा, मामा' बंदूकधारी डाकू। पढ़िए विशाल आनंद शर्मा की रिपोर्ट...

AI Image

केस स्टडी 1
दिल्ली के युवक का तेहरान में टॉर्चर

किडनैपिंग और हवाला के जरिए फिरौती वसूलने का 'इंटरनेशनल क्राइम' सितंबर में उस समय सामने आया। जब ईरान के तेहरान में अगवा करके बंधक बनाकर रखे गए दिल्ली के करावल निवासी हिमांशु ने स्पेशल सेल में केस दर्ज कराया। अनवेरीफाइड एजेंट से जुगाड़ करके ऑस्ट्रेलिया जाने का सपना हिमांशु के लिए इतना खौफनाक रहा कि ईरान के चाहबहार से उसे किडनैप किया गया। फिर एक खंडहरनुमा घर में हाथ पांव बांधकर ऐसी जगह पटक दिया। जहां पहले से एक दर्जन लड़के बंधे पड़े थे। बंदूकधारी पाइप से पीटते और परिजनों को विडियो कॉल करके लाइव पिटाई दिखाते। बदले में हवाला के जरिए फिरौती मांगते। जिस जिस की फिरौती आती। उस बंधक को हिदायत के साथ छोड़ दिया जाता। दिल्ली से गए दो युवक इसी तरह छूटकर आए। रोंगटे खड़े करने वाली इस वारदात के बारे में खुद विक्टिम के भाई डिंपी ने कहा कि उनके साथ तो हो चुका, मगर वे चाहते हैं कि NBT के जरिए देश के उन युवाओं और परिजनों को अवेयर किया जाए जो अनवेरीफाइड एजेंटों के जाल में फंसकर फिरौती के लिए किडनैप कर लिए जाते हैं। डिम्पी के मुताबिक ईरान के माफियाओं के भारत में सक्रिय हैं एजेंट।

दरअसल, करावल निवासी 26 वर्षीय हिमांशु विदेश जाकर जॉब करना चाहते थे। एजेंट ने नोएडा से CDC कोर्स करवाया। 29 अगस्त को एक अन्य युवक के साथ हिमांशु IGI से फ्लाइट लेकर तेहरान पहुंचे। दोनों तेहरान से चाबहार पहुंचे। जहां एक गाड़ी आई और एयरपोर्ट से 30 किलोमीटर दूर अनजान जगह ले जाया गया। वहां एक शख्स मिला। पासपोर्ट छीने। 3 और बंदूकधारी एक कमरे में ले गए। दोनों को पाइपों से बुरी तरह से पीटा। घर वालों को वीडियो कॉल कर पिटाई दिखाई। 2 करोड़ की फिरौती मांगी। 20 लाख की डील हुई। फिरौती की रकम जालंधर में एक अनजान युवक को दिलवाई।

केस स्टडी 2
न्यूड कर चाबुक से पिटाई

हरियाणा के दो एजेंट्स 16 अक्टूबर को 13 गुजरातियों को लेकर ऑस्ट्रेलिया और यूरोप के लिए रवाना हुए। सभी लोग थाई एयर एशिया की फ्लाइट से बैंकॉक पहुंचे। कुछ दिन रुकने के बाद उन्हें कतर, और कतर से ईरान भेज दिया गया। इनमें से 4 को तेहरान के मरकजी ईरान नाम की होटल में बंधक बनाया गया। बाकी लोगों को अलग-अलग होटलों में रखा गया। न्यूड कर पीटते हुए वीडियो भेजा। बाबा नाम के शख्स ने इन चारों के परिवार को फोन करके 2 करोड़ रुपये की फिरौती मांगी। परिवार को एक वीडियो भेजा गया। जिसमें अगवा लोगों को न्यूड कर के जमीन पर औंधे मुंह लिटाकर चाबुक से पीटा जा रहा था। अगवा लोगों में एक महिला और तीन युवक शामिल थे, जिनमें से तीन गांधीनगर जिले के मानसा तालुका के बापूपुरा और एक बदपुरा का रहने वाला था। जब परिवारों को लगा कि अगवा किए गए उनके परिवार के लोग रिहा नहीं होंगे तो उन्होंने स्थानीय विधायक से संपर्क किया। विधायक ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह को पत्र लिखकर मदद की गुहार लगाई, जिसके बाद इन चारों को ईरान स्थित भारतीय दूतावास की मदद से सुरक्षित वापस लाया जा सका।

केस स्टडी 3
बंधक बनाए गए पंजाब के 3 युवक

पंजाब के संगरूर, नवांशहर और होशियारपुर के तीन युवकों को एक स्थानीय एजेंट ने ऑस्ट्रेलिया में जॉब और बेहतर जीवन का वादा किया। इसके लिए उसने भारी रकम वसूल की और उन्हें ऑस्ट्रेलिया भेजने की तैयारी शुरू की। लेकिन युवकों को ईरान में उतार दिया गया, जहां उन्हें अगवा कर लिया। युवकों को रस्सियों से बांधकर, हथियार तानकर धमकाते हुए फिरौती मांगी जाती। विडियो कॉल में परिजनों को दिखाया जाता कि युवकों के शरीर पर घाव और खून के निशान। पहले 1 करोड़, फिर 55 लाख रुपये पाकिस्तानी खातों में जमा करने की मांग की गई। 11 दिन तक युवकों से कोई संपर्क नहीं हो सका। परिवार वालों ने भारत स्थित ईरानी दूतावास से संपर्क किया, जिसके बाद मामला ईरानी प्रशासन तक पहुंचाया गया।

केस स्टडी 4
किडनैप कर बोले, किडनियां बेच देंगे

हरियाणा के करनाल के दो युवक स्पेन जाने के लिए दिल्ली से उड़े। मगर ईरान के तेहरान में बंधक बना लिए गए। दरअसल दोनों युवक लोकल एजेंट के चक्कर में फंसे थे। एजेंट से साढ़े 17 लाख रुपए में बात हुई थी। 22 अक्टूबर को दोनों स्पेन के लिए रवाना हुए तो पहले उन्हें कोलकाता भेजा गया, फिर बैंकॉक भेजा गया, उसके बाद उन्हें ईरान के तेहरान ले जाया गया। जहां किडनैपर्स ने उन्हें किडनैप कर लिया। बेहद अमानवीय तरीके से कपड़े उतारकर डंडों से पीटा। इसका वीडियो भी परिजनों को भेजा। जिसमें दोनों युवाओं को बुरी तरह से पीटा जा रहा था। ईरान से किडनैपर्स ने एक करोड़ की फिरौती मांगी। 20 लाख रुपए लेने के बाद ही दोनों को छोड़ा गया। धमकी दी कि पैसे नहीं दिए तो दोनों की किडनियां बेच देंगे।

एक क्लिक से विदेश में नौकरी का सफर सेफ

दिल्ली पुलिस के मुताबिक बहुत से लोग शॉर्ट कट चुनते हैं। लेकिन यह सही नहीं है। एम्प्लॉयमेंट में फेक एजेंट के चक्कर में न पड़ें। इसके लिए emigrate.gov.in की वेबसाइट पर जाएं। ये विदेश मंत्रालय की वेबसाइट है। इसके लिए स्टेप 1: emigrate पोर्टल पर जाएं। स्टेप 2: जॉब अपॉर्चुनिटीज पर क्लिक करें। स्टेप 3: वेरिफाइड नौकरियां + ट्रस्टेड एजेंट की डिटेल्स देखें। फिर चुनाव करें। इसके अलावा emigrate.gov.in के टोल फ्री नंबर 1800113090 पर कॉल करके जानकारी हासिल कर सकते हैं। दरअसल विदेश जाने के इच्छुक लोग जागरूकता के अभाव में अक्सर फर्जी ट्रैवल एजेंटों का शिकार बनकर लाखों रुपये गंवा बैठते हैं। सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त एजेंट की ही सेवाएं लें। फर्जी ट्रैवल एजेंट वेबसाइट या सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर विज्ञापन के द्वारा लोगों से सम्पर्क करते हैं। सोशल मीडिया पर प्रसारित फेक विज्ञापनों के माध्यम से एजेंट पीड़ितों को अपने झांसे में फंसा लेते हैं। एजेंटों द्वारा तरह-तरह के लालच देकर पैसे हड़प लिए जाते हैं। बहुत से मामलों में ये एजेंट आम लोगों को अवैध तरीके से दूसरे देशों में भेज देते हैं और वहां से जंगलों, समुद्री रास्तों, सड़क मार्ग द्वारा पैदल यात्री, कंटेनरों द्वारा गैर कानूनी तरीके से सीमा पार करवाते हैं। विदेश गये लोगों के पासपोर्ट, दस्तावेज अपराधियों द्वारा छीन लिए जाते हैं और उनसे डरा-धमकाकर फिरौती वसूली जाती है।

जॉब के झूठे वादों से बचने की सलाह

किडनैपिंग को लेकर MEA को जारी करनी पड़ी एडवाइजरी

AI Image

भारतीयों की किडनैपिंग, बंधक बनाकर फिरौती की बढ़ती घटनाओं को लेकर भारत सरकार के विदेश मंत्रालय को एडवाइजरी जारी करनी पड़ी। 15 सितंबर को जारी इस एडवाइजरी में कहा गया कि हाल ही में ऐसे कई मामले सामने आए हैं, जिनमें भारतीय नागरिकों को जॉब के झूठे वादे करके या यह आश्वासन देकर ईरान की यात्रा करने के लिए फुसलाया गया कि उन्हें तीसरे देशों में भेजा जाएगा। ईरान पहुंचने पर इन भारतीय नागरिकों का आपराधिक गिरोहों द्वारा अपहरण कर लिया गया और उनकी रिहाई के लिए उनके परिवारों से फिरौती की मांग की गई। विदेश मंत्रालय की एडवाइजरी में यह भी कहा गया कि इस संदर्भ में सभी भारतीय नागरिकों को ऐसे जॉब के वादों या प्रस्तावों के संबंध में कड़ी सतर्कता बरतने की सख्त चेतावनी दी जाती है। खासकर यह ध्यान देने योग्य है कि ईरान सरकार भारतीयों को सिर्फ पर्यटन उद्देश्यों के लिए वीजा-फ्री एंट्री की अनुमति देती है। भारतीय नागरिकों से अपील की गई कि ऐसे झूठे रोजगार के प्रस्तावों को स्वीकारने से पहले सावधान रहें।

फिरौती केस को देख ईरान ने की फ्री वीजा एंट्री सस्पेंड

भारत की एडवाइजरी के बाद ईरान ने फ्री वीजा एंट्री को सस्पेंड कर दिया। 22 नवंबर से भारत से ईरान जाने या ईरान से होकर ट्रांजिट करने वाले सभी के लिए पहले से वीजा लेना अनिवार्य हो गया है। ईरान ने यह निर्णय नौकरी के झूठे वादे और बढ़ते अपहरण को रोकने के लिए उठाया। दरअसल टूरिस्ट वीजा फ्री होने की वजह से इसका लाभ उठाकर भारतीयों को बरगलाकर ईरान भेजा जाने लगा। वहां पहुंचने पर फिरौती के लिए अपहरण किया जाने लगा। फर्जी एजेंट ने लोगों को यह कहकर फुसलाते हैं कि ईरान से आगे उन्हें मध्य पूर्व और दक्षिण पूर्व एशिया के कई देशों में काम करने वाले हैंडलर्स की एक चेन के माध्यम से ले जाया जाएगा। इसके बाद तेहरान से समुद्र या हवाई मार्ग से ऑस्ट्रेलिया पहुंचाया जाएगा, जो अवैध माइग्रेशन के कई मामलों में अपनाया जाने वाला तरीका है।

फटाफट खबरें

अभ्यास के दौरान चार जवान घायल

■ NBT न्यूज, सहारनपुर: सहारनपुर जिले के थाना मिर्जापुर में शनिवार शाम को फायरिंग रेंज में प्रैक्टिस के दौरान अचानक ब्लास्ट होने से सेना के चार जवान घायल हो गए। घायलों को इलाज के लिए प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया। दो जवानों की गंभीर हालत को देखते हुए उन्हें जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया। सूचना मिलते ही सेना के वरिष्ठ अधिकारी मौके पर पहुंचे। ब्लास्ट कैसे हुई इसकी जांच की जा रही है। घटनास्थल से सैंपल इकट्ठा किए गए है।

बच्चे के अपहरण मामले में 4 अरेस्ट

■ NBT न्यूज, फिरोजाबाद: जनपद के टूंडला जंक्शन से शनिवार को गायब हुए बच्चे को बरामद कर लिया गया। बता दें कि एक मूक बधिर महिला का एक वर्षीय बच्चा उस समय गायब हो गया था जब महिला बच्चे को बेंच पर लेटाकर वाशरूम गई थी। रेलवे पुलिस ने तत्परता से कार्रवाई करते हुए बच्चे को बरामद किया। साथ ही दो महिला और दो पुरुषों को गिरफ्तार किया। बच्चा गायब होने पर महिला ने शोर मचाना शुरू कर दिया। रेलवे पुलिस ने जानकारी मिलने पर कार्रवाई की। सीसीटीवी फुटेज की मदद से पुलिस ने पूर्वा एक्सप्रेस से बच्चे को बरामद किया।

ऑटो पलटा, दो यात्री घायल

■ NBT न्यूज, फिरोजाबाद: थाना टूंडला क्षेत्र के नगला मोला के नजदीक शनिवार की रात एक ऑटो डिवाइडर से टकराकर पलट गई। हादसे में दो लोग घायल हो गए। दोनों को इलाज के लिए सरकारी ट्रॉमा सेंटर में भर्ती कराया गया है। कोहरे के कारण ऑटो ड्राइवर को डिवाइडर दिखाई नहीं दिया और ऑटो डिवाइडर से टकरा गई। लोगों के चीख पुकार सुन राहगीर घटनास्थल पर इकट्ठे हो गए। घायलों को ऑटो से निकाल कर इलाज के लिए भेजा गया। सूचना पर पुलिस पहुंची और मामले की छानबीन की। दुर्घटनाग्रस्त ऑटो को सड़क से हटवाया।

धर्मांतरण रैकेट के खिलाफ AI का इस्तेमाल करे पुलिस: CM

पुलिस अधिकारियों के सम्मेलन में योगी ने कहा, साइबर अपराध के प्रति हो जीरो टॉलरेंस

■ NBT रिपोर्ट, लखनऊ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने 'पुलिस मंथन' वरिष्ठ पुलिस अधिकारी सम्मेलन– 2025 के दूसरे दिन रविवार को अफसरों से कहा कि कहा कि अंतरराष्ट्रीय फंड से चल रहे धर्मांतरण रैकेट के खिलाफ पुलिस को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), वित्तीय ट्रेल और आधुनिक तकनीक का प्रभावी इस्तेमाल करना होगा। उन्होंने सोशल मीडिया के दुरुपयोग, साइबर अपराध और कानून-व्यवस्था बिगाड़ने की कोशिशों पर जीरो टॉलरेंस की नीति सख्ती से लागू करने के निर्देश दिए।

सीएम ने कहा कि सोशल मीडिया के जरिए जातीय और धार्मिक सौहार्द बिगाड़ने वालों, अफवाह फैलाने वालों और साइबर अपराधियों के खिलाफ बिना ढिलाई के कार्रवाई की जाए। डीपफेक, डार्क वेब और आतंकी नेटवर्क जैसी नई चुनौतियों को देखते हुए पुलिस और इंटेलिजेंस तंत्र को हर समय अलर्ट रहने को कहा।

महापुरुषों के नाम पर अराजकता की साजिश: सीएम ने कहा कि कुछ असामाजिक तत्व महापुरुषों के नाम का दुरुपयोग कर नए संगठन बना रहे हैं और समाज में अराजकता फैलाने की कोशिश कर रहे हैं। पुलिस को ऐसे संगठनों की पृष्ठभूमि की गहन जांच कर उनके नेटवर्क को ध्वस्त करने और कानून के दायरे में सख्त कार्रवाई करने के निर्देश दिए।

आगरा पुलिस कमिश्नर की तारीफ: धर्मांतरण को गंभीर चुनौती बताते हुए सीएम ने बलरामपुर जैसी घटनाओं का जिक्र किया और कहा कि ये संकेत हैं कि ऐसे प्रयास संगठित रूप से किए जा रहे हैं। उन्होंने आगरा के पुलिस कमिश्नर दीपक कुमार की सक्रियता की सराहना करते हुए कहा कि उनकी सतर्कता से एक छोटी घटना से बड़े अंतरराष्ट्रीय रैकेट का खुलासा हुआ। सीएम ने निर्देश दिए कि धर्मांतरण से जुड़ी गतिविधियों पर लगातार निगरानी रखी जाए और सोशल मीडिया के जरिए इंटेलिजेंस को और मजबूत किया जाए, ताकि शुरुआती स्तर पर ही ऐसी घटनाओं को रोका जा सके। सीएम ने कहा कि पशु-तस्करी के मामलों में केवल गिरफ्तारी पर्याप्त नहीं है। पूरे नेटवर्क और उसके मास्टरमाइंड की पहचान कर उनके खिलाफ कठोर कार्रवाई की जाए।

PTI

सीएम ने डीपफेक, डार्क वेब और आतंकी नेटवर्क जैसी नई चुनौतियों को देखते हुए पुलिस और इंटेलिजेंस तंत्र को हर समय अलर्ट रहने को कहा।

नशीले पदार्थों की तस्करी पर सीएम ने जताई चिंता

मुख्यमंत्री ने पाकिस्तान, बांग्लादेश और नेपाल से लगी अंतरराष्ट्रीय सीमाओं से जुड़ी आतंकी गतिविधियों और नशीले पदार्थों की तस्करी पर गहरी चिंता जताई। उन्होंने सीमा सुरक्षा और आतंकवाद निरोधक तंत्र को तकनीकी रूप से और मजबूत करने, विभागों के बीच बेहतर समन्वय और रियल- टाइम सूचना साझा करने के निर्देश दिए।

खाप पंचायत का फरमान, 18 से कम उम्र वाले न रखें मोबाइल

बागपत में पंचायत ने हाफ पैंट पर भी रोक की बात कही

■ भाषा, बागपत

बागपत जिले में शनिवार को हुई खाप पंचायत में 18 वर्ष से कम आयु के बच्चों को स्मार्टफोन रखने और सार्वजनिक स्थानों पर हाफ पैंट पहनने पर रोक लगाने का निर्णय किया गया। साथ ही बारात घर में विवाह के आयोजन पर यह कहते हुए आपत्ति की गई कि विवाह गांवों और घरों में होने चाहिए। थाम्बा पट्टी मेहर देशखाप के चौधरी बृजपालसिंह और खाप चौधरी सुभाष चौधरी ने पंचायत में लिए गए निर्णयों की जानकारी देते हुए बताया कि खाप चौधरियों का मानना है कि लड़के और लड़कियां समाज में समान हैं और अनुशासन के नियम दोनों पर समान रूप से लागू होने चाहिए।

> पंचायत में विवाह मैरिज हॉल में करने पर भी आपत्ति जताई गई।

पंचायत का मत था कि लड़कों द्वारा हाफ पैंट पहनकर सार्वजनिक स्थानों पर घूमना सामाजिक मर्यादाओं के विपरीत है और इससे समाज पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। पंचों ने स्पष्ट किया कि 18 वर्ष से कम उम्र के लड़कों को स्मार्टफोन देना उचित नहीं है। शादी-विवाह से जुड़े फैसलों पर पंचायत में कहा गया कि बारात घर में होने वाली शादियों से पारिवारिक जुड़ाव कमजोर होता है और इससे वैवाहिक संबंधों में तनाव पैदा होता है। इस कारण शादियां गांव और घरों में ही संपन्न होनी चाहिए। हालांकि पंचायत ने वॉट्सऐप के माध्यम से शादी के निमंत्रण कार्ड स्वीकार करने पर सहमति जताई।

खाप नेताओं ने बताया कि पंचायत में लिए गए फैसलों को लागू कराने के लिए गांव-गांव जाकर ग्राम समाज के जिम्मेदार लोगों के साथ विचार-विमर्श किया जाएगा। इन निर्णयों को समाज के हित में पूरे उत्तर प्रदेश में लागू कराने के प्रयास किए जाएंगे और अन्य खापों से भी संपर्क कर इसे एक अभियान का रूप दिया जाएगा।

AI Image

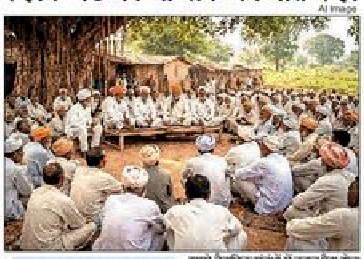

- पंचायत ने लड़कों के लिए कुर्ता पायजामा और लड़कियों के लिए सलवार कुर्ता की वकालत की।
- पंचायत ने कहा कि लड़कों द्वारा हाफ पैंट पहनकर सार्वजनिक स्थानों पर घूमना सामाजिक मर्यादाओं के विपरीत है और इससे समाज पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

कानपुर के GSVM मेडिकल कॉलेज में जिंदा मरीज को बताया मुर्दा, तीन सस्पेंड

■ NBT रिपोर्ट, कानपुर

जीएसवीएम मेडिकल कॉलेज में एक जिंदा मरीज को कागजों पर मुर्दा बनाकर पुलिस को सूचना भेज दी गई। 27 दिसंबर को पुलिस अस्पताल पहुंची तो मरीज जिंदा मिला। इसकी सूचना फैली तो हड़कंप मच गया। प्रिंसिपल डॉ संजय काला ने जांच के लिए कमिटी बनाई। वहीं डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक के आदेश पर आरोपित जूनियर डॉक्टर, स्टाफ नर्स को निलंबित कर दिया गया। जांच 48 घंटे में पूरी की जाएगी।

> मामले की जांच 48 घंटे में पूरी की जाएगी।

जीएसवीएम मेडिकल कॉलेज के एलएलआर हॉस्पिटल की इमरजेंसी के बेड नंबर-43 पर 60 साल और बेड नंबर-44 पर 43 साल का मरीज भर्ती था। शनिवार को बेड नंबर-43 पर भर्ती मरीज की मौत हो गई। पुलिस को भेजी जाने वाली सूचना (पीआई) में 43 साल के मरीज की जानकारी भेज दी गई। स्वरूपनगर पुलिस पोस्टमॉर्टम के लिए शव ले जाने के लिए पहुंची तो मरीज जिंदा मिला। इससे मेडिकल कॉलेज में खलबली मच गई। प्रिंसिपल डॉ काला ने बताया कि दोनों मरीजों को एक बीमारी था। जूनियर डॉक्टरों की काफी कमी है। जो डॉक्टर हैं, उनके पास बहुत ज्यादा काम है। जिस जूनियर डॉक्टर से गलती हुई, उसे तुरंत ही एक मरीज को हार्ट अटैक की सूचना मिली थी।

File

वोटर लिस्ट से 2.89 करोड़ नाम कटे!

■ पीटीआई, लखनऊ: प्रदेश में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के बाद बड़ी संख्या में नाम हटाए गए हैं। राज्य की ड्राफ्ट मतदाता सूची में इस बार करीब 12.55 करोड़ मतदाताओं के नाम शामिल होंगे, जबकि लगभग 2.89 करोड़ नाम प्री-एसआईआर सूची से हटा दिए गए हैं। यह ड्राफ्ट सूची 31 दिसंबर को जारी की जाएगी। मुख्य निर्वाचन अधिकारी नवदीप रिनवा के अनुसार, जिन मतदाताओं के नाम सूची से हटाए गए हैं, उन्हें 1 जनवरी से 31 जनवरी तक दोबारा आवेदन करने का मौका मिलेगा। इसके लिए फॉर्म-6 भरना होगा। नए मतदाता भी इसी फॉर्म से आवेदन कर सकते हैं। ड्राफ्ट सूची में शामिल मतदाताओं में से एक करोड़ से अधिक मतदाता 'अनमैप्ड' श्रेणी में हैं। इन्हें अब नोटिस भेजकर निर्वाचन आयोग द्वारा निर्धारित 12 दस्तावेजों में से कोई एक स्वप्रमाणित दस्तावेज देने को कहा जाएगा, ताकि उनका नाम अंतिम सूची में बना रहे।

घने कोहरे में छिपा ताजमहल, दीदार को आए सैलानी मायूस

■ NBT न्यूज, आगरा: पहाड़ों में हो रही बर्फबारी का असर रविवार को आगरा में भी नजर आया। सुबह कोहरे और गलन के साथ हुई। घने कोहरे में ताजमहल भी छिप गया। कोहरे और गलन के बीच ताज का दीदार करने पहुंचे सैलानियों को मायूस होना पड़ा। सुबह 11 बजे के बाद जब हल्की धूप निकली और कोहरा हटा तो पर्यटकों ने ताजमहल को निहारा। घने कोहरे की वजह से गाड़ियों की रफ्तार पर ब्रेक लग गई। मौसम विज्ञान विभाग ने 2 जनवरी तक घने कोहरे का अलर्ट जारी किया है। ऐसे में नए साल की पहली सुबह कोहरे की चादर में लिपटी होने की संभावना बढ़ गई है।

वहीं फिरोजाबाद में शनिवार से घने कोहरे के कारण जनजीवन प्रभावित रहा। विजिबिलिटी शून्य होने के कारण कई ट्रेनें रद्द कर दी गई। अधिकांश ट्रेन दो से 9 घंटे की देरी से चली। ट्रेन लेट होने से यात्रियों को काफी परेशानी झेलनी पड़ी। सड़कों पर गाड़ियां रेंगती नजर आई। रविवार को 11 बजे धूप निकलने के बाद लोगों ने राहत महसूस की। दिल्ली-कानपुर रेलवे लाइन पर घने कोहरे के कारण लखनऊ इंटरसिटी एक्सप्रेस, तेजस एक्सप्रेस सहित कई ट्रेनें रद्द रहीं। वहीं कई ट्रेनें 2 घंटे से लेकर 9 घंटे की देरी से चलीं।

NBT

सुबह 11 बजे के बाद जब हल्की धूप निकली तो पर्यटकों ने ताजमहल को निहारा।

सहारनपुर: कपड़ा गोदाम में लगी आग, करोड़ों का नुकसान

■ NBT न्यूज, सहारनपुर

सहारनपुर के ट्रांसपोर्ट नगर में शनिवार रात को एक कपड़ा गोदाम में अचानक भीषण आग लग गई। आग इतनी भयानक थी कि उसकी ऊंची लपटें और काले धुएं के गुबार दूर-दूर तक दिखाई दे रहे थे।

आग की सूचना मिलते ही फायर ब्रिगेड और थाना जनकपुरी पुलिस मौके पर पहुंची। शुरुआती तौर पर दो दमकल गाड़ियों ने आग बुझाने का प्रयास किया, लेकिन गोदाम का क्षेत्रफल बड़ा होने के कारण आग तेजी से फैलती चली गई। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए सरसावा, बेहट, सहारनपुर समेत अन्य स्थानों से फायर ब्रिगेड की गाड़ियों को बुलाया गया। कुल दस दमकल गाड़ियों और 38 फायरकर्मियों ने करीब 12 घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया।

इस हादसे में किसी प्रकार की जनहानि नहीं हुई, जो राहत की बात रही। हालांकि आग की चपेट में आकर गोदाम में रखा करीब दो करोड़ रुपये का कपड़ा जलकर राख हो गया।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, देर रात गोदाम से पहले धुआं उठता दिखाई दिया, जिसके बाद कुछ ही देर में आग की लपटें नजर आने लगीं। आसपास के लोगों ने तुरंत गोदाम मालिक हमजा और पुलिस को सूचना दी। आग और धुएं से घबराकर आसपास के दुकानदारों ने अपनी दुकानें बंद कर दीं।

प्राथमिक जांच में आग लगने का कारण शॉर्ट सर्किट माना जा रहा है।

AI Image

12 घंटे बाद आग पर काबू पाया गया

शुरुआती तौर पर दो दमकल गाड़ियों ने आग बुझाने का प्रयास किया, लेकिन गोदाम का क्षेत्रफल बड़ा होने के कारण आग तेजी से फैलती चली गई। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए सरसावा, बेहट, सहारनपुर समेत अन्य स्थानों से फायर ब्रिगेड की गाड़ियों को बुलाया गया। कुल दस दमकल गाड़ियों और 38 फायरकर्मियों ने करीब 12 घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया।

केशव प्रसाद मौर्य की नेताओं को सलाह, मुल्कीराज सैनी से प्रेरणा लें

NBT

उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य शनिवार को सहारनपुर में बाबू मुल्कीराज सैनी की स्मृति में स्थापित उनकी प्रतिमा के अनावरण कार्यक्रम में शामिल हुए।

■ NBT न्यूज, सहारनपुर: उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि आज के राजनेताओं को स्वतंत्रता सेनानी, पूर्व सांसद और विधायक बाबू मुल्कीराज सैनी के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। उन्होंने कहा कि बाबूजी ईमानदारी और सादगी के प्रतीक थे। उन्होंने समाज और देश की निस्वार्थ सेवा की। उपमुख्यमंत्री शनिवार को सहारनपुर में बाबू मुल्कीराज सैनी की स्मृति में स्थापित एमआरएस पब्लिक स्कूल परिसर में उनकी प्रतिमा के अनावरण कार्यक्रम में शामिल हुए। इस मौके पर केशव प्रसाद मौर्य को बाबू मुल्कीराज सैनी अवॉर्ड– 2025 से भी सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उपमुख्यमंत्री ने कहा कि देश में आज दो धाराएं चल रही हैं। एक परिवारवाद की और दूसरी लोकतंत्र को मजबूत करने की।

TIMES interact
Connecting People, Connecting Needs.
To book your ad
Logon to: ads.timesofindia.com
or Call: 18001205474 (Toll Free)
Scan QR Code

बिजनेस
बिजनेस प्रस्ताव

PREMIUM EUROPEAN COATING RESINS/ ADDITIVES
We can offer a diverse range of high-performance materials regularly at low prices, including:
• Waterborne Polyurethane Dispersions
• Acrylic Polyols
• Alkyds & Epoxies
• Functional Monomers & Crosslinkers
Please contact: Euro Exim Limited, Manchester (UK), Email: sales@euroeximlimited.co.uk

व्यक्तिगत
नाम परिवर्तन

I, Parkash Chand Mittal S/o Late Shri Radheyshyam Gupta R/o Site No 11, Plot No 8, 2nd Floor, West Patel Nagar, Delhi-110008 have changed my name to Prakash Chand Mittal. Parkash Chand Mittal and Prakash Chand Mittal are same person.

I, Jageshwar Prajapati S/o Dev Nath Prajapati R/o T-576A/1, gali no-2., Baljeet Nagar, Patel Nagar Delhi-110008, affirm that Jageshwar Prajapati, Jageshwar Prasad and Jageshwar is same as it appear in this id card.

I, Rahul Goel S/o Subhash Goyal R/o H.No. 75, South Avenue, President Estate, PO-Nirman Bhawan, New Delhi-110011 have changed my minor son's name from Toraya Goel (DOB- 09.10.2021) to Krishiv Goel for all purposes.

I MAHABIR SINGH S/o RAM KISHAN R/o RZ 41, K Block, New Roshan Pura, Najafgarh ND 43 is also known as MAHABIR SINGH DALAL S/o RAMKISHAN SINGH DALAL. I declare that my correct name is MAHABIR SINGH S/o RAM KISHAN for all purposes

सामान्य

IT is for general information that I, AMAN SHEORAN S/o AJAY KUMAR R/o 1-1-201, Gurjinder Vihar AWHO Township, Greater Noida, Gautam Buddha Nagar, Uttar Pradesh-201310, declare that name of mine has been wrongly written as SHEORAN AMAN AJAY KUMAR SUMAN in my Graduation educational documents. The actual name of mine is AMAN SHEORAN which may be amended accordingly. It is certified that I have complied with other legal requirements in this connection.

टेंडर और नोटिस
निविदाएं (टेंडर्स)

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
प्रापण विभाग
यूनियन बैंक भवन, 239, विधान भवन मार्ग, नरीमन पॉइंट, मुंबई – 400021.
निविदा सूचना
यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, प्रतिष्ठित विक्रेताओं से निम्नलिखित कार्यान्वयन के लिए ई-निविदा प्रस्ताव आमंत्रित करता है
जीईएम बोली संख्या-जीईएम/2025/बी/7035858 दिनांक: 23.12.2025
वेब-आधारित निर्यात डेटा प्रोसेसिंग और मॉनिटरिंग सिस्टम (EDPMS) तथा आयात डेटा प्रोसेसिंग और मॉनिटरिंग सिस्टम (IDPMS) के उन्नयन और ऑनबोर्डिंग के साथ सुविधा प्रबंधन समर्थन हेतु निविदा (RFP)
पूर्व बैठक– 05.01.2026 सुबह 11:00 बजे
प्रस्ताव प्राप्ति की अंतिम तारीख – 17.01.2026 शाम 16:00 बजे
अन्य जानकारी एवं बोली दस्तावेज डाउनलोड करने के लिए तथा निविदा में प्रतिभागिता के लिए सरकारी ई-मार्केट (जीईएम) पोर्टल https://gem.gov.in को देखें।

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
प्रापण विभाग
यूनियन बैंक भवन, 239, विधान भवन मार्ग, नरीमन पॉइंट, मुंबई – 400021.
निविदा सूचना
यूनियन बैंक ऑफ इंडिया प्रतिष्ठित विक्रेताओं से निम्नलिखित कार्यान्वयन के लिए ई-निविदा प्रस्ताव आमंत्रित करता है
जीईएम बोली संख्या – जीईएम/2025/बी/7031870 दिनांक: 22.12.2025
कोर बैंकिंग प्रणाली के लिए महत्वपूर्ण आईटी इंफ्रास्ट्रक्चर की सुविधा प्रबंधन सेवाओं हेतु विक्रेता के चयन के लिए प्रस्ताव का अनुरोध
पूर्व बैठक – 02.01.2026 सुबह 11:00 बजे
प्रस्ताव प्राप्ति की अंतिम तारीख – 16.01.2026 शाम 16:00 बजे
अन्य जानकारी एवं बोली दस्तावेज डाउनलोड करने के लिए तथा निविदा में प्रतिभागिता के लिए सरकारी ई-मार्केट (जीईएम) पोर्टल https://gem.gov.in को देखें।

न्यायालय सूचना

PUBLICATION NOTICE
NATIONAL CONSUMER DISPUTES REDRESSAL COMMISSION
Under the Consumer Protection Act, 2019
Upbhokta Nyay Bhawan 'F' Block, General Pool Office Complex, INA, NEW DELHI-110023
Telephone No.: 011-24608801-04
Fax No. 011-24651505
Email: ncdrc@nic.in
Website: www.ncdrc.nic.in
Revision Petition No. 3166/2024
(Against the order dated 01.10.2024 in Appeal Number 601/2017 of the State Commission, Delhi)
Ms. Sarita Gupta ...Petitioner/Appellant
Versus
M/s. Mera Baba Real Estate Pvt. Ltd. ...Opposite Party/Respondent(s)
To
1. M/S MERA BABA REAL ESTATE PVT. LTD. THROUGH ITS AUTHORIZED REPRESENTATIVE, MR. GAURAB GUPTA, 701, RING ROAD MALL, SECTOR-3, ROHINI, DELHI-110 085
NOTICE
(SUBSTITUTED NOTICE BY WAY OF PUBLICATION)
WHEREAS Ms. Sarita Gupta, has filed a Revision Petition No. 3166/2024 against the order dated 01.10.2024 in Appeal Number 601/2017 of the State Commission, Delhi.
Whereas the above-mentioned Revision Petition is pending before the National Commission, New Delhi wherein you have been arrayed as Respondent.
WHEREAS this Commission has ordered vide order dated 13.11.2025 to effect service upon you by this Publication returnable on 11.02.2026.
NOW, THEREFORE, TAKE NOTICE that you are hereby directed to appear before this Commission in person or through your counsel/ authorised representative on 11.02.2026 at 10.30 a.m., failing which the Petition will be disposed of ex-parte on merits.
Dated this the 22 November, 2025.
Sd/-
SECTION OFFICE

BUSINESS CONNECT

FOR SALE
Two Commissioned Small Hydro Power Projects for Sale, both having valid PPA's at Good Price.
Interested parties contact: commhydro@gmail.com

भर्ती
भर्ती-रिक्त पदों की स्थिति
विपणन, विज्ञापन और बिक्री
बिक्री
WANTED: Female Sales Exec(min 1yr exp in clothing sales)/Vasant Kunj, Delhi. Must be confident, well-presented & customer-friendly. 9999799677
अन्य रिक्तियां
एकाधिक रिक्तियां
SPA CENTER need Tele callers, Female Therapist, Data Entry, Office Boy, Food and Accommodation Given 6309033973

HEALTH & WELLNESS TIMES interact

SEX PROBLEM
बचपन की गलतियों के कारण आयी सभी सेक्स समस्याओं के समाधान के लिए हमारी सलाह द्वारा दवा का सेवन करें और 15 ही दिन में फर्क देखें
सिर्फ ₹955 महीना
घर बैठे दवा मंगवायें
सन्यासी आयुर्वेदा
• मंगोलपुरी • कालकाजी
फ्री सलाह: 8527001155

SEXOLOGIST DR. VIKRAM SABLOK
सबलोक फार्मेसी
चाँदनी चौक
9811195025
मिलते जुलते नाम से सावधान

IVF क्यों? जब है Ayurved
निसन्तान शुक्राणु कमी
SEX रोगी मिलें
बवासीर, सफेद दाग / सोरायसिस
आकाश दवाखाना
9953396533
8860003863

शादी से पहले ही सलाह लें गुप्त रोगों के लिए! मिलें
चेतन आयुर्वेदा
बदरपुर दरियागंज
मजनपुरा छतरपुर
9817469817

बवासीर
का इंजेक्शन द्वारा सफल इलाज
पेट दर्द, गैस, कब्ज, एसिडिटी का सफल इलाज
(अनुभव 25 वर्ष)
सोनू क्लीनिक
Dr. A.K. Chaudhary (B.A.M.S.)
K-18, मेन वजीराबाद रोड, श्याम नगर, विष्णु गार्डन
9289626250
9810807952

Readers are recommended to make appropriate enquiries and seek appropriate advice before sending money, incurring any expenses, acting on medical recommendations or entering into any commitment in relation to any advertisement published in this publication. All creatives marked as Advertorial, Spotlight and Promotional Features are to be treated as Advertisements. The Times of India Group doesn't vouch for any claims made by the Advertisers of the products and services. The Printer, Publisher, Editor, and the owners of The Times of India Group publications shall not be held liable for any consequences, in the event such claims are not honoured by the Advertisers.

TIMES interact
TO ADVERTISE IN THE CLASSIFIEDS SECTION, FOR ANY OF THE BELOW MENTIONED CATEGORIES
MATRIMONIAL | BUSINESS | PROPERTY
RECRUITMENT, EDUCATION | SHOPPING | SERVICES, VEHICLES, TRAVEL
TENDER, PUBLIC NOTICE | CHANGE OF NAME, LOST & FOUND | BIRTHDAY/ ANNIVERSARY ADS
Please call us at the below mentioned nos.

Area / Zone	Contact Person	Mobile No.	Area / Zone	Contact Person	Mobile No.
Central Delhi1 + North Delhi	Amit Ghosh	98117 90649	South Delhi + Faridabad + Noida	Raghav Arora	99999 95460
Central Delhi2 + Ghaziabad + East Delhi	Sunil Srivastava	99994 99498	West Delhi + Dwarka + Gurgaon	Aman Pasricha	93126 33518

CCI NG 3.7 Product: NBTDelhiBS PubDate: 29-12-2025 Zone: Noida Edition: 1 Page: NBTNDP5 User: cci Time: 12-28-2025 23:17 Color:

फटाफट खबरें

बंगाल में एक और बीएलओ की मौत

■भाषा, कोलकाता: पश्चिम बंगाल के बांकुड़ा जिले में रविवार को एक बूथ-लेवल अधिकारी (बीएलओ) का शव पाया गया। घटना रानीबांध ब्लॉक में हुई, जहां रविवार सुबह एक स्कूल के परिसर से हराधन मंडल का शव बरामद किया गया। **उधर, SIR प्रक्रिया के मद्देनजर केंद्र सरकार ने पश्चिम बंगाल के मुख्य निर्वाचन अधिकारी मनोज अग्रवाल को Y+ सुरक्षा दी है।**

हुमायूं कबीर के बेटे पुलिस हिरासत में

■भाषा, मुर्शिदाबाद: पश्चिम बंगाल पुलिस ने रविवार को जनता उन्नयन पार्टी के संस्थापक हुमायूं कबीर के बेटे गुलाम नबी आजाद को पुलिस कॉन्स्टेबल (प्राइवेट सिक्योरिटी ऑफिसर) जुम्मा खान पर हमले के आरोप में हिरासत में ले लिया। आरोप है कि जब खान ने ड्यूटी से छुट्टी मांगी तो गुलाम ने उन्हें पीटा। हालांकि, बाद में पूछताछ के बाद पुलिस ने गुलाम नबी आजाद को छोड़ दिया। पुलिस ने गुलाम को जांच लंबित रहने तक नोटिस देकर रिहा किया है।

छात्रा की बर्थडे पार्टी में मुस्लिम दोस्तों की मौजूदगी पर हंगामा

पुलिस ने मुस्लिम लड़कों और कैफे कर्मचारी पर ही कर दिया चालान

■ NBT रिपोर्ट/भाषा, बरेली

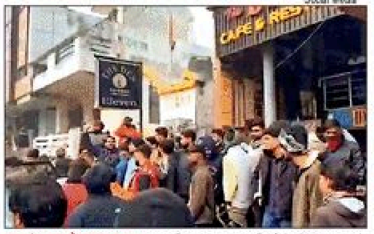
Social Media
बजरंग दल ने पल्ला झाड़ा: दावा किया जा रहा था कि कैफे में हंगामा करने वाले लोग बजरंग दल कार्यकर्ता थे। बजरंग दल ने कहा है कि हंगामे के मुख्य आरोपी ऋषभ ठाकुर को कुछ दिन पहले ही संगठन से निकाल दिया था।

उत्तर प्रदेश के बरेली में एक कैफे में नर्सिंग छात्रा की बर्थडे पार्टी के दौरान मुस्लिम युवकों की मौजूदगी के खिलाफ हिंदू संगठन के कार्यकर्ताओं ने जमकर हंगामा किया। पुलिस के अनुसार, घटना प्रेमनगर इलाके के 'द डेन कैफे एंड रेस्तरां' में शनिवार रात हुई। पार्टी में करीब 10 लोग मौजूद थे, जिनमें छह लड़कियां और चार लड़के शामिल थे। चार लड़कों में से दो शान और वाकिफ मुस्लिम थे। पुलिस ने बताया कि मुस्लिम युवकों की मौजूदगी को लेकर कुछ हिंदू संगठनों के सदस्य कैफे पहुंचे। उन्होंने नारेबाजी और हंगामा किया। आरोप है कि इस दौरान एक मुस्लिम युवक और बीच-बचाव करने आई छात्रा के साथ मारपीट भी की गई।

बरेली के 'द डेन कैफे एंड रेस्तरां' में हुई घटना

सूचना मिलने पर प्रेमनगर पुलिस मौके पर पहुंची और छात्रा तथा अन्य लोगों को पूछताछ के लिए थाने ले गई। शुरुआत में एक मुस्लिम युवक को हिरासत में लिया गया, जबकि दूसरा युवक मौके से भाग गया।

उन्होंने कहा, 'छात्रा ने अपने दोस्तों के लिए बर्थडे पार्टी का आयोजन किया था। हमने छात्रा के रिश्तेदारों को बुलाया है और पार्टी में मौजूद अन्य लोगों के परिजनों को भी सूचित किया गया।' पुलिस ने पहले शान और कैफे के कर्मचारी शैलेंद्र गंगवार के खिलाफ शांति भंग करने के लिए निवारक धाराओं के तहत चालान तैयार किया। बाद में, जब सीओ आशुतोष शिवम को सूचना मिली कि दूसरा युवक वाकिफ फरार है तो पुलिस ने उसे भी पकड़ लिया। शान व वाकिफ और कैफे कर्मचारी समेत तीन लोगों के खिलाफ रविवार को कार्रवाई कर चालान किया गया है।

छात्रा बोली- विडियो में पूरा सच नहीं दिखाया

छात्रा ने बताया कि जो विडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है, वह गलत है। इसमें पूरी सच्चाई नहीं दिखाई गई है। TOI की रिपोर्ट के मुताबिक, जिस तरह से घटना हुई और जितने लोग मौके पर मौजूद थे, वह सब विडियो में नहीं दिखाया गया है। मैं अपने दोस्तों के साथ बर्थडे पार्टी करने गई थी। इसी दौरान हमारी पार्टी के बीच में कुछ लोग घुस आए और मारपीट करने लगे। उन्होंने मेरे साथ बदतमीजी की और मेरा मोबाइल फोन छीनने की कोशिश की। कुछ देर बाद पुलिस मौके पर पहुंची और मुझे और मेरे दोस्तों को अपने साथ ले गई। मैंने पुलिस को साफ बताया कि आरोपी लोग झूठे आरोप लगा रहे थे, जबकि ऐसा कुछ भी नहीं था। वहां हिंदू और मुस्लिम दोनों समुदाय के दोस्त मौजूद थे। सिर्फ दो मुस्लिम दोस्त थे। मैं चाहती हूं विडियो इंटरनेट से हटाया जाए।

देहरादून में त्रिपुरा के छात्र की हत्या

पिता ने कहा, नस्ली गालियों का विरोध किया तो मार डाला

■ NBT रिपोर्ट, देहरादून

BCCL
त्रिपुरा में परिवार के लोगों और करीबियों ने एंजेल को श्रद्धांजलि दी।

उत्तराखंड के देहरादून में कथित रूप से नस्ली टिप्पणियों के बाद त्रिपुरा के एक मेडिकल स्टूडेंट एंजेल चकमा की हत्या कर दी गई। स्टूडेंट के पिता तरुण प्रसाद चकमा सेना के जवान हैं। उन्होंने पूरे घटनाक्रम के बारे में बताते हुए भावुक हो गए। उन्होंने कहा, बेटा किसी झगड़े या विवाद के इरादे से नहीं, बल्कि सब्जी लेने बाजार गया था। वहां उसने अपने ऊपर नस्ली गालियों का विरोध किया। इसपर उसकी बेरहमी से जान ले ली गई। वो कहता रहा कि मैं इंडियन हूं फिर भी उसकी हत्या कर दी।

पिता ने पुलिस पर FIR दर्ज करने में देरी का आरोप लगाया।

तरुण प्रसाद चकमा ने बताया, मार्केट में दो बाइकों पर सवार लोग आए और बेटे पर 'चीनी' और 'मोमो' जैसे नस्ली कॉमेंट करने लगे। मेरे बेटे ने इसका विरोध करते हुए कहा कि हम भारतीय हैं, हमें इस तरह क्यों बोला जा रहा है। बस इसी बात पर उन्होंने उस पर हमला कर दिया। पिता के मुताबिक, हमलावरों ने चाकू से एंजेल के सिर और गर्दन पर कई वार किए। उसे बेरहमी से पीटा गया। पिता ने बताया कि जब मुझे फोन आया तो मैं तुरंत देहरादून के अस्पताल पहुंचा। मेरा बेटा आईसीयू में भर्ती था। हमने कोशिश की, लेकिन बचा नहीं पाए।

मदद नहीं की... पुलिस पर भी आरोप

तरुण प्रसाद चकमा ने पुलिस पर भी गंभीर सवाल उठाए हैं। उनका कहना है कि घटना के वक्त पुलिस ने समय पर मदद नहीं की। अगर सही समय पर कार्रवाई होती, तो शायद मेरा बेटा आज जिंदा होता। उन्होंने आगे कहा कि मैं नहीं चाहता कि उत्तर-पूर्वी भारत का कोई भी बच्चा या स्टूडेंट ऐसी स्थिति से गुजरे। यह सिर्फ मेरे बेटे की नहीं, पूरे देश की समस्या है।

सड़क से लेकर सोशल मीडिया तक दिखा लोगों का आक्रोश...

NBT रिपोर्ट, देहरादून: एंजेल की हत्या ने उत्तराखंड समेत पूरे देश में आक्रोश पैदा कर दिया है। सोशल मीडिया से लेकर सड़कों तक इस घटना के खिलाफ विरोध जारी है। देहरादून, ऋषिकेश सहित कई शहरों में नॉर्थ ईस्ट के छात्रों ने कैंडल मार्च निकालकर न्याय की मांग की है। मामले में अब तक पुलिस ने पांच आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है, जिनमें दो नाबालिग शामिल हैं। वहीं, एक मुख्य आरोपी अभी भी फरार है। एंजेल चकमा देहरादून में जिज्ञासा यूनिवर्सिटी में एमबीए फाइनल ईयर का छात्र थे। 9 दिसंबर की शाम एंजेल और उनके छोटे भाई माइकल बाजार की ओर जा रहे थे, तभी कुछ लोगों के एक समूह ने उन्हें रोक लिया। आरोप है कि आरोपियों ने दोनों भाइयों पर नस्लीय टिप्पणियां करते हुए उन्हें कथित तौर पर चीनी कहकर अपमानित किया।

छठे आरोपी की तलाश में नेपाल गई पुलिस की टीम: CM धामी

पीटीआई, देहरादून: देहरादून में त्रिपुरा के छात्र एंजेल चकमा की हत्या के बाद बढ़ते दबाव के बीच पुलिस ने फरार छठे आरोपी पर 25 हजार रुपये का इनाम घोषित किया है। इस बीच, उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने रविवार को कहा कि ऐसी घटनाएं बर्दाश्त नहीं की जाएंगी। सरकार अराजक तत्वों से सख्ती से निपटेगी। मामले में पांच आरोपियों को पकड़ा जा चुका है और छठा आरोपी यज्ञराज अवस्थी नेपाल का रहने वाला है। सीएम ने कहा, पुलिस की एक टीम को नेपाल भेजा गया है। जल्द ही उसे पकड़ लिया जाएगा। दोषियों के खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

समानता, एकता की नींव पर हमला: मेघालय सीएम: इस मामले पर मेघालय के मुख्यमंत्री कॉनराड के. संगमा ने भी दुख जताया। उन्होंने कहा, नस्लीय हिंसा के कारण ये मौत दिल दहला देने वाली और अस्वीकार्य है।

त्रिपुरा के सीएम को धामी का भरोसा

त्रिपुरा के मुख्यमंत्री माणिक साहा ने कहा कि उनकी उत्तराखंड के सीएम पुष्कर सिंह धामी से बात हुई है। उन्होंने कहा, धामी ने भरोसा दिया है कि एंजेल की हत्या में जिम्मेदार सभी लोगों पर सख्त कार्रवाई होगी। दिल्ली लीडरशिप को भी इस घटना की जानकारी है और उन्होंने पीड़ित परिवार को न्याय दिलाने के लिए उत्तराखंड सरकार को मामले पर कार्रवाई करने के लिए जरूरी निर्देश भी जारी किए हैं।

ऑपरेशन सिंदूर, शुभांशु, महाकुंभ... मन की बात में मोदी ने गिनाईं 2025 की उपलब्धियां

PM ने चेताया, एंटीबायोटिक दवाएं कमजोर साबित हो रहीं

■ NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली

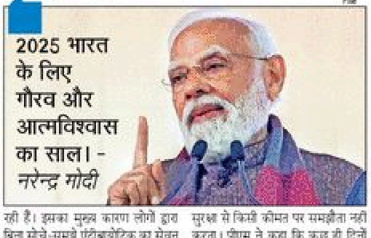

File

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को कहा कि 2025 भारत के लिए गौरवपूर्ण उपलब्धियों का साल रहा, जिसने देश को नई पहचान और नया आत्मविश्वास दिया। साल के आखिरी मन की बात कार्यक्रम में प्रधानमंत्री ने देशवासियों से एंटीबायोटिक दवाओं के उपयोग में सावधानी बरतने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि दवा लेने से पहले उचित गाइडेंस और डॉक्टर की सलाह अवश्य लेनी चाहिए। प्रधानमंत्री ने इस संदर्भ में आईसीएमआर (इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च) की एक हालिया रिपोर्ट का हवाला दिया। उन्होंने बताया कि रिपोर्ट के अनुसार निमोनिया और यूटीआई जैसी कई बीमारियों के खिलाफ एंटीबायोटिक दवाएं कमजोर साबित हो रही हैं। इसका मुख्य कारण लोगों द्वारा बिना सोचे-समझे एंटीबायोटिक का सेवन है। उन्होंने लोगों से अपील की कि वे मनमर्जी से दवाओं के इस्तेमाल से बचें।

मोदी ने ऑपरेशन सिंदूर का जिक्र करते हुए कहा कि अभियान ने पूरी दुनिया को यह संदेश दिया कि आज का भारत अपनी सुरक्षा से किसी कीमत पर समझौता नहीं करता। पीएम ने कहा कि कुछ ही दिनों में 2026 दस्तक देने वाला है और बीते साल में भारत का प्रभाव हर क्षेत्र में साफ दिखाई दिया। 2025 ने हमें ऐसे कई पल दिए जिन पर हर भारतीय को गर्व हुआ चाहे वह देश की सुरक्षा हो, खेल का मैदान हो, विज्ञान की प्रयोगशालाएं हों या फिर वैश्विक मंच।

खेलों का भी यादगार साल: प्रधानमंत्री ने खेल उपलब्धियों का जिक्र करते हुए कहा कि 2025 भारत के लिए खेलों का भी यादगार साल रहा। पुरुष क्रिकेट टीम ने आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी जीती, महिला क्रिकेट टीम ने पहली बार वर्ल्ड कप अपने नाम किया और महिला दृष्टिबाधित टी20 विश्व कप में भी भारत ने इतिहास रचा।

विज्ञान और स्पेस के क्षेत्र में भी गौरव: विज्ञान और अंतरिक्ष के क्षेत्र में भारत की उपलब्धियों पर मोदी ने कहा कि शुभांशु शुक्ला अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन तक पहुंचने वाले पहले भारतीय बने जो देश के लिए गर्व का क्षण है। उन्होंने कहा कि दुनिया आज भारत को उम्मीद और भरोसे की नजर से देख रही है जिसकी सबसे बड़ी वजह भारत की युवा शक्ति है।

प्रधानमंत्री ने पर्यावरण संरक्षण और वन्यजीव सुरक्षा के प्रयासों का जिक्र करते हुए बताया कि देश में चीतों की संख्या अब 30 से अधिक हो गई है। साथ ही उन्होंने प्रयागराज महाकुंभ और अयोध्या में राम मंदिर पर ध्वजारोहण जैसे आयोजनों को आस्था, संस्कृति और विरासत का प्रतीक बताया।

स्वदेशी को लेकर बढ़ते उत्साह पर प्रधानमंत्री ने कहा कि लोग अब वही प्रोडक्ट खरीद रहे हैं, जिनमें भारतीय मेहनत और मिट्टी की खुशबू हो। उन्होंने स्वीकार किया कि वर्ष 2025 में प्राकृतिक आपदाओं की चुनौतियां भी रहीं लेकिन देश अब 2026 में नई उम्मीदों और नए संकल्पों के साथ आगे बढ़ने के लिए तैयार है।

NBT कम्युनिटी कनेक्ट

JNU में गूंजी भोजपुरी कविताओं की मिठास

कवियों ने अपनी रचनाओं से लोगों को किया मंत्रमुग्ध

■ NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली: जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) के भारतीय भाषा केंद्र और दिल्ली सरकार की मैथिली-भोजपुरी अकैडमी के संयुक्त तत्वाधान में 'भोजपुरी के शेक्सपियर' कहे जाने वाले महान लोक कलाकार भिखारी ठाकुर की जयंती के अवसर पर एक भव्य भोजपुरी कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया।

भोजपुरी के 'शेक्सपियर' भिखारी ठाकुर की जयंती पर भव्य कवि सम्मेलन आयोजित

विश्वविद्यालय के एसएल-1 स्थित कमेटी रूम नंबर 212 में आयोजित हुआ कार्यक्रम। कवि सम्मेलन में भोजपुरी के कई प्रतिष्ठित कवियों ने अपनी रचनाओं से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

आमंत्रित कवियों में सोनी पांडेय, संतोष पटेल, नूरैन अंसारी और पुष्कर कुमार ने अपनी रचनाएं सुनाईं। सम्मेलन की अध्यक्षता राजेश पासवान ने की, जबकि कार्यक्रम का कुशल संचालन मेनका श्रीवास्तव द्वारा किया गया। कार्यक्रम के अंत में मैथिली-भोजपुरी अकैडमी के सचिव ने सभी अतिथियों और प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर पूरा परिसर 'भोजपुरिया' रंग में रंगा नजर आया।

ढोल-दमाऊ की थाप और पहाड़ी स्वाद: सजा 'छोटा उत्तराखंड'

Poonam.Bisht@timesofindia.com

उत्तराखंड के हुनर और उद्यमिता को समर्पित एक दिवसीय कार्यशाला का हुआ आयोजन

■ म्यरू पहाड़ फाउंडेशन की ओर से 25 दिसंबर को न्यू अशोक नगर के DPMI सभागार में उत्तराखंड के हुनर, उद्यमिता और आत्मनिर्भरता को समर्पित एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर उत्तराखंडी उद्यमियों का सम्मान भी किया गया, जिनमें पहाड़ी ड्रेस डिजाइनर नीता बिष्ट, 'कल्यो' नाम से पारंपरिक खानपान का कार्य कर रही मधु अग्रवाल, धारी देवी बैंड चला रहे हरीश शर्मा, मत्स्य पालन कर रहे गोपाल रावत, पहाड़ी उत्पाद बेच रहे 'स्याना रिटेल' के दीपक ध्यानी और कृषक आनंद गढ़ाकोटी जैसे कई नाम थे।

उत्तराखंडी उद्यमियों की अनोखी कहानियां सामने लाया म्यरू फाउंडेशन

सम्मानित होने वाले उत्तराखंड से आए ऐसे ही उद्यमी थे अधिवक्ता संजय शर्मा। उन्होंने बताया कि हर किसी पहाड़ी को अपनी आय का पांच से दस प्रतिशत हिस्सा पहाड़ को देना चाहिए। दीपक ध्यानी ने कहा कि हम आज 22 हजार लोगों तक पहाड़ी उत्पाद पहुंचा रहे हैं। उत्तराखंड में 47 कोऑपरेटिव हमसे जुड़े हैं।

गोपाल रावत ने बताया कि पहाड़ में कारोबार शुरू कर रहे लोगों को मेरा सुझाव है कि एक ही उद्यम पर निर्भर न रहें। एक साथ तीन-चार उद्यम चलाएं। पहाड़ी बैंड सर्विस देने वाले हरीश शर्मा खुद भी वायु सेना में मिलिट्री बैंड इंस्ट्रक्टर हैं। उन्होंने बताया कि अब ढोल-दमाऊ बुकिंग के लिए हमने इसकी बुकिंग सर्विस शुरू की है। गढ़वाली, कुमाऊनी और टिहरी में ढोल बजाने के स्टाइल का फर्क समझाते हुए हरीश बताते हैं कि हमारे बैंड में सॉफ्टवेयर इंजीनियर और BSF कर्मी भी हैं। मधु अग्रवाल ने बताया कि जंगलों में जानवर गंदगी नहीं फैलाता बल्कि इंसान फैलाता है, इसलिए हम ऋषिकेश में स्वच्छता अभियान चलाते हैं।

म्यरू फाउंडेशन चलाने वाले महिपाल नेगी ने बताया कि इस फाउंडेशन की शुरुआत हमने कोरोना काल में की थी। हर साल हम पहाड़ों पर जाकर मेडिकल कैंप लगाते हैं। कार्यक्रम में भगवत मनराल ग्रुप ने रंगारंग प्रस्तुति दी। इस अवसर पर डॉ. गोविन्द सिंह, डॉ. विनोद बछेती, दिनेश ध्यानी, जगमोहन डांगी समेत कई गणमान्य लोग उपस्थित थे।

गुर्जर समाज की नई मिसाल: बिना दहेज के बंधे 40 परिवारों के अटूट गठबंधन

दहेज निवारण समिति ने रविवार को मनाया अपना पांचवा स्थापना दिवस

■ NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली: गुर्जर समाज में दहेज जैसी कुप्रथा के खिलाफ एक मजबूत सामाजिक संदेश देते हुए दहेज मुक्त विवाह करने वाले परिवारों को सार्वजनिक रूप से सम्मानित किया गया। दहेज निवारण समिति ने रविवार को अपना पांचवा स्थापना दिवस नोएडा के सेक्टर-39 में उत्साह और सामाजिक चेतना के साथ मनाया। इस अवसर पर दिल्ली-एनसीआर, पानीपत, मेरठ और मुजफ्फरनगर से आए 40 से अधिक गुर्जर परिवारों को सम्मानित किया गया, जिन्होंने अपने बच्चों के विवाह बिना किसी भी प्रकार के दहेज के संपन्न कराए।

कार्यक्रम की शुरुआत मुख्य अतिथि आयकर विभाग की रिटायर्ड महानिदेशक सुनीता बैसला ने दीप प्रज्वलित कर की। आयोजन का संचालन दहेज निवारण समिति के संस्थापक सदस्य आर्य सागर खारी और वीरचंद भड़ाना ने किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में सामाजिक कार्यकर्ता, गणमान्य लोग और परिवारजन उपस्थित रहे। दहेज निवारण समिति की अध्यक्ष निर्मल डेढ़ा ने कहा कि समाज को आगे बढ़ाने के लिए दहेज जैसी कुरीतियों को पूरी तरह समाप्त करना जरूरी है। उन्होंने बताया कि उन्हें कर्नल किरोड़ी सिंह बैसला से दहेज मुक्त विवाह की प्रेरणा मिली और इसी सोच के साथ समिति हर वर्ष दहेज मुक्त शादी करने वाले परिवारों और दंपतियों को सम्मानित करती है, ताकि अन्य लोग भी इस दिशा में आगे आएं।

- सम्मान समारोह में दहेज के खिलाफ एकजुट हुआ गुर्जर समाज
- दहेज मुक्त विवाह करने वाले 40 परिवारों को किया गया सम्मानित
- आयोजकों ने बेटियों की शिक्षा और आत्मनिर्भरता पर भी दिया जोर

इस अवसर पर मुख्य अतिथि सुनीता बैसला ने समिति के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि राष्ट्रीय दहेज मुक्त समिति समाज में बेहद सराहनीय कार्य कर रही है। उन्होंने सुझाव दिया कि इस तरह की पहल का विस्तार अन्य राज्यों में भी होना चाहिए। कार्यक्रम में समिति की ओर कमिटी के संयोजक सदस्य वीर सिंह डेढ़ा सहित संतोष राठी, चारु आनंद, रेशमा चौधरी, सीमा चौधरी, एडवोकेट छाया भाटी, प्रोफेसर रोशन लाल छोकर और वी.पी. वर्मा जैसे कई लोग मौजूद रहे।

मैथिली अकादमी में ताला, मुख्यमंत्री को लिखा लेटर

■ NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली: मिथिला की भाषा, साहित्य और संस्कृति के संरक्षण के लिए मैथिली अकादमी में ताला लगने के गंभीर मामले को लेकर मिथिला स्टूडेंट्स यूनियन ने बेनीपट्टी से बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को पत्र लिखा है।

पत्र में लिखा, जल्द फैसला नहीं आने पर करेंगे आंदोलन

पत्र में मैथिली अकादमी का तत्काल ताला खोलने, अकादमी में स्थायी कर्मचारियों की बहाली सुनिश्चित करने, अकादमी को पर्याप्त बजट और प्रशासनिक सहयोग प्रदान करने तथा मैथिली भाषा और साहित्य के संरक्षण के लिए ठोस और दीर्घकालिक नीति बनाने आदि की मांग की गई है। पत्र में यह भी स्पष्ट किया गया है कि अगर जल्द सकारात्मक निर्णय नहीं लिया गया, तो मिथिला स्टूडेंट्स यूनियन राज्यव्यापी आंदोलन करेगी। पत्र में उल्लेख किया गया है कि वर्ष 1976 में स्थापित मैथिली अकादमी आज जिस हालत में है वो पूरे मिथिला समाज के लिए अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण और अपमानजनक स्थिति है।

स्वर, सुर और संवाद: मिथिला की सांस्कृतिक विरासत का उत्सव

Roushan.Jha@timesofindia.com

मिश्र बहनों ने कत्थक नृत्य प्रस्तुत किया

■ नई दिल्ली: अखिल भारतीय मिथिला संघ के दो दिवसीय कार्यक्रम का रविवार को मावलंकर हॉल में रंगारंग समापन हुआ। संघ ने अपने इस 58वें आयोजन के दौरान मिथिला की प्रसिद्ध साहित्यकार शेफालिका वर्मा को यात्री सम्मान, व्यवसायी रंजीत झा को योगेंद्र झा सम्मान, साहित्यकार प्रीतम निषाद को बाबू साहेब चौधरी सम्मान और JNU में प्रोफेसर रामनाथ झा को सर गंगानाथ सम्मान से सम्मानित किया। इस दौरान सांसद मनोज तिवारी, विधायक अभय वर्मा और संजीव झा के अलावा पूर्व सांसद महाबल मिश्र विशेष रूप से उपस्थित थे।

साहित्यकार शेफालिका वर्मा को मिला यात्री सम्मान

अध्यक्ष विजयचंद्र झा ने कहा कि मिथिला संघ पिछले 58 साल से लगातार मिथिला और मैथिली के मुद्दों को राष्ट्रीय स्तर पर उठाता रहा है। कार्यक्रम के दौरान सोनी मिश्र और श्रेया मिश्र बहनों ने कत्थक नृत्य प्रस्तुत किया। साथ ही स्नेहा झा, देवानंद झा, रामबाबू झा, सुष्मिता झा, कामिनी झा, क्षितिज मिश्र और रुचि कुमारी ने अपने गीतों से, जबकि विनोद साजन ग्रुप ने मिथिला के पारंपरिक नृत्य प्रस्तुत किया। इस सत्र का संचालन मिथिला के प्रसिद्ध उद्घोषक ब्रजेश पाठक और मनोज पाठक ने किया। परिचर्चा का विषय 'पाठशाला में मैथिली' था। भास्कर ज्योति के संचालन में आयोजित इस परिचर्चा में कैलाश कुमार मिश्र, वंदना झा, रजीव कुमार झा और आनंद दास ने अपने विचार रखे।

बंद पड़ा है ट्रैक, कांगड़ा वैली ट्रेन के लिए प्रदर्शन

■ NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली: हिमाचल की पहाड़ियों और कांगड़ा घाटी की सुंदरता के बीच चलने वाली नैरोगेज रेलगाड़ियां कभी इस क्षेत्र की जीवनरेखा हुआ करती थीं। लेकिन बीते कई सालों से पठानकोट-जोगिंदरनगर रेलमार्ग पर सन्नाटा पसरा हुआ था। इसी मसले पर भारत जोड़ो अभियान के सदस्य पीसी विश्वकर्मा ने प्रदर्शन किया।

पीसी विश्वकर्मा

उन्होंने सबसे पहले महात्मा गांधी की समाधि पर श्रद्धांजलि दी और फिर जंतर-मंतर पर धरना प्रदर्शन शुरू किया। उन्होंने कहा कि रेलवे बोर्ड चार साल में 200 मीटर का क्षतिग्रस्त ट्रैक तक रिपेयर नहीं कर पाया है। इस विरोध प्रदर्शन का असर हुआ। रेलवे के उत्तर भारत महाप्रबंधक अशोक कुमार ने विश्वकर्मा को अपने कार्यालय में बातचीत के लिए आमंत्रित किया। महाप्रबंधक ने वीडियो के माध्यम से दिखाया कि कैसे बरसात में ट्रैक बुरी तरह क्षतिग्रस्त हुआ था और अब पक्की पुल का निर्माण कार्य अंतिम चरण में है। महाप्रबंधक ने भरोसा दिलाया कि जनवरी के अंत तक ट्रेनें बहाल कर दी जाएंगी। विश्वकर्मा ने भी स्पष्ट कर दिया कि अगर जनवरी में ट्रेनें नहीं चली तो फरवरी में आंदोलन और तेज होगा।

गढ़वाल भवन के स्थापना दिवस पर 43 विभूतियों का अभिनंदन

■ NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली: गढ़वाल हितैषिणी सभा ने रविवार शाम (28 दिसंबर) को पंचकुइयां रोड के गढ़वाल भवन में भवन का स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया। इस अवसर पर कई लोगों को अपने कार्यक्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए वीर चंद्र सिंह गढ़वाली 'गढ़ गौरव सम्मान' प्रदान किए गए।

वीर चंद्र सिंह गढ़वाली को 'गढ़ गौरव सम्मान'

सभा के महासचिव पवन कुमार मैठाणी ने इस अवसर पर कहा कि पिछली और आने वाली पीढ़ियों के लिए गढ़वाल भवन एक धरोहर है। यह गढ़ गौरव का प्रतीक है। 28 दिसंबर 1958 के दिन ही टिहरी के महाराजा मानवेन्द्र शाह ने इसकी नींव रखी थी। रविवार को भवन के स्थापना दिवस पर उन्हीं महाराजा की पुत्रवधू और टिहरी सांसद राज्य लक्ष्मी माला शाह ने उपस्थित होकर लोगों को सम्मान प्रदान किए। इस अवसर पर 43 ऐसे लोगों को वीर चंद्र सिंह गढ़वाली गढ़ गौरव सम्मान प्रदान किए गए, जो अपने क्षेत्रों में निष्पक्ष ढंग से कार्य कर रहे हैं। साथ ही सभा के 21 वरिष्ठ सदस्यों को श्रीदेव सुमन वरिष्ठ सदस्य सम्मान दिया गया।

इस अवसर पर 2024 बैच के आईएएस और 98वीं रैंक लेकर सफल हुए ऋषिकेश के प्रद्युम्न बिजल्वाण को भी सम्मानित किया गया। प्रद्युम्न ने बच्चों को ट्यूशन पढ़ाकर अपनी पढ़ाई पूरी की।

इस अवसर पर सभा के अध्यक्ष सूरत सिंह रावत, दिल्ली विधानसभा के डिप्टी स्पीकर मोहन सिंह बिष्ट, पार्षद वीर सिंह पंवार और यशपाल कैंतुरा ने वरिष्ठ सदस्यों का सम्मान किया। मोहन सिंह बिष्ट ने कहा कि समाज को एकजुट रहना होगा, तभी हमारी राजनीतिक ताकत दिखेगी।

इस साल क्या बदलेगा, 26 नामी एक्सपर्ट्स के जवाब

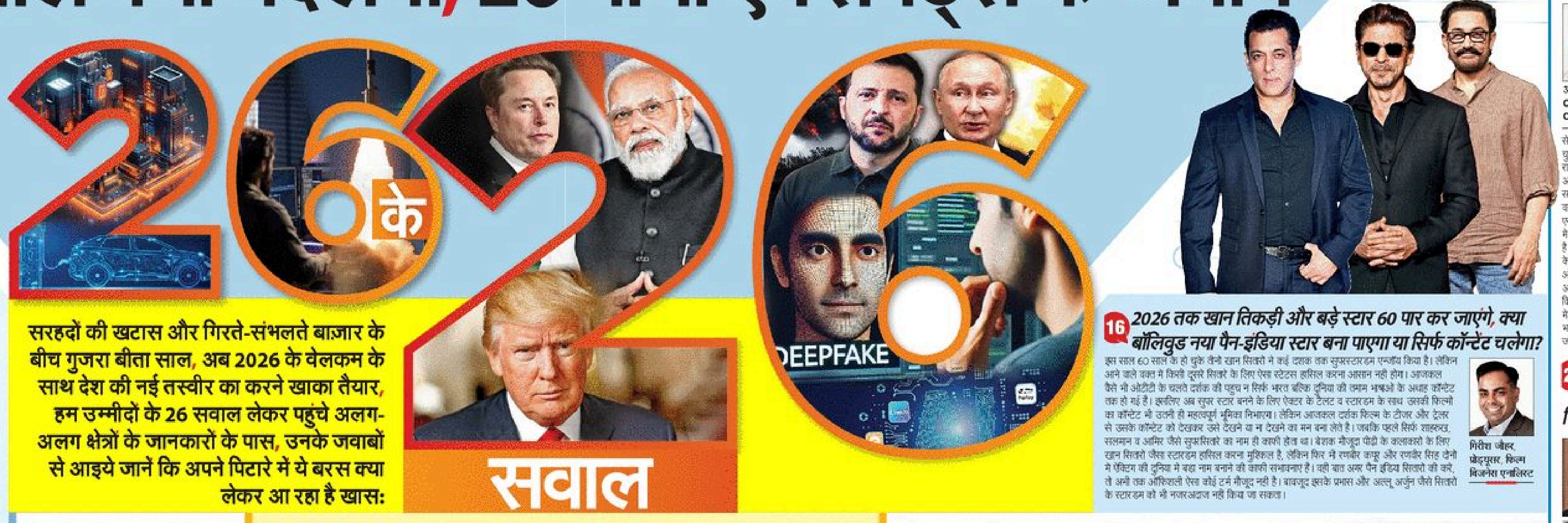

सरहदों की खटास और गिरते-संभलते बाज़ार के बीच गुजरा बीता साल, अब 2026 के वेलकम के साथ देश की नई तस्वीर का करने खाका तैयार, हम उम्मीदों के 26 सवाल लेकर पहुंचे अलग-अलग क्षेत्रों के जानकारों के पास, उनके जवाबों से आइये जानें कि अपने पिटारे में ये बरस क्या लेकर आ रहा है खास:

1 क्या भारत 2026 में ग्लोबल साउथ के देशों की बुलंद आवाज बन पाएगा?

राजीव ... (विदेश मामलों के जानकार)

2 भारत क्या चीन के साथ अपने रिश्तों का कोई स्थायी न्यू नॉर्मल ढूंढ पाएगा?

3 क्या डेटा सुरक्षा कानून लोगों की प्राइवेसी का 'सुरक्षा कवच' बन पाएगा?

4 कई शहरों में पानी खत्म होने का खतरा है। इस पर क्या मास्टर प्लान?

5 रूस-यूक्रेन और मध्य-पूर्व के बाद क्या 2026 में युद्ध साइबर, स्पेस और AI वाला होगा? भारत कितना तैयार है?

6 क्या भारत 2026–27 तक 5 ट्रिलियन डॉलर की इकॉनमी बनेगा? आम लोगों की कमाई तक कितना फायदा पहुंचेगा?

7 क्या 'चाइना प्लस वन' रणनीति का फायदा भारत उठा पाएगा या वियतनाम और मैक्सिको बाजी मार ले जाएंगे?

8 एंटीबायोटिक दवाओं के बेअसर होने का खतरा भारत में अधिक है। क्या इसका तोड़ निकलेगा?

9 क्या BJP बंगाल का किला फतेह करने में कामयाब हो पाएगी? या वहां की सियासत चुनौती बनी रहेगी?

10 क्या प्रदूषण का हल निकलेगा? दिल्लीवाले साफ सांसों की उम्मीद कर सकते हैं?

11 गगनयान मिशन, भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन की तैयारी में 2026 कितना अहम है?

12 जीन थेरेपी, जीन एडिटिंग इतनी सुरक्षित-सस्ती होगी कि दिल की बीमारी-डायबिटीज जैसे रोगों का इलाज बन सके?

13 नई शिक्षा नीति के 6 साल बाद 2026 में क्या रट्टा मारना खत्म कर बच्चों में सोचने की समझ पैदा कर पाएगी?

14 क्या लीग क्रिकेट के असर से टेस्ट-वनडे सिमट जाएंगे और खिलाड़ी सिर्फ फ्रेंचाइजी के होकर रह जाएंगे?

15 ओलिंपिक्स की मेजबानी की दावेदारी भारत पेश करेगा, क्या इन्फ्रास्ट्रक्चर पर्याप्त होगा?

16 2026 तक खान तिकड़ी और बड़े स्टार 60 पार कर जाएंगे, क्या बॉलिवुड नया पैन-इंडिया स्टार बना पाएगा या सिर्फ कॉन्टेंट चलेगा?

17 AI स्क्रिप्ट-म्यूजिक बना सकता है, तो लेखकों-कलाकारों के रोजगार का क्या होगा, क्या सिंथेटिक सिनेमा की ओर जा रहे हैं?

18 इन्फ्लुएंसर्स, यू-ट्यूबर्स फिल्मों में आ रहे हैं, क्या 'एक्टिंग टैलेंट' और 'सोशल मीडिया फॉलोअर्स' के बीच की लाइन मिट जाएगी?

19 जब तापमान 50 डिग्री को छूने लगेगा, तो भारत की श्रम शक्ति की सेहत और क्षमता को बचाने का क्या रास्ता है?

20 क्या भारत अपनी युवा आबादी से दुनिया का HR कैपिटल बन पाएगा?

21 ई-स्पोर्ट्स एशियन गेम्स में इवेंट होगा, क्या भारत गेमिंग को करियर मानेगा?

22 डीपफेक से चुनावों पर क्या असर और इससे निपटने के लिए क्या है हल?

23 AI के दौर में भारतीय युवाओं के लिए रोजगार के नए मौके क्या होंगे?

24 क्या भारत खुद का मजबूत AI इन्फ्रास्ट्रक्चर बना पाएगा या हम डेटा के लिए विदेशी कंपनियों पर ही निर्भर रहेंगे?

25 इलेक्ट्रिक वीकल और चार्जिंग इन्फ्रास्ट्रक्चर में भारत की इस साल कितनी बदलेगी तस्वीर?

26 सोशल मीडिया-डिजिटल लत से गिरती मेंटल हेल्थ से जेनरेशन अल्फा और Gen-Z को बचाने की क्या तैयारी है?

इस साल क्या बदलेगा, 26 नामी एक्सपर्ट्स के जवाब

सरहदों की खटास और गिरते-संभलते बाज़ार के बीच गुजरा बीता साल, अब 2026 के वेलकम के साथ देश की नई तस्वीर का करने खाका तैयार, हम उम्मीदों के 26 सवाल लेकर पहुंचे अलग-अलग क्षेत्रों के जानकारों के पास, उनके जवाबों से आइये जानें कि अपने पिटारे में ये बरस क्या लेकर आ रहा है खास:

1 क्या भारत 2026 में ग्लोबल साउथ के देशों की बुलंद आवाज़ बन पाएगा?

भारत की विदेश नीति ने हमेशा ऐसी राह पकड़ी जो कि ना सिर्फ उसके हितों बल्कि दूसरे विकासशील देशों की साझा प्राथमिकताओं को भी रेखांकित करती रही है। अतीत में गुटनिरपेक्ष आंदोलन से लेकर 77 समूह में हमारी भागीदारी इसकी गवाह रही है। भारत उपनिवेशवाद से पीड़ित रहा है और दूसरे ऐसे विकासशील देशों के संघर्षों को समझता है। इसीलिए हम किसी पर अपनी नीतियां थोपते नहीं हैं। ग्लोबल साउथ के देशों से भारत हमेशा यही कहता है कि वो अपनी प्राथमिकताएं तय करें। भारत एक मददगार साथी की तरह अपने अनुभव और विशेषज्ञता उनके साथ साझा करेगा। यही वजह है ग्लोबल साउथ के देश भारत के साथ बहुत सहज महसूस करते हैं। लेकिन, भारत कभी भी खुद को ग्लोबल साउथ का लीडर नहीं कहता है। हम विभिन्न मंचों के जरिए ग्लोबल साउथ की आवाज को आगे रखते हैं और दूसरे देशों को भी अपनी आवाज रखने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। हम न कोई ध्रुव हैं न किसी किस्म के मोहरे, बल्कि यह एक साझा रिश्ता है। जो हमारे साथ और हम उनके साथ सहज साझा प्राथमिकताओं के साथ आगे बढ़ रहे हैं।

शशांक, इंटरनैशनल मामलों के जानकार

2 भारत क्या चीन के साथ अपने रिश्तों का कोई स्थायी न्यू नॉर्मल ढूंढ पाएगा?

3 क्या डेटा सुरक्षा कानून लोगों की प्राइवेसी का 'सुरक्षा कवच' बन पाएगा?

4 कई शहरों में पानी खत्म होने का खतरा है। इस पर क्या मास्टर प्लान?

5 रूस-यूक्रेन और मध्य-पूर्व के बाद क्या 2026 में युद्ध साइबर, स्पेस और AI वाला होगा? भारत कितना तैयार है?

6 क्या भारत 2026–27 तक 5 ट्रिलियन डॉलर की इकॉनमी बनेगा? आम लोगों की कमाई तक कितना फायदा पहुंचेगा?

7 क्या 'चाइना प्लस वन' रणनीति का फायदा भारत उठा पाएगा या वियतनाम और मैक्सिको बाज़ी मार ले जाएंगे?

8 एंटीबायोटिक दवाओं के बेअसर होने का खतरा भारत में अधिक है। क्या इसका तोड़ निकलेगा?

9 क्या BJP बंगाल का किला फतेह करने में कामयाब हो पाएगी? या वहां की सियासत चुनौती बनी रहेगी?

10 क्या प्रदूषण का हल निकलेगा? दिल्लीवाले साफ सांसों की उम्मीद कर सकते हैं?

11 गगनयान मिशन, भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन की तैयारी में 2026 कितना अहम है?

12 जीन थेरेपी, जीन एडिटिंग इतनी सुरक्षित-सस्ती होगी कि दिल की बीमारी-डायबिटीज जैसे रोगों का इलाज बन सके?

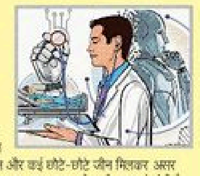

13 नई शिक्षा नीति के 6 साल बाद 2026 में क्या रट्टा मारना खत्म कर बच्चों में सोचने की समझ पैदा कर पाएगी?

14 क्या लीग क्रिकेट के असर से टेस्ट-वनडे सिमट जाएंगे और खिलाड़ी सिर्फ फ्रेंचाइजी के होकर रह जाएंगे?

15 ओलिंपिक्स की मेजबानी की दावेदारी भारत पेश करेगा, क्या इन्फ्रास्ट्रक्चर पर्याप्त होगा?

16 2026 तक खान तिकड़ी और बड़े स्टार 60 पार कर जाएंगे, क्या बॉलिवुड नया पैन-इंडिया स्टार बना पाएगा या सिर्फ कॉन्टेंट चलेगा?

इस साल 60 साल के हो चुके तीनों खान सितारों ने कई दशक तक सुपरस्टारडम एन्जॉय किया है। लेकिन आने वाले वक्त में किसी दूसरे सितारे के लिए ऐसा स्टेटस हासिल करना आसान नहीं होगा। आजकल वैसे भी ओटीटी के चलते दर्शक की पहुंच न सिर्फ भारत बल्कि दुनिया की तमाम भाषाओं के अच्छे कॉन्टेंट तक हो गई है। इसलिए अब सुपर स्टार बनने के लिए ऐक्टर के टैलंट व स्टारडम के साथ उसकी फिल्मों का कॉन्टेंट भी उतनी ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। लेकिन आजकल दर्शक फिल्म के टीजर और ट्रेलर से उसके कॉन्टेंट को देखकर उसे देखने या न देखने का मन बना लेते हैं। जबकि पहले सिर्फ शाहरुख, सलमान व आमिर जैसे सुपरसितारे का नाम ही काफी होता था। बेशक मौजूदा पीढ़ी के कलाकारों के लिए खान सितारों जैसा स्टारडम हासिल करना मुश्किल है, लेकिन फिर भी रणबीर कपूर और रणवीर सिंह दोनों में ऐक्टिंग की दुनिया में बड़ा नाम बनाने की काफी संभावनाएं हैं। वहीं बात अगर पैन इंडिया सितारों की करें, तो अभी तक ऑफिशली ऐसा कोई टर्म मौजूद नहीं है। बावजूद इसके प्रभास और अल्लू अर्जुन जैसे सितारों के स्टारडम को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

गिरीश जौहर, प्रोड्यूसर, फिल्म बिजनेस एनालिस्ट

17 AI स्क्रिप्ट-म्यूजिक बना सकता है, तो लेखकों-कलाकारों के रोजगार का क्या होगा, क्या सिंथेटिक सिनेमा की ओर जा रहे हैं?

AI बेशक स्क्रिप्ट लिख सकता है, म्यूजिक बना सकता है, मगर क्या वह एक इंसान की तरह लिख सकता है? उसकी तरह सोच सकता है? क्या एआई इंसानी दिमाग की तरह हो सकता है, जिसमें यादाश्त हो, भावनाएं हो कि एक इंसान को कब रोना आता है, कब हंसना आता है, वह किस सिचुएशन में किस तरह रिएक्ट करता है? अगर हां, तब तो राइटर्स ही नहीं, सभी को डरने की जरूरत है, क्योंकि हम सब घर पर बैठ जाएंगे, लेकिन मुझे नहीं लगता कि एआई उस स्तर तक पहुंच सकता है। हालांकि एआई लेखन के कुछ फॉर्मेट में इंसान को रिप्लेस कर सकता है। जैसे लेटर्स, ई-मेल या कोई टैंपलेट बेस्ड राइटिंग, जहां आपको एक ही चीज बार-बार चाहिए, तो वहां आप एक कोड भर दें, तो एआई वो काम कर देगा। ऐसे में, इस तरह के काम करने वालों की नौकरियां एआई खा सकता है। इसके अलावा, आप एक फॉर्मेट भर दें कि ऐसी फिल्में जो पहले लिखी गई हैं, वैसी एक फिल्म लिखिए तो वो शायद एआई लिख सकता है, मगर मेरे हिसाब से वो बहुत औसत काम होगा, क्योंकि वो पहले से मौजूद कामों का ही एक घालमेल होगा। अगर आपको कुछ नया रचना है, अलग करना है, तो चलने-फिरने, सोचने वाले इंसान की ही जरूरत पड़ेगी।

कनिका ढिल्लन, राइटर-प्रड्यूसर

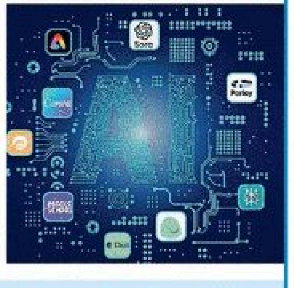

18 इन्फ्लुएंसर्स, यू-ट्यूबर्स फिल्मों में आ रहे हैं, क्या 'एक्टिंग टैलेंट' और 'सोशल मीडिया फॉलोअर्स' के बीच की लाइन मिट जाएगी?

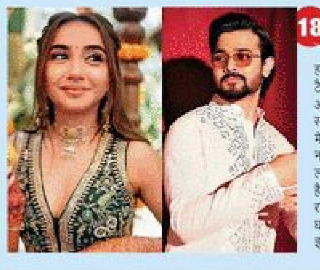

हर किसी का मकसद आखिरकार ऐक्टिंग और बड़े पर्दे तक पहुंचना ही होता है। पहले लोग नाटक, टैलंट हंट या ऐक्टिंग इंस्टिट्यूट के जरिए अभिनय की दुनिया में कदम रखते थे। फिर टेलिविजन आया, जिसने कलाकारों को एक नया मंच दिया। उसके बाद ओटीटी प्लैटफॉर्म्स आए और अब सोशल मीडिया और यूट्यूब इन्फ्लुएंसर बनकर आगे बढ़ने का रास्ता खुल गया है। आज कोई मेरठ में है, कोई बरेली में। हर किसी के लिए मुंबई आकर स्ट्रगल करना और महंगे खर्च उठाना संभव ...

19 जब तापमान 50 डिग्री को छूने लगेगा, तो भारत की श्रम शक्ति की सेहत और क्षमता को बचाने का क्या रास्ता है?

20 क्या भारत अपनी युवा आबादी से दुनिया का HR कैपिटल बन पाएगा?

21 ई-स्पोर्ट्स एशियन गेम्स में इवेंट होगा, क्या भारत गेमिंग को करियर मानेगा?

... वह हकदार था। देश भर में युवा खिलाड़ी, क्रिएटर, एनालिस्ट, प्रोड्यूसर, डिजाइनर और उद्यमी के रूप में गंभीर और भविष्य के लिए तैयार करियर बढ़ रहे हैं। ब्रैंड्स और मुख्यधारा की आवाजों ने ई-स्पोर्ट्स के प्रभाव को पहचाना है। जैसे-जैसे हम 2026 की ओर बढ़ रहे हैं, सवाल अब स्वीकार्यता का नहीं रहा। असली प्रश्न यह है कि हम अपने इन्फ्रास्ट्रक्चर को कितनी तेजी से उन्नत कर सकते हैं और मजबूत मेंटरशिप रास्ते कैसे विकसित कर सकते हैं, ताकि भारतीय चैंपियनों की अगली पीढ़ी को तैयार किया जा सके।

22 डीपफेक से चुनावों पर क्या असर और इससे निपटने के लिए क्या है हल?

पहले लोग सोचते थे, 'अगर दिख रहा है तो सच होगा।' अब हमें सीखना होगा, 'पहले जांच करो, फिर भरोसा करो।' क्योंकि डीपफेक में सच-झूठ में फर्क करना मुश्किल है। चुनाव के समय यह बहुत जरूरी हो जाता है, क्योंकि एक झूठी तस्वीर या विडियो लोगों की सोच को जल्दी बदल सकता है। असली समाधान है यह जानना कि कोई फोटो या विडियो कहां से आया है। इसके लिए नई तकनीक आ रही है, जिसमें फोटो और विडियो के साथ खास डिजिटल जानकारी जुड़ी होती है। ...

कुलवंत नागी, AI कंटेंट एक्सपर्ट

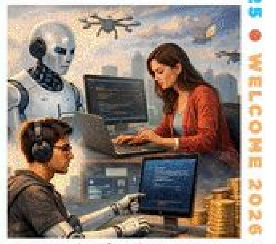

23 AI के दौर में भारतीय युवाओं के लिए रोजगार के नए मौके क्या होंगे?

24 क्या भारत खुद का मजबूत AI इन्फ्रास्ट्रक्चर बना पाएगा या हम डेटा के लिए विदेशी कंपनियों पर ही निर्भर रहेंगे?

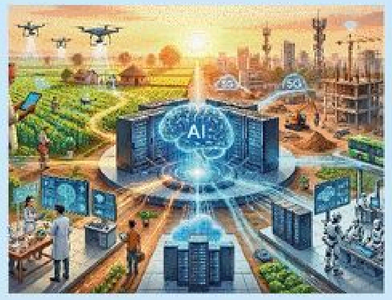

25 इलेक्ट्रिक वीकल और चार्जिंग इन्फ्रास्ट्रक्चर में भारत की इस साल कितनी बदलेगी तस्वीर?

26 सोशल मीडिया-डिजिटल लत से गिरती मेंटल हेल्थ से जेनरेशन अल्फा और Gen-Z को बचाने की क्या तैयारी है?

नवभारत टाइम्स • विचार

नवभारत टाइम्स । नई दिल्ली/एनसीआर । सोमवार, 29 दिसंबर 2025

कहीं भी होने वाला अन्याय, हर जगह न्याय के लिए ख़तरा होता है।
- मार्टिन लूथर किंग जूनियर

नया क़ानून चाहिए

'मैं भारतीय हूं'... देहरादून में दम तोड़ने वाले त्रिपुरा के एंजेल चकमा के ये आखिरी शब्द हर भारतीय को झकझोरने वाले होने चाहिए। अपनी पहचान से संघर्ष करते हुए एक युवा को जान देनी पड़ी। यह शर्मनाक है कि देश के भीतर देश के ही कुछ हिस्सों के लोगों की भारतीयता पर बार-बार सवाल उठाए जाते हैं।

आपत्तिजनक कमेंट । 24 साल के एंजेल पिछले एक साल से देहरादून में रहकर MBA की पढ़ाई कर रहे थे। 9 दिसंबर को वह अपने भाई माइकल के साथ कुछ सामान लेने निकले थे, जब कुछ लड़कों ने उन पर आपत्तिजनक कमेंट्स किए। एंजेल ने जब विरोध किया कि 'हम चीनी नहीं हैं', तो आरोपियों ने चाकू से हमला कर दिया। इस शुक्रवार को एंजेल ने दम तोड़ दिया, जबकि माइकल की हालत गंभीर है। 6 में से 5 आरोपी अरेस्ट हो चुके हैं।

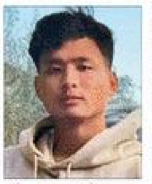
एंजेल चकमा की हत्या

नस्लीय सोच । इस घटना से त्रिपुरा और पूर्वोत्तर के दूसरे राज्यों में जबरदस्त गुस्सा है, और यह जायज भी है। अमेरिका, यूरोप या ऑस्ट्रेलिया में भारतीयों के खिलाफ नस्लभेदी अपराध होने पर जो देश विरोध जताता है, उसके भीतर ही कुछ तबकों में इतनी गहरी और खतरनाक नस्लीय सोच मौजूद है। इनके निशाने पर बार-बार पूर्वोत्तर के लोग आते हैं।

देश में मुश्किल । इंडियन काउंसिल ऑफ सोशल साइंस रिसर्च (ICSSR) ने 2021 में एक स्टडी के नतीजे जारी किए थे। तब सर्वे में शामिल पूर्वोत्तर के 78% लोगों का मानना था कि उन्हें उनके चेहरे-मोहरे के कारण निशाना बनाया जाता है। यह बताता है कि लोगों में अपने ही देश के बारे में कितनी कम जागरूकता है। दूसरी बात, पूर्वोत्तर के लोगों को देश के कई हिस्सों में कितनी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है।

नस्लभेदी कानून । ऐसी हर घटना के बाद कड़ी कार्रवाई की बात की जाती है, लेकिन सवाल है कि क्या उनसे कोई सबक लिया जा रहा? 2014 में दिल्ली में अरुणाचल के छात्र Nido Tania को इतना पीटा गया कि उसकी मौत हो गई - वहां से अभी तक, क्या कोई बदलाव आया है? एंजेल की मौत के बाद कई संगठनों ने नस्लवाद विरोधी कानून की मांग की है, जो बिल्कुल सही है।

सख्ती जरूरी । नस्लवाद देश की एकता और अखंडता के लिए खतरनाक है। इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि जब भी भारत के किसी शहर में किसी एंजेल के साथ भेदभाव किया जाता है, तो उससे एक बड़े वर्ग की भावनाओं को चोट पहुंचती है। देश को ऐसा कानून चाहिए, जो इन मामलों में आरोपियों के प्रति सख्ती और पीड़ितों के प्रति संवेदनशीलता दिखाए।

नश्तर

गमलाधर और पागल

अदब, नफासत और नवाबों का शहर लखनऊ इन दिनों गमलों के लिए चर्चा में है। कुछ रोज पहले प्रधानमंत्री शहर आए थे तो विकास प्राधिकरण ने सजावट के लिए गमले रखवा दिए। प्रधानमंत्री गए तो शहर के लोग गमलों पर झपट पड़े और कार, स्कूटी, मोटरसाइकल में रखकर अपने घर ले जाने लगे।

सौरभ श्रीवास्तव

बसंत कुंज इलाके में जब लोग गमले ले जा रहे थे तो मैं भी वहां खड़ा गुस्सा रहा था। मैं मन ही मन इसे चोरी का दर्जा देने ही वाला था कि माल्या, नीरव और मेहुल जैसे देवों ने मुझे रोक लिया। उन्होंने मुझे रोका तो मैंने भी एक गमलाधर को रोक लिया। उसकी जैकेट पर चे-ग्वेरा की तस्वीर थी और स्कूटी के फुट रेस्ट पर तीन गमले। 'चे को मानते हो और चोरी कर रहे हो?' गमलाधर ने पहले अपनी मुस्कुराहट से मुझे मूर्ख तो कह ही दिया, फिर शब्दों में बोला, 'चोरी कहां? यह तो क्रांति है। रेलिंग के गैप से देखिए। शहर की गंदगी नजर आती है। इसे छुपाने के लिए गमले लटका दिए गए। गमले ले जाकर मैं तो असली तस्वीर सामने ला रहा हूं।' उसके इस तर्क से मैं बैकफुट पर आ गया। थोड़ी देर में खुद को संभाला और दूसरे बाइक सवार को रोका। उसके गले में गमछा और आंखों पर काला चश्मा था। बाइक पर पीछे बैठे उसके साथी ने दोनों रानों पर दो-दो गमले टिका रखे थे।

'भाई, गमले चुराकर क्यों अपने शहर को बदनाम कर रहे हो?' गमछे वाले ने स्टाइल से चश्मा उतारा और लगभग सीनाजोरी करते हुए बोला, 'चोरी कैसी...सरकार ने हमारे टैक्स के पैसे से ही तो गमले लगाए हैं, इसलिए हम ले जा रहे।' मेरे पास इस बात का भी कोई जवाब नहीं था। वह फुर्र हो गया। मैं हताश होकर सिर झुकाकर फुटपाथ पर बैठ गया। बगल में बैठे एक पागल ने चिल्लाते हुए कहा, 'स्कूटी और बाइक वाले मौसेरे भाई थे... अभी ट्रेनिंग पर हैं।' यह बात मुझे समझ नहीं आई, पर पागल की बात को क्यों ही समझना।

एकदा — संकलन : हरिप्रसाद राय

दहेज के विरुद्ध

पिता के निधन के बाद परिवार की जिम्मेदारी दोनों भाइयों के कंधों पर आ गई थी। कुछ ही समय बीता था कि मां भी चल बसीं। बड़े भाई की बेटी विवाह योग्य हो चुकी थी। तब कायस्थ परिवारों में लड़कियों की शादी 14-15 वर्ष की उम्र में कर दी जाती थी। बड़े भाई अध्यापक थे, लेकिन उनकी आमदनी इतनी ही थी कि घर का खर्च किसी तरह चल सके। छोटे भाई को मुजफ्फरपुर में प्रोफेसरी मिल गई थी, पर नौकरी को अभी तीन महीने ही हुए थे। जमींदारी से खाने-रहने की सुविधा भले ठीक-ठाक थी, पर नकद धन का अभाव था। इधर बेटी की शादी तय हो चुकी थी। तिलक और दहेज की मोटी रकम का सवाल सामने था। हालांकि जिस लड़के से विवाह तय हुआ था, उसके बड़े भाई कलकत्ता में दोनों भाइयों के साथ पढ़ चुके थे। आखिरकार कर्ज लेकर दहेज की मांग पूरी की गई। दहेज का यह बोझ उठाने वाले बड़े भाई का नाम था महेंद्र प्रसाद और छोटे भाई थे राजेंद्र प्रसाद, जो आगे चलकर देश के पहले राष्ट्रपति बने। इस कर्ज की पीड़ा राजेंद्र प्रसाद को जीवन भर सालती रही। उन्होंने इसे अपनी आत्मकथा में भी दर्ज किया है। आगे चलकर उन्होंने दहेज प्रथा के विरुद्ध सक्रिय अभियान चलाया। उन्होंने एक ऐसे शपथ-पत्र पर हस्ताक्षर किए, जिसमें 51 रुपये से अधिक दहेज न लेने की प्रतिज्ञा थी।

विदेशी संस्थागत निवेशकों के पैसा निकालने पर भी डटा रहा भारतीय बाज़ार

शेयर बाज़ार को संभालने आए देसी

भारतीय शेयर बाजार 2025 में कैसा रहा, इसे समझने के लिए सेंसेक्स और निफ्टी के आंकड़ों के बाहर भी देखना पड़ेगा। इस साल निवेशकों का व्यवहार विभिन्न वर्गों में साफ तौर पर बंटा रहा। विदेशी संस्थागत निवेशक (FIIs) लगातार बिकवाली करते रहे, जबकि घरेलू संस्थागत निवेशकों (DIIs) ने जमकर खरीदारी की।

समीर रस्तोगी

MF का सहारा । इस साल सबसे ज्यादा शोर विदेशी निवेशकों के भारतीय बाजार से बाहर निकलने पर मचा। उनकी पसंद अमेरिका, चीन, जापान और दूसरे देश थे। उन्होंने लगातार पैसा निकाला। यानी वे भारतीय बाजार में ऊंचे वैल्यूएशन से असहज थे। FIIs ने पूरे साल में करीब 1.80 लाख करोड़ के शेयर बेचे। बाजार को अगर MF का सहारा नहीं मिला होता, बड़ी उथल-पुथल देखने को मिलती। ।

बदलती तस्वीर । 2025 में सबसे बड़ा स्ट्रक्चरल बदलाव यह देखने को मिला कि NSE में सूचीबद्ध कंपनियों में हिस्सेदारी के मामले में घरेलू संस्थागत निवेशकों ने विदेशी संस्थागत निवेशकों को पीछे छोड़ दिया। यह एक ऐतिहासिक घटना है, जो भारतीय निवेशकों के आत्मविश्वास को दिखाती है।

बाजार का मूड बदला
- SIP से हर माह आ रहे 29 हजार करोड़ रुपये
- NSE कंपनियों में DIIs की हिस्सेदारी बढ़ी
- लंबी अवधि के निवेश में बढ़ी लोगों की रुचि

10 साल पहले FIIs की हिस्सेदारी 21% और DIIs की 11% थी। मार्च 2025 में FIIs का प्रतिशत घटकर 17.50 रह गया है, जबकि DIIs का बढ़कर 18.10% पर। घरेलू संस्थागत निवेशक अब ऐसी स्थिति में हैं, जहां उन्हें नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

कमजोर और मजबूत । हर 3 से 5 साल में बाजार की चाल बदलती है और एक नया चक्र शुरू होता है। हर बार जब ऐसा होता है, तो रिटेल ट्रेडर्स का एक बड़ा हिस्सा मोमेंटम के जाल में फंस जाता है। 2025 में भी ऐसा ही हुआ। मीडिया, रियल्टी, रेलवे, इंफ्रास्ट्रक्चर और एनर्जी से जुड़े शेयरों का प्रदर्शन कमजोर रहा। इसके उलट, जो सेक्टर पहले पिछड़े माने जाते थे, उन्होंने अच्छा प्रदर्शन किया - जैसे फाइनैंशल सर्विसेज, मेटल्स और ऑटो।

रेलवे में नुकसान । 2025 में रेलवे से जुड़े शेयरों की वैल्यू लगभग 1.32 लाख करोड़ रुपये घटी। साल 2024 में IRFC रिटेल इन्वेस्टर्स का चहेता था, लेकिन 2025 में यह 17% नीचे गया। इसी तरह से एनर्जी सेक्टर के शेयर भी नीचे आए। Suzlon में 16% और रिलायंस पावर में 14% की गिरावट आई।

2025 के हीरो

घाटे का इंतजार । 2025 में 120 से ज्यादा स्टॉक ऐसे रहे, जिनमें 25% से अधिक की गिरावट आई। अगर हम ऐसे स्टॉक्स के 2024 और 2025 के खरीदने-बेचने से जुड़े आंकड़ों पर नजर दौड़ाएं तो पता चलता है कि बहुत थोड़े निवेशक सही समय पर मार्केट से निकल पाए। जिन्होंने 2024 में तब पैसा लगाया था, जब शेयर की कीमत ऊंची थी, उनमें से ज्यादातर इसी इंतजार में हैं कि बेचने का सही समय कब आएगा।

गोल्ड की चांदी । 2025 ने निवेशकों का व्यवहार बदल दिया। स्मॉल कैप स्टॉक्स के बारे में अभी तक माना जाता था कि इसमें तो मुनाफा होना ही है, रिस्क बहुत कम है। लेकिन, उसका यह रुतबा छिन चुका है। जिन स्टॉक्स में बड़े करेक्शन देखने को मिले, उनमें से ज्यादातर स्मॉल और माइक्रो कैप हैं। तो निवेशकों ने यह सीखा कि मार्केट में धारणाओं के आधार पर नहीं उतरते। फिर, इस समय सिल्वर और गोल्ड के दाम में आश्चर्यजनक तेजी देखने को मिल रही है। इस वजह से लोग धड़ाधड़ पैसा लगा रहे हैं इन दोनों में। अधिकतर निवेशक यही मान रहे हैं कि इससे भविष्य में मुनाफा होना तय है।

सबसे बड़ी जीत । अतीत की तुलना में इस बार रिटेल इन्वेस्टर्स ने जबरदस्त धैर्य और साहस दिखाया। साल के शुरुआती तीन महीने अस्थिरता वाले थे। कई स्टॉक में 30 से 50% की गिरावट आई, लेकिन वे इन शेयरों में बने रहे। SIP से आंकड़े बता रहे हैं कि लंबी अवधि के निवेश का ट्रेंड बढ़ रहा है। 2025 का संदेश यही रहा कि भारतीय बाजार को दौड़ने के लिए अब विदेशी पूंजी की जरूरत नहीं है।

(लेखक सक्षम वेल्थ प्राइवेट लिमिटेड के डायरेक्टर हैं)

नए साल के स्वागत से पहले पुराने की विदाई

भारतीय परंपरा है कि जो चला गया, उसके बारे में बुरा नहीं बोलते। उसके रहते भले कभी न बनी हो, लेकिन जब वह गया, तो बात गई। जो बीता सो भला, भले वह साल ही क्यों न हो। वैसे भी जो साल पूरे सालभर खुद को खपा देता है हमारे लिए, उसकी बुराई बनती नहीं। विदाई मुस्कान के साथ दी जाए, तो जाने वाले का सफर अच्छा रहता है और विदा करने वाले के दिल पर भी बोझ नहीं बचता।

नए साल को आने में अब पूरे तीन दिन भी नहीं बचे हैं। हालांकि उसका शोर पहले ही आ चुका है। 2026 का आगाज कैसे करना है, इसकी तैयारी चल रही है। आपने भी कुछ न कुछ प्लान किया होगा जरूर। लेकिन, इस तैयारी में थोड़ी फुरसत निकालिए 2025 के लिए भी।

पुराना साल बस कैलेंडर नहीं, जिसके सारे पन्ने पलटे जा चुके हैं - यह जीवन का एक चैप्टर है, जो अपने साथ हमारा एक हिस्सा भी ले जा रहा। इसमें उम्मीदें हैं, निराशा है, हार है, जीत है। कुछ अपेक्षाएं, जो पूरी हो गईं और कई ख्वाहिशें जो अधूरी छूट गईं। जो मिला वह आने वाले साल को और खूबसूरत बनाएगा और जो बचा रह गया, उसे पाने का संघर्ष फिर शुरू होगा।

अगर इन सब यादों को बिना देखे, बिना समेटे आगे बढ़ गए तो अपने अनुभवों से मुंह मोड़ना होगा यह। प्रसिद्ध लेखक पाउलो कोएल्हो के मुताबिक, यदि आप अलविदा कहने का साहस रखते हैं, तो जीवन आपको एक नए स्वागत से पुरस्कृत करेगा। यह साहस चाहिए स्वीकार करने के लिए, कि जो हुआ, अच्छा हुआ। पुराना भी कभी नया था, तब उसके लिए भी तैयारियां की जा रही थीं। वक्त ने उससे उसकी चमक छीनी, पर बदले में उसे पहले से ज्यादा काबिल बनाया।

AI Image

जीवन आनंद
शैलेंद्र पांडेय

2025 कुछ लेकर नहीं, बहुत कुछ देकर जा रहा है। उसने हमारे लिए हर दिन को बेहतर बनाने की कोशिश की। इसमें कुछ दिन अच्छे नहीं भी बने, लेकिन साल कहीं रुका नहीं और न उसकी कोशिशें रुकीं। हर मुश्किल ने थोड़ा मजबूत बनाया और खुशियों ने संयम सिखाया।

उत्तरी अमेरिका की Anishinaabe और Lakota जैसी मूल जनजातियों में गुडबाय कहने की परंपरा नहीं है। वहां विदा होते हुए भी कहा जाता है - फिर मिलेंगे। मान्यता है कि बिछड़ना अंतिम नहीं होता - आत्मा और मन के स्तर पर जुड़ाव बना रहता है हमेशा। पुराने साल से 'फिर मिलेंगे' तो कहना बेकार है, लेकिन अब इससे सदा के लिए कनेक्शन जुड़ चुका है। हमारी कोई भी कहानी अधूरी रहेगी इसके बिना।

THE SPEAKING TREE
और पढ़ने के लिए देखें
www.speakingtree.nbt.in

ईश्वर ने गणित की भाषा में लिखी ब्रह्मांड की कहानी

मयंक मुरारी

वर्ष 2025 बीतने की दहलीज पर है। इस मौके पर समय को गणित के रूप में देखा जा सकता है। समय स्वयं एक प्रवाह है, जो सेकंड, मिनट, वर्ष और युगों में मापा जाता है। लेकिन इसके पीछे भी वही गणितीय अनुशासन है, जो ब्रह्मांड को संचालित करता है।

वैदिक गणित इसी सोच को आगे बढ़ाता है। उसके अनुसार वैदिक सूत्र मात्र गणना के शॉर्टकट नहीं, बल्कि चेतना को जाग्रत करने वाले ज्ञान-स्रोत हैं। ये सूत्र मन की शक्तियों- एकाग्रता, आत्मविश्वास और अंतर्ज्ञान को विकसित करते हैं। यहां गणित एक सहज और दिव्य प्रक्रिया बन जाता है, जहां शून्य को अनंत शक्ति और एक को परम सत्य के रूप में देखा जाता है। शून्य और एक का यह मिलन अनंत संभावनाओं का प्रतीक है, ठीक वैसे ही जैसे हर बीतता वर्ष नए आरंभ का संकेत देता है।

AI Image

गणित और देवत्व के संबंध को समझने वालों का मानना है कि गणित वह भाषा है, जिसमें ईश्वर ने ब्रह्मांड को लिखा है। यहां ईश्वर कोई अलग सत्ता नहीं, बल्कि संपूर्ण अस्तित्व में व्याप्त चेतना है। हर परमाणु में देवत्व गतिशील है। जब पूरा अस्तित्व लय में आता है, तो वह ईश्वर का नृत्य बन जाता है और हम उसके सहभागी हो जाते हैं।

हार्वर्ड विश्वविद्यालय से जुड़े डॉ. विली सून का 'फाइन-ट्यूनिंग' तर्क इस रहस्य को और गहरा करता है। ब्रह्मांड के मूलभूत भौतिक नियम और स्थिरांक (constants) इतने सटीक मानों पर हैं कि उनमें जरा-सा भी परिवर्तन होता, तो तारे नहीं बनते, परमाणु स्थिर नहीं रहते, जीवन की संभावना ही समाप्त हो जाती। उनके अनुसार ब्रह्मांड के भौतिक नियम इतने सटीक संतुलन में हैं कि इसे केवल संयोग नहीं कहा जा सकता।

इलेक्ट्रॉन से लेकर आकाशगंगाओं तक की गणितीय गति को देखते हुए यह विश्वास और गहराता है कि ईश्वर स्वयं को गणित के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। भारतीय सभ्यता की विशेषता भी गणितीय चिंतन की गहराई में मौजूद है।

कांटे की बात

> जो कहते हैं कांग्रेस खत्म हो गई है, मैं उन्हें बताना चाहता हूं कि हमारे पास सत्ता कम हो सकती है, लेकिन हमारी रीढ़ अभी भी सीधी है। हमने न संविधान से समझौता किया, न धर्मनिरपेक्षता से और न ही गरीबों के हक से।

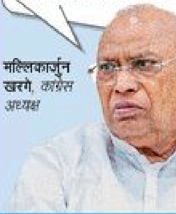
मल्लिकार्जुन खरगे, *कांग्रेस अध्यक्ष*

लाल गलियारा नहीं, बस छोटी-सी लकीर बची

बसवराजू, हिडमा और साल बीतने के पहले पकास हनुमंथु - सुरक्षाबलों ने 2025 में नक्सलियों की टॉप लीडरशिप को लगभग खत्म कर दिया है। ऑपरेशन ब्लैक फॉरेस्ट जैसे अभियानों की वजह से लाल गलियारा सिमट चुका है।

डेटा Window

- **323+** नक्सली मारे गए साल 2025 में
- **862+** गिरफ्तारियां हुईं, 2000+ सरेंडर
- **258** सरेंडर अक्टूबर के 2 दिन में हुए
- **27** नक्सली ढेर ऑपरेशन ब्लैक फॉरेस्ट में

- 11 जिलों में नक्सलवाद बचा है अब, 2014 में 126 जिले प्रभावित थे
- 3 जिले नक्सलवाद से अति प्रभावित, एक दशक पहले 36 था आंकड़ा

बीजापुर, नारायणपुर और सुकमा हैं नक्सलवाद से सबसे ज्यादा प्रभावित। तीनों छत्तीसगढ़ में। अबूझमाड़ और उत्तर बस्तर इस साल मुक्त हुए।

दशक दर दशक बदलाव
- **53%** कमी आई है नक्सली हिंसा में
- **70%** गिरावट आम लोगों की मौत में
- **73%** कमी सुरक्षाबलों की मौत में

2004 से 2014 के बीच : 16,463 नक्सली वारदात हुईं, 1,851 सुरक्षाकर्मी और 4,766 आम लोग मारे गए।
2014-2024 के दौरान : 7,744 नक्सली घटनाएं घटीं, 509 जवानों और 1,495 आम लोगों की मौत हुई।

जनता जंक्शन — इरफान

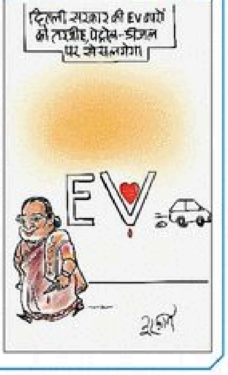

टैरिफ़ पर अडिग, आतंक पर सख़्त रहे मोदी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लिए यह साल सबसे व्यस्त और सबसे अहम रहा। उन्होंने अफ्रीका, पश्चिम एशिया और यूरोप के 23 देशों तक पहुंच बनाई। कूटनीतिक, आर्थिक और रणनीतिक संबंध मजबूत किए। मालदीव और अन्य वैश्विक सहयोगियों के साथ संबंधों को प्रगाढ़ किया। खासकर, ब्रिटेन और यूरोपीय संघ के साथ विविधीकृत रणनीतिक साझेदारियों के जरिये इसे पूरा किया। भारत और चीन के बीच भी संबंध स्थिर हुए।

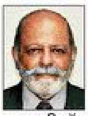
सुजान चिनॉय

ट्रंप टैरिफ पर अडिग । वैश्विक व्यापार में अस्थिरता के बीच पीएम मोदी का अंतरराष्ट्रीय कद काफी बढ़ गया। अमेरिका के राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप के टैरिफ युद्ध के सामने अन्य देश झुक गए, मगर मोदी का संकल्प अटल रहा। भारतीय किसानों और छोटे कारोबारियों के बुनियादी हितों की रक्षा कर उनके राष्ट्र प्रथम नजरिये ने बता दिया कि भारत को असमान व्यापार व्यवस्था स्वीकार करने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता।

तेजी से बढ़ी अर्थव्यवस्था । वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए GDP वृद्धि दर करीब 7.3% होने के अनुमान के साथ, दूसरी तिमाही में 8.2% की वास्तविक वृद्धि से भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक बना है। GST दरों में कमी, उपभोक्ताओं की बढ़ती मांग, औद्योगिक और विनिर्माण प्रोत्साहन के जरिये अर्थव्यवस्था को गति मिली। इस साल डिजिटल बुनियादी ढांचे, सेमीकंडक्टर, आर्टिफिशल इंटेलिजेंस जैसे क्षेत्र तेजी से उभरे। शांति विधेयक, 2025 ने ऐतिहासिक सुधार को दर्शाया।

ब्रिक्स में आतंक की निंदा । अप्रैल में पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद भारत ने ऑपरेशन सिंदूर शुरू किया। पाकिस्तान के साथ सिंधु जल संधि को निलंबित किया। पीएम मोदी का यह कहना कि खून और पानी एक साथ नहीं बह सकता, आतंकवाद के खिलाफ भारत के शून्य सहिष्णु सिद्धांत को दर्शाता है। जुलाई में ब्रिक्स सम्मेलन में पहली बार जम्मू-कश्मीर में आतंकवादी हमले की निंदा की गई। SCO शिखर सम्मेलन ने भी कड़ा संदेश दिया।

29 देशों से मिला सम्मान । इस साल भारत की वैश्विक प्रतिष्ठा भी खूब बढ़ी।

पीएम मोदी को बारबाडोस, मॉरीशस, श्रीलंका, साइप्रस, घाना, त्रिनिदाद और टोबैगो, ब्राजील, नामीबिया, इथियोपिया और ओमान सहित 29 देशों ने सर्वोच्च नागरिक सम्मान प्रदान किया। रणनीतिक व्यापार वार्ता ने भारत की अर्थव्यवस्था को और मजबूत किया। भारत-ब्रिटेन CETA और भारत-ओमान CEPA ने पश्चिम और खाड़ी बाजार तक पहुंच बढ़ाई। भारत ने न्यूजीलैंड के साथ मुक्त व्यापार समझौता किया। यूरोपीय संघ, कनाडा, इस्राइल, मेक्सिको और GCC देशों के साथ वार्ता ने दुनिया भारत के भरोसे को बढ़ाया है।

18 संसदों में दिया भाषण । पीएम मोदी ने घाना, त्रिनिदाद और टोबैगो, नामीबिया और इथियोपिया की संसद को संबोधित किया। बेहतर दुनिया के लिए भारत के दृष्टिकोण को बताया। SDG व जलवायु कार्रवाई लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए विकासात्मक वित्त और उभरती प्रौद्योगिकियों तक बेहतर पहुंच के लिए ग्लोबल साउथ की आकांक्षाओं की वकालत की। 18 संसदों में भाषण देने वाले वह एकमात्र भारतीय भी बने।

दुनिया से मिली तारीफ । इस साल दुनिया भर के नेताओं ने पीएम मोदी की ईमानदारी और नेतृत्व क्षमता की सराहना की। कैरेबियाई नेताओं ने उन्हें स्थिर राजनेता बताया। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पूतिन ने उनकी तारीफ करते हुए भारत को भाग्यशाली बताया। पूतिन और जॉर्डन के क्राउन प्रिंस हुसैन के साथ मोदी की कार डिप्लोमेसी की भी चर्चा हुई। इथियोपिया के पीएम अबी अहमद अली का उन्हें एस्कॉर्ट करना और भूटान के राजा का सड़क पर खड़े होकर स्वागत करना, नरेंद्र मोदी का अंतरराष्ट्रीय नेताओं के साथ का व्यक्तिगत संबंध दर्शाता है। कुल मिलाकर, 2025 आत्मविश्वास और उभरते देश के तौर पर भारत की यात्रा में निर्णायक साबित हुआ।

(लेखक मनोहर पर्रिकर इंस्टिट्यूट फॉर डिफेंस स्टडीज ऐंड एनालिसिस, नई दिल्ली के महानिदेशक हैं)

रीडर्स मेल
www.edit.nbt.in

सार्थक पहल

27 दिसंबर का संपादकीय 'यह पढ़ाई भी जरूरी' पढ़ा। बच्चों में बढ़ती स्क्रीन-लत न केवल पढ़ने की आदत को कमजोर कर रही है, बल्कि उनके मानसिक और सामाजिक विकास को भी प्रभावित कर रही है। ऐसे में स्कूलों में स्टूडेंट्स के लिए अखबार पढ़ना जरूरी करना उत्तर प्रदेश सरकार की सराहनीय पहल है। इससे बच्चों को किसी विषय की पुख्ता जानकारी मिलेगी और उस विषय के प्रति उनकी विश्वसनीयता बढ़ेगी। अखबार पढ़ने से भाषा सुधरती है और यह सोचने-समझने की क्षमता विकसित करता है। मॉर्निंग असेंबली में सिर्फ 10 मिनट की यह पहल बच्चों को किताबों और वास्तविक दुनिया की ओर लौटाने का सार्थक प्रयास है। हालांकि, इसका वास्तविक असर तभी होगा जब स्कूलों के साथ-साथ परिवार भी स्क्रीन और पढ़ाई के बीच संतुलन बनाने में सक्रिय भूमिका निभाएं।

प्रेरणा रावत, ईमेल से

नए साल में इन मामलों पर रहेगी SC की नज़र

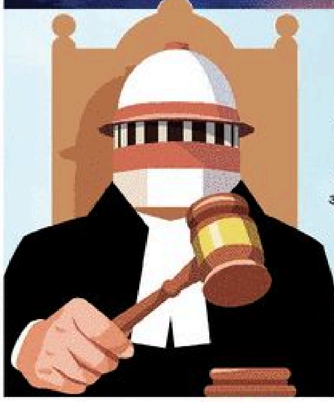

सुप्रीम कोर्ट में आने वाले नए साल में कई अहम मामलों की सुनवाई होने वाली है। इनमें SIR के खिलाफ याचिका, राजधानी दिल्ली और एनसीआर में प्रदूषण, बहुविवाह और हलाला के खिलाफ याचिका और तलाक ए हसन जैसी प्रथा के खिलाफ याचिका शामिल है। दिल्ली दंगे मामले में आरोपियों की जमानत अर्जी पर भी नए साल में फैसला आने वाला है। ऐसे तमाम मामले हैं जिन पर आने वाले साल में सुप्रीम कोर्ट की नजर रहेगी।

दिल्ली प्रदूषण: राजधानी दिल्ली और एनसीआर में प्रदूषण से बुरा हाल है। तमाम इंतजाम के बाद भी हालात बदतर हैं। कोर्ट ने कहा है कि अब वह हर महीने सुनवाई करेगा ताकि कदम उठाए जा सकें। अगले साल इस मामले में लगातार सुनवाई होनी है।

SIR मामला: कई राज्यों में SIR के चुनाव आयोग के निर्णय की वैधता को चुनौती दी गई है। शीर्ष अदालत ने तमिलनाडु, केरल और पश्चिम बंगाल में विशेष रूप से SIR को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर सुनवाई के लिए तारीख तय की हुई है। इस मामले में सुप्रीम कोर्ट में अगले साल विस्तार से सुनवाई होने वाली है।

एसिड अटैक: सुप्रीम कोर्ट एसिड अटैक मामले में सुनवाई अगले साल करने वाली है। 11 दिसंबर को सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि एसिड अटैक अपराध में शामिल शख्स समाज, आम नागरिकों और यहां तक कि कानून के शासन के लिए भी खतरा है और उन पर कुछ कठोर शर्तें लागू की जानी चाहिए।

तलाक ए हसन: यह वह प्रथा है जिसमें एक मुस्लिम पुरुष अपनी पत्नी को तीन महीनों तक हर महीने एक बार "तलाक" कहकर तलाक दे सकता है। अदालत ने पिछली सुनवाई के दौरान कहा था कि ऐसी प्रथा एक सभ्य समाज में कैसे चल सकती है?

निकाह हलाला, बहुविवाह: निकाह हलाला और बहुविवाह के संवैधानिक वैधता को चुनौती देने वाली याचिका पर सुनवाई के लिए सुप्रीम कोर्ट पांच जजों की संवैधानिक बेंच का गठन कर सुनवाई करेगा। पिछले दिनों इस मामले को चीफ जस्टिस सूर्यकांत की अगुवाई वाली बेंच के सामने उठाया गया था।

मुफ्त उपहार: सुप्रीम कोर्ट चुनाव में मुफ्त उपहार बांटने के खिलाफ दाखिल याचिका पर सुनवाई के लिए सहमति दे चुकी है। याचिका में मतदाताओं को लुभाने के लिए किए जाने वाले लोक लुभावन घोषणा पर बैन की मांग की गई है। साथ ही चुनाव आयोग को इस मामले में उचित कदम उठाना चाहिए।

उन्नाव केस: सीबीआई ने उन्नाव बलात्कार मामले के दोषी कुलदीप सिंह सेंगर की सजा निलंबित करने वाले दिल्ली उच्च न्यायालय के आदेश को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी है। दिल्ली हाई कोर्ट ने सेंगर को 23 दिसंबर को जमानत दे दी थी। उनकी सजा को सस्पेंड करते हुए उन्हें राहत दी गई थी। हाई कोर्ट द्वारा सेंगर को दी गई राहत के खिलाफ सीबीआई ने सुप्रीम कोर्ट का रुख किया है।

जमुई में मालगाड़ी के 8 डिब्बे पटरी से उतरे

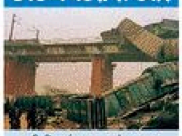

■ पीटीआई, पटना/कोलकाता: बिहार के जमुई जिले में शनिवार देर रात एक मालगाड़ी के आठ डिब्बे पटरी से उतर गए। इस हादसे की वजह से हावड़ा-पटना-दिल्ली रेल मार्ग पर ट्रेनों की आवाजाही बुरी तरह प्रभावित हुई है। अधिकारियों ने बताया कि अब तक किसी के हताहत होने (जान जाने) की खबर नहीं है। हादसे की वजह से राजधानी और वंदे भारत जैसी करीब 24 ट्रेनों के पहिये थम गए। कई ट्रेनों को रद्द करना पड़ा।

रेप के दोषी को मिली माफी

■ NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली : सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को बलात्कार के एक मामले में दोषी पाए गए व्यक्ति की सजा और दोषसिद्धि को पूरी तरह रद्द कर दिया है। अदालत ने गौर किया कि शिकायत करने वाली महिला और दोषी पुरुष ने अब आपस में शादी कर ली है। कोर्ट ने कहा कि गलतफहमी की वजह से आपसी सहमति वाले रिश्ते को कानूनी रंग दे दिया गया था। निचली अदालत ने दोषी मानते हुए 10 साल की जेल और जुर्माने की सजा सुनाई थी।

जंतर-मंतर पर प्रदर्शन, उन्नाव रेप पीड़िता की तबीयत बिगड़ी

■ NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली : दिल्ली के जंतर-मंतर पर रविवार को उन्नाव रेप केस के दोषी कुलदीप सेंगर की जमानत के विरोध में प्रदर्शन किया गया। इसमें रेप पीड़िता के समर्थन में आईसा के बैनर तले जेएनयू और डीयू के छात्र शामिल रहे। प्रदर्शनकारियों ने कुलदीप सिंह सेंगर को फांसी देने की मांग की। हालांकि, इस दौरान एक महिला कुलदीप सिंह सेंगर के समर्थन में पोस्टर लेकर पहुंची, जहां पीड़िता के समर्थन के बीच कहासुनी हुई। वहीं, लगातार नारेबाजी, भीड़ और मानसिक दबाव के बीच पीड़िता और उनकी मां असहज महसूस करने लगीं और उनकी तबीयत बिगड़ गई। मौके पर मौजूद लोगों ने पानी पिलाने और बैठाने की कोशिश की। सीआरपीएफ के जवानों ने मां- बेटी को गाड़ी में बैठाकर इलाज के लिए अस्पताल पहुंचाया।

उन्नाव रेप पीड़िता अपनी मां सहित कई महिलाओं के साथ करीब एक बजे जंतर मंतर पर पहुंची। जेएनयू और डीयू के छात्र ढपली बजा कर नारेबाजी करते नजर आए। 'इंसाफ चाहिए' और 'फांसी दो' के नारों के साथ ढपली की थाप गूंजती रही, जिससे प्रदर्शन स्थल पर आक्रोश साफ महसूस किया जा सकता था। वहीं, कई स्टूडेंट्स के हाथ में 'हत्यारे बलात्कारी कुलदीप सिंह सेंगर की बेल रद्द करो', 'उन्नाव रेप पीड़िता को न्याय दो', 'बलात्कारियों को रिहा करना बंद करो' जैसे पोस्टर लेकर प्रदर्शन किया और न्याय की मांग की। छात्रों का कहना था कि दोषी को जमानत मिलना पीड़िता के साथ दोबारा अन्याय है।

Surender Kumar

जंतर मंतर पर रविवार को जेएनयू और डीयू के छात्रों ने प्रदर्शन किया।

हमारी जान बचा लीजिए : पीड़िता

■ प्रदर्शन के दौरान मौजूद पीड़िता ने अधिकारियों से जवाबदेही की मांग की और कहा कि उसके परिवार को और ज्यादा सुरक्षा दी जानी चाहिए। उन्होंने गुहार लगाते हुए कहा, मैं मुख्यमंत्री से गुजारिश कर रही हूं कि हमें सुरक्षा दें। ये लोग बहुत ताकतवर हैं। कृपया अपनी बेटी को बचा लीजिए। उन्होंने बताया कि मेरे पति को नौकरी से निकाल दिया गया है, हम बेरोजगार हैं, अब हम कहां जाएंगे? पीड़िता की मां ने कहा कि उन्हें सुप्रीम कोर्ट पर पूरा भरोसा है और उम्मीद है कि इस मामले में न्याय मिलेगा। उन्होंने अपना दर्द साझा करते हुए कहा, हमें पीटा गया, हमारे रिश्तेदारों को मारा गया और उन पर झूठे केस दर्ज किए गए। मेरी सरकार से विनती है कि उसे (सेंगर को) रिहा न किया जाए।

प्रदर्शन के दौरान रेप पीड़िता ने कहा कि मैं अपनी बहनों और बेटियों का हमेशा आभारी रहूंगा, जो हमारे साथ आवाज बनकर खड़ी हैं। वे इसलिए हमारे साथ हैं ताकि इस देश में हर बहन और बेटी को इंसाफ मिल सके। उन्होंने आरोप लगाते हुए कहा कि मुझे जान से मारने की धमकी तक दी जा रही है। उन्होंने सीएम योगी आदित्यनाथ से आग्रह किया कि ऐसे रेपिस्ट को अपनी पार्टी में जगह न दें। रेप पीड़िता ने कहा कि मुझे सुप्रीम कोर्ट पर पूरा भरोसा है। आशा है मुझे न्याय मिलेगा और न्याय भी मिला है। रेप पीड़िता ने कहा कि हाई कोर्ट पर सवाल उठा नहीं रही, बल्कि उन जजों पर सवाल उठा रही हूं, जो मामले को देख रहे थे। वहीं, पीड़िता की मां का आरोप है कि बार बार उन्हें जान से मारने की धमकी मिल रही है। पीड़िता का कहना है कि वह प्रधानमंत्री से भी मिलने का टाइम मांग रही है। उन्होंने कहा कि उनकी फैमिली सेफ नहीं है।

हिन्दी में बहस करने की मांग

रेप पीड़िता ने कहा कि केस की बहस हिंदी में हो। उन्होंने बताया कि हमारे केस में कोर्ट में बहस अंग्रेजी में हुई। अगर हिंदी में हुई होती तो मैं अपना केस जीत जाती।

सेंगर के सपोर्ट में पहुंची महिला

प्रदर्शन के बीच एक महिला कुलदीप सिंह सेंगर के समर्थन में पोस्टर लेकर प्रदर्शन स्थल पर पहुंच गई, जिसे देखते ही माहौल और गरमा गया। पीड़िता के समर्थन में जुटे लोगों से उसकी तीखी बहस हुई। पुलिस ने तुरंत हस्तक्षेप कर महिला को वहां से हटाया और स्थिति को नियंत्रित किया।

प्रदर्शन को देखते हुए पहले से भी भारी संख्या में पुलिस दल को दिल्ली पुलिस ने तैनात कर रखा था। शाम तक मौके पर डीसीपी देवेश कुमार महला भी मौजूद रहे।

दिग्विजय के BJP संगठन की तारीफ वाले बयान के साथ थरूर

■ NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली

कांग्रेस मुख्यालय में रविवार को पार्टी के 140वें स्थापना दिवस कार्यक्रम के दौरान शशि थरूर ने अपने पार्टी सहयोगी दिग्विजय सिंह के विचारों का समर्थन करते हुए कहा कि संगठन को मजबूत किया जाना चाहिए। दरअसल, दिग्विजय ने शनिवार को आरएसएस और बीजेपी की संगठनात्मक शक्ति की तारीफ करते हुए एक पोस्ट लिखा था, जिसमें उन्होंने कांग्रेस को जमीनी स्तर पर मजबूत करने की जरूरत पर जोर दिया था। हालांकि, उन्होंने शनिवार को कांग्रेस की वर्किंग कमिटी की बैठक से पहले अपनी पोस्ट पर सफाई दी थी।

कांग्रेस सांसद शशि थरूर से जब रविवार को दिग्विजय के इस बयान पर प्रतिक्रिया मांगी गई तो थरूर ने कहा कि संगठन को मजबूत किया जाना चाहिए और इसमें कोई संदेह नहीं है। दिग्विजय के बगल में बैठने और दोनों के बीच बातचीत को लेकर पूछे गए सवाल पर थरूर ने कहा कि वे दोस्त हैं और आपस में नियमित रूप से चर्चा करते रहते हैं। उन्होंने इसे सामान्य संवाद बताते हुए किसी तरह के विवाद को खारिज किया।

CWC बैठक में वापसी के भी मायने: इस घटनाक्रम को कांग्रेस वर्किंग कमिटी (CWC) की हालिया बैठक से जोड़कर भी देखा जा रहा है। दिल्ली में शनिवार को हुई CWC बैठक में शशि थरूर की मौजूदगी खास रही। लंबे समय बाद थरूर किसी अहम पार्टी बैठक में शामिल हुए थे। बीते महीनों में वे न केवल बैठकों से दूर रहे थे, बल्कि कई बार पार्टी लाइन से हटकर बयानबाजी भी करते दिखे थे।

'संघ से सीखने को कुछ नहीं': हालांकि, दिग्विजय के बयान पर कांग्रेस नेता पवन खेड़ा ने तंज कसते हुए कहा कि संघ से सीखने को कुछ नहीं है। खेड़ा ने आरएसएस की तुलना गांधी की हत्या करने वाले नाथूराम गोडसे से की।

कहा, संगठन तो मजबूत होना ही चाहिए

Agency

कांग्रेस के 140वें स्थापना दिवस पर दिग्विजय, थरूर साथ बैठे नजर आए।

कांग्रेस जोड़ती है, BJP तोड़ती है: खरगे

NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली: कांग्रेस कांग्रेस के 140वें स्थापना दिवस पर पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने रविवार को बीजेपी पर तीखा हमला किया। खरगे ने कहा कि कांग्रेस जोड़ने की राजनीति करती है, जबकि बीजेपी समाज को तोड़ने का काम कर रही है। कांग्रेस सिर्फ एक राजनीतिक दल नहीं, बल्कि एक विचारधारा है और विचारधारा कभी खत्म नहीं होती। खरगे ने कहा कि कांग्रेस ने आजादी से पहले ही 1931 में मौलिक अधिकारों की अवधारणा दी जो बाद में संविधान का हिस्सा बनी। उन्होंने आरोप लगाया कि आज संविधान और लोकतंत्र दोनों खतरे में हैं। बीजेपी सरकार पर निशाना साधते हुए खरगे ने कहा कि पिछले 11 वर्षों में कांग्रेस द्वारा बनाए गए संस्थानों को कमजोर किया गया है। उन्होंने आरोप लगाया कि चंद पूंजीपतियों के फायदे के लिए कानून बदले जा रहे हैं, मनरेगा को कमजोर किया जा रहा है और जल, जंगल व जमीन की लूट हो रही है। उन्होंने यह भी कहा कि सच्चाई छिपाने के लिए जनगणना तक नहीं कराई जा रही है। खरगे ने मनरेगा की बहाली के लिए कार्यकर्ताओं को लोगों तक पहुंचने की अपील की।

सिखों के खिलाफ नफरत पर नरमी क्यों?

अकाल तख्त साहिब पर हुई मीटिंग में राज्य सरकार से पूछे तीखे सवाल

■ NBT रिपोर्ट, चंडीगढ़ : अकाल तख्त साहिब पर हुई सिंह साहिबानों की बड़ी मीटिंग में पंजाब सरकार और पुलिस के रवैये पर कड़ा ऐतराज जताया गया है। जत्थेदार कुलदीप सिंह गड़गज ने आरोप लगाया कि एक तरफ पुलिस सिखों के खिलाफ सोशल मीडिया पर नफरत फैलाने वालों पर कार्रवाई नहीं कर रही, वहीं दूसरी तरफ सिखों पर छोटी-छोटी बातों के लिए केस दर्ज किए जा रहे हैं। पावन स्वरूपों के मामले में भी सरकार को रिपोर्ट का सही हवाला देने की नसीहत दी गई है।

> सिंह साहिबानों की बड़ी मीटिंग में पंजाब सरकार और पुलिस के रवैये पर कड़ा ऐतराज जताया गया है

अकाल तख्त साहिब के कार्यकारी जत्थेदार कुलदीप सिंह गड़गज ने बताया कि श्री अकाल तख्त साहिब और सचखंड श्री हरिमंदर साहिब प्रबंधन द्वारा सिखों के खिलाफ नफरत फैलाने वाले प्रचार संबंधी कई शिकायतें पंजाब पुलिस को दी गई हैं, किंतु आज तक किसी भी दोषी के विरुद्ध ठोस कार्रवाई नहीं की गई। जत्थेदार कुलदीप सिंह ने बताया कि शरारती तत्वों द्वारा फर्जी सोशल मीडिया अकाउंट बनाकर सिखों के विरुद्ध नफरत फैलाई जा रही है, परंतु पुलिस इन्हें बंद कराने या दोषियों को गिरफ्तार करने में विफल रही है। वहीं, दूसरी ओर निहंग वेश में एक सिख द्वारा खिलौना बंदूक दिखाने पर भी एफआईआर दर्ज कर दी जाती है।

बता दें कि अकाल तख्त साहिब पर रविवार को पांच सिंह साहिबानों की संयुक्त बैठक में कई अहम फैसले लिए गए। वर्ष 2025 की अंतिम बैठक में लिए गए कई फैसले सीधे सिख संगत से जुड़े हुए हैं। अकाल तख्त साहिब के कार्यकारी जत्थेदार कुलदीप सिंह गड़गज ने बताया कि पंजाब सरकार द्वारा की गई कानूनी कार्रवाई को सरदार ईश्वर सिंह जांच आयोग की रिपोर्ट के आधार पर सही ठहराया जा रहा है, जबकि श्री अकाल तख्त साहिब के आदेश से गठित इसी आयोग की रिपोर्ट के पेज संख्या 230 पर स्पष्ट रूप से लिखा है। यह न समझा जाए कि सरकारी कानून या पुलिस थाना इन पावन स्वरूपों के मामले को सही ढंग से निपटा लेगा।

ITIs अपग्रेड में इंडस्ट्री को साथ लेकर शुरुआत

Bhupender.Sharma
@timesofindia.com

■ नई दिल्ली: देश के औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों (ITIs) को अपग्रेड करने और नए जमाने के कोर्सेज की मांग को पूरा करने के लिए इंडस्ट्री को जोड़ने की शुरुआत की गई है।

कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय ने राज्य सरकारों और प्रशिक्षण महानिदेशालय के माध्यम से उद्योग जगत को आईआईटी अपग्रेडेशन के लिए लाई गई पीएम-सेतु योजना में शामिल होने के लिए आधिकारिक तौर पर आमंत्रित किया है। मई 2025 में कैबिनेट ने 60 हजार करोड़ रुपए की पीएम सेतु योजना को मंजूरी दी थी।

देश की आईटीआई अब उद्योग जगत के साथ सीधा जुड़ सकेंगी। आईटीआई इकोसिस्टम में एक ऐसा मॉडल तैयार होगा, जिसमें उद्योग जगत जगह ट्रेनिंग मैनेजमेंट में अग्रणी भूमिका निभाएगा। इससे इन संस्थानों से ट्रेनिंग लेने वाले युवाओं की जॉब मार्केट में मांग भी बढ़ेगी। उद्योग जगत की क्या जरूरतें हैं, उसको ध्यान में रखते हुए वर्कफोर्स तैयार होगी।

Attention Developers / Investors
Sale/ Joint Venture once in lifetime opportunity

- ~3,23,749 SQ.M. (80+ Acres) of Land, 15-25 minutes from IGI Airport abutting the new Jaipur Expressway
- ~8,498.4 SQ.M. (2.1 Acres) of Mixed-Use Commercial Development opportunity on Dwarka Expressway
- Licensed DDJAY plotted land admeasuring ~53,823 SQ.M. (13.3 Acres) in Sohna Development Plan
- Opportunity for 50% Stake Acquisition in a Taj Group Hotel
- Ultra High-Rise Group Housing Project(s) as phased Development
- REIT suitable commercial portfolio of completed/nearing completion commercial Projects at premium locations total area over ~92,903 SQ.M. (1 Million SF), located at locations in New Delhi, Gurugram, Panipat

Exclusively Marketed By
CBRE

PLEASE SEND EOI LATEST BY 05.01.26 AT
Daksh Arora
daksh.arora1@cbre.com

HARYANA RERA NO: GGM/248/2017/RAA/Ext1/2022/46
DELHI RERA NO: DLRERA2018A0038
CIN - U74140DL1999PTC100244

शिकायतों पर ध्यान नहीं देती हैं मोबाइल कंपनियां : सर्वे

'स्पैम कॉल और खराब कवरेज ने छीना चैन'

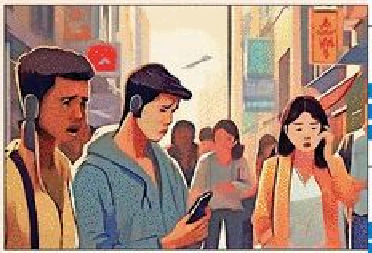

■ NBT रिपोर्ट

भारत में मोबाइल सर्विस इस्तेमाल करने वाले करोड़ों लोग नेटवर्क और स्पैम कॉल्स-मेसेज से परेशान हैं, लेकिन उनकी शिकायतों पर सुनवाई नहीं हो रही है। LocalCircles के सर्वे के अनुसार, पिछले 3 सालों में शिकायत दर्ज कराने वाले हर 2 में से 1 टेलीकॉम यूजर का कहना है कि उनकी परेशानी दूर नहीं हुई। सर्वे में सामने आया है कि 23% लोग तो शिकायत दर्ज ही नहीं कराते, क्योंकि उन्हें इसका तरीका बहुत मुश्किल और सिरदर्द भरा लगता है। साल 2025 में टेलीकॉम रेगुलेटर TRAI ने स्पैम कॉल्स रोकने और शिकायत निपटारे के लिए काफी सख्ती दिखाई, लेकिन जमीनी हकीकत अब भी चिंताजनक है। सर्वे में कंपनियों के कामकाज की भी पोल खुली है। ग्राहकों की शिकायतें सुलझाने के मामले में वोडाफोन-आइडिया (VI) का प्रदर्शन सबसे खराब रहा। इसके बाद एयरटेल का नंबर आता है। इनके मुकाबले रिलायंस जियो (Jio) और BSNL का प्रदर्शन थोड़ा बेहतर रहा। हालांकि ग्राहकों की उम्मीदों पर ये भी पूरी तरह खरे नहीं उतरे।

> सर्वे में सामने आया है कि 23% लोग तो शिकायत दर्ज ही नहीं कराते

3 सालों में कोई शिकायत की है?

66%	हां
12%	नहीं
23%	तरीका मुश्किल

21,784 सर्वे में शामिल

किस कंपनी में ज्यादा शिकायतें पेंडिंग?

62%	VI
49%	Airtel
37%	Jio

13,310 सर्वे में शामिल

शिकायतों का क्या नतीजा निकला?

33%	एक भी हल नहीं
24%	सभी सुलझा ली गई
14%	ज्यादातर अनसुलझी
10%	साफ जवाब नहीं

14,072 सर्वे में शामिल

किस तरह की शिकायतें की हैं?

- 66% नेटवर्क कवरेज।
- 54% स्पैम कॉल्स और मैसेज।
- 29% धीमी स्पीड।
- 23% बिलिंग में झोल।
- 12% फालतू वैल्यू ऐडेड सर्विस।
- 12% मोबाइल नंबर पोर्टेबिलिटी।
- 12% सिम रिप्लेसमेंट
- 18% कस्टमर केयर सर्विस।

14,160 सर्वे में शामिल।

मार्केट में किन चीजों पर होगी नज़र?

■ NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली : तीन हफ्तों से चल रही गिरावट का सिलसिला तोड़ते हुए निफ्टी ने पिछले सप्ताह का समापन बढ़त के साथ किया। विशेषज्ञों का कहना है कि 0.3% की इस बढ़त के बाद इस हफ्ते के लिए पॉजिटिव मोमेंटम बना हुआ है। नए साल वाले इस हफ्ते में औद्योगिक उत्पादन सूचकांक के आंकड़ों और व्यापार समझौतों से जुड़े घटनाक्रम के साथ अमेरिका में फेडरल रिजर्व की मीटिंग के ब्योरे पर मार्केट की नजर रहेगी।

नवंबर के इंडेक्स ऑफ इंडस्ट्रियल प्रोडक्शन से जुड़े आंकड़े सोमवार को जारी होंगे। अक्टूबर में IIP ग्रोथ 0.4% के साथ 14 महीनों के निचले स्तर पर चली गई थी। बैंक ऑफ बड़ौदा के चीफ इकनॉमिस्ट मदन सबनवीस ने कहा कि IIP ग्रोथ के नवंबर के आंकड़े 2.5% से 3% की रेंज में रह सकते हैं। वहीं, अमेरिकी फेडरल रिजर्व की दिसंबर पॉलिसी मीटिंग के ब्योरे और बेरोजगारी के आंकड़े भी जारी होंगे। शुक्रवार को निफ्टी 99.8 अंक गिरकर 26042 पर बंद हुआ था। HDFC सिक्योरिटीज के डिप्टी वाइस प्रेसिडेंट नंदीश शाह ने कहा, 'निफ्टी का शॉर्ट टर्म सेट-अप पॉजिटिव बना हुआ है। अभी ऊपर की ओर 26145 और इसके बाद 26250 पर रेजिस्टेंस है। वहीं, 26000 से नीचे क्लोजिंग होने पर इंडेक्स 25880 और 25770 की ओर जा सकता है।'

एंजेल वन के इक्विटी टेक्निकल एनालिस्ट राजेश भोसले ने कहा, 'एक कैलेंडर ईयर के अंत और दूसरे की शुरुआत का यह अहम सप्ताह है। मोटे तौर पर मूड बुलिश है। ट्रेडर्स के लिए बेहतर यही होगा कि वे शॉर्ट टर्म हलचल से प्रभावित न हों और गिरावट पर खरीदारी और हायर लेवल पर प्रॉफिट बुक करें।'

AI Image

Jawahar / Modi Style
JACKETS & SUITS • BLAZERS
2026 Happy New Year
upto 60% off
Formal • Casual • Party wear
By Economy Sales: 9212758425
ARROW | Raymond | PARK AVENUE | LOUIS PHILIPPE
- PUNCHKUIAN ROAD, Garwal Bhawan, (Near Jhandewalan, Gole Chkr.)
- GURUGRAM 306, City Center, Sector 29 (Near Hotel Pllazio)
- WAZIRPUR A-5, Near Richi Rich Banquet (Opp. Shalimar Bagh)
- NOIDA, Nirula's Sec-2, Near Metro Station, Sec-15, Noida, UP
- LAJPAT NAGAR, 49, Main Ring Road, Adj. Haldi Ram, Near Moolchand Crossing

प्रधानमंत्री संग्रहालय एवं पुस्तकालय
तीन मूर्ति भवन, नई दिल्ली-110011
(भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत एक स्वायत्त संस्था)
दूरभाष: 011-23014486 EMAIL : www.pmml.nic.in

सावधि जमा राशि पर ब्याज दर के लिये निविदा
आमंत्रण सूचना

प्रधानमंत्री संग्रहालय एवं पुस्तकालय (PMML), नई दिल्ली, भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा दिनांक 28.12.2023 की प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से अधिसूचित राष्ट्रीयकृत बैंकों एवं घरेलू प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण बैंकों (D-SIBs) से अपनी ₹121.50 करोड़ की निधि के निवेश हेतु दिनांक 07.01.2026 से पहले सीलबंद निविदाएं आमंत्रित करता है। निविदाएं एक वर्ष से कम, एक वर्ष, एक वर्ष से अधिक परंतु दो वर्ष से कम, तथा तीन वर्ष की अवधि के लिए कॉलेबल एवं नॉन-कॉलेबल सावधि जमाओं (Fixed Deposits) पर सर्वाधिक/विशेष प्रतिस्पर्धी ब्याज दरें प्रस्तुत करने हेतु आमंत्रित की जाती हैं। PMML को अपने एकमात्र एवं पूर्ण विवेकाधिकार से निवेश हेतु सावधि जमा की अवधि(यों) तथा प्रकृति (कॉलेबल/नॉन-कॉलेबल) निर्धारित करने का अधिकार होगा। निविदाएं सभी दृष्टियों से पूर्ण होनी चाहिए। किसी भी प्रकार की अपूर्ण, अधूरी अथवा अस्पष्ट जानकारी वाली निविदा को बिना किसी अतिरिक्त पत्राचार के सीधे अस्वीकार कर दिया जाएगा। प्रस्तुत ब्याज दरें दिनांक 08.01.2026 तक वैध रहनी चाहिए। सीलबंद निविदाएं निदेशक, प्रधानमंत्री संग्रहालय एवं पुस्तकालय (PMML), तीन मूर्ति भवन, नई दिल्ली-110011 के कार्यालय में दिनांक 02.01.2026 को अपराह्न 12:00 बजे तक अनिवार्य रूप से प्राप्त हो जानी चाहिए। निविदाएं उसी दिन अर्थात 02.01.2026 को अपराह्न 03:00 बजे PMML के परिसर में खोली जाएंगी। भाग लेने वाले बैंकों के अधिकृत प्रतिनिधि, यदि चाहें, तो निविदा खोलने की प्रक्रिया में उपस्थित रह सकते हैं। PMML को बिना कोई कारण बताए किसी भी अथवा सभी निविदाओं को पूर्णतः या आंशिक रूप से स्वीकार या अस्वीकार करने का अधिकार सुरक्षित रहेगा तथा इस संबंध में PMML का निर्णय अंतिम एवं बाध्यकारी होगा।

वित्तीय सलाहकार
प्रधानमंत्री संग्रहालय एवं पुस्तकालय

CBC 09142/12/0043/2526

NOTE : -

[: राजस्थान पत्रिका , दैनिक जागरण delhi, नवभारत टाइम्स delhi, अमर उजाला delhi, हिन्दुस्तान delhi, Pioneer hindi delhi, जनसत्ता delhi,]

English NEWSPAPERS
[Times Of India delhi, Indian Express delhi, The Hindu delhi, Financial Express delhi, economic times delhi , the Pioneer english delhi , the tribune delhi] ETC.

We are providing all news paper pdf hindi and English want to read daily newspapers by pdf please msg me on telegram

2. आकाशवाणी (AUDIO)

whatsapp Group ka link pane ke liye Newspaper_pdf_bot par jaye.

Click here to contact:-https://t.me/Newspaper_pdf_bot
Or type in Search box of Telegram
@Newspaper_pdf_bot And you will find a channel
BACKUP GROUP LINK
https://t.me/joinchat/5P9EL1JaqoYzNTI1

Hindi-English News Paper Website:- onlineftp.in